पल्लव

भाग-2

शिक्षा (प्राथमिक) विभाग, असम सरकार

वंदेमातरम्

वंदेमातरम्! वंदेमातरम्!!
सुजलां, सुफलां, मलयज शीतलाम्
शस्य श्यामलां मातरम्, वंदे मातरम्।
शुभ्र-ज्योत्स्नापुलकितयामिनीम्।
फुल्ल-कुसुमित-द्रुम-दल शोभिनीम्।
सुहासिनीम् सुमधुर भाषिणीम्
सुखदां, वरदां, मातरम्।
वंदे मातरम्, वंदे मातरम्!!

– बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय

© copyright-SCERT, Assam
not to be republished

पल्लव

भाग–2

(सातवीं कक्षा के लिए हिंदी की पाठ्य एवं अभ्यास पुस्तक)

प्रस्तुतिकरण

राज्यिक शिक्षा–गवेषणा एवं प्रशिक्षण परिषद्, असम

नाम : ....

विद्यालय का नाम : ....

शाखा : .... क्रम संख्या : ....

Copyright SCERT, Assam
not to be republished

PALLAV, BHAG - II : A textbook cum workbook for class VII in Hindi for Non-Hindi Medium Schools, developed by State Council of Educational Research and Training (SCERT) and Published by Asom Rastrabhasha Prachar Samiti, Guwahati - 32, Assam.

Free Textbook

All right reserved : No reproduction in any form of this book, in part (except for brief quotation in critical articles or reviews), may be made without written authorization from the publisher.

©: SCERT, Assam.

प्रथम प्रकाशन : 2012
पुनर्मुद्रण : 2013
पुनर्मुद्रण : 2014
पुनर्मुद्रण : 2015
पुनर्मुद्रण : 2016
पुनर्मुद्रण : 2017
पुनर्मुद्रण : 2018
पुनर्मुद्रण : 2019
पुनर्मुद्रण : 2020
पुनर्मुद्रण : 2021
पुनर्मुद्रण : 2022

प्रकाशक : **असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी**

असम सरकार द्वारा निःशुल्क वितरण हेतु प्रकाशित पाठ्यपुस्तक

शिक्षा अधिकार कानून - 2009 के अनुसार बच्चों को मातृभाषा सीखने के साथ-साथ क्लासिकल भाषाएँ सीखने का भी अधिकार है। अतः इसी बात को ध्यान में रखते हुए एस. सी. ई. आर. टी., असम ने नई पाठ्यचर्या प्रस्तुत की है, जिसमें त्रिभाषा नीति में कुछ संशोधन किया गया है। इसके अनुसार विद्यार्थी संपूर्ण तीसरी भाषा (100%)अथवा तीसरी भाषा (50%)+अन्य चौथी भाषा (50%) ले सकते हैं। संपूर्ण तीसरी भाषा के लिए पूरी किताब और तीसरी भाषा (50%) +चौथी भाषा (50%)के लिए पाठ संख्या 1, 2, 3, 5, 8, 10, 13, 14 और 16 निर्धारित हैं।

(टैक्स्ट पेपर 70 जीएसएम तथा कवर पेपर 165 जीएसएम पर मुद्रित)

मुद्रक : हिंदुस्तान ऑफसेट प्रा.लि.
बामुनीमैदाम, गुवाहाटी-21

Copyright- SCERT, Assam
not be republished

डॉ. हिमंत विश्व शर्मा एल.एल.बी.
मंत्री, असम

सत्यमेव जयते

वित्त, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण,
शिक्षा, परिकल्पना एवं विकास,
लोक-निर्माण विभाग

संदेश

किसी समाज के विकास की मूल संचालन शक्ति है - शिक्षा। इसलिए नई पीढ़ी को सही शिक्षा से सुशिक्षित करने का दायित्व अग्रजों पर है। इसमें सरकार की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। शैक्षिक संस्थानों में शिक्षा-प्राप्ति की मुख्य आधार है - पाठ्यपुस्तक। किसी भी अच्छी पाठ्यपुस्तक के जरिए विद्यार्थी-जीवन की सही दिशा और ज्ञान के क्षेत्र में अभिवृद्धि होती है, जिससे उन्हें भविष्य में एक अच्छा नागरिक बनने में सहायता मिले। आर्थिक रूप से सामान्य परिवार तथा गरीब परिवार के छात्र-छात्राएँ भी पाठ्यपुस्तक के अभाव में शिक्षा-प्राप्ति से वंचित न हों, इसके प्रति असम सरकार पूर्णत: दायित्वशील है।

इन सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए हमारी सरकार ने विगत कई वर्षों से सरकारी, प्रादेशीकृत और सरकारी सहायताप्राप्त विद्यालयों के 'क' श्रेणी से दसवीं श्रेणी तक के सभी छात्र-छात्राओं को नि:शुल्क पाठ्यपुस्तकें प्रदान करती आई है। सरकार ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की 11वीं और 12वीं के छात्र-छात्राओं की सुविधार्थ तथा उच्चतर माध्यमिक स्तरीय शिक्षा व्यवस्था की उन्नति हेतु नि:शुल्क पाठ्यपुस्तक वितरण की योजना को प्रसारित करने का प्रबंध किया है। इसी क्रम में शैक्षिक वर्ष 2018-19 से 11वीं और 12वीं श्रेणी की कला, विज्ञान, वाणिज्य और व्यावसायिक शिक्षा संकायों के सरकारी, प्रादेशीकृत और सरकारी सहायताप्राप्त विद्यालय, महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं को सरकार ने मूल पाँच विषयों की पाठ्यपुस्तकें नि:शुल्क प्रदान करने की व्यवस्था की है।

वर्तमान सरकार गुणवत्तासंपन्न शिक्षा के प्रसार और विद्यार्थियों के शैक्षणिक उत्कर्ष के लिए सतत् प्रयासरत है। राज्य में गरीबी के कारण उच्च शिक्षा से कोई विद्यार्थी वंचित न हो, इस बात को ध्यान में रखते हुए नि:शुल्क पाठ्यपुस्तकों के अलावा सालाना एक लाख से कम आय वाले आर्थिक रूप से पिछड़े परिवार के विद्यार्थियों को मैट्रिक और उच्चतर माध्यमिक परीक्षा का शुल्क माफ करने की व्यवस्था की गई है। माध्यमिक स्तर पर भी विद्यार्थियों के नामांकन शुल्क माफ किया गया है। वर्तमान सरकार ने राज्य में पहली बार उच्चतर माध्यमिक और स्नातक श्रेणी में नामांकन करने वाले गरीब परिवार के छात्र-छात्राओं के शुल्क माफ करने की महती योजना को कायान्वित किया है। सरकार आगामी शैक्षिक वर्ष से स्नातकोत्तर श्रेणी में नामांकन करने वाले गरीब छात्र-छात्राओं के लिए भी इस योजना को प्रसारित करेगी। इससे निश्चित तौर पर भविष्य में छात्र-छात्राएँ उच्च शिक्षा के प्रति प्रोत्साहित होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक रूप से अग्रसर होने के लिए राज्य के प्राथमिक स्तर पर शिक्षा का वास्तविक मूल्यांकन के लिए तथा एक स्पष्ट और सटीक अवधारणा प्राप्ति के लिए राज्य सरकार ने गुणोत्सव जैसा कार्यक्रम भी अपनाया है और इसके सकारात्मक परिणाम भी मिले हैं।

शिक्षा के अन्य क्षेत्रों के अलावा मुख्यत: विद्यार्थी-केंद्रिक शिक्षा नीति पर हम विश्वास रखते हैं। आशा है कि राज्य के विद्यार्थी अपनी शिक्षा-साधना के बल पर ज्ञानार्जन कर राष्ट्र की संपदा के रूप में अपने आपको प्रस्तुत करेंगे। विद्यार्थियों को नि:शुल्क हिंदी पाठ्यपुस्तक आपूर्ति के इस महान कार्य को कार्यान्वित करने के लिए मैं असम उच्चतर माध्यमिक शिक्षा संसद, असम माध्यमिक शिक्षा परिषद्, राज्यिक शिक्षा-गवेषणा एवं प्रशिक्षण परिषद्, असम राज्य पाठ्यपुस्तक प्रणयन और प्रकाशन निगम व संबंधित विभागों सहित असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की सफलता की कामना करते हुए हार्दिक शुभकामनाएँ प्रदान करता हूँ।

हिमंत विश्व शर्मा

(डॉ. हिमंत विश्व शर्मा)

Copyright SCERT, Assam
not be republished

पाठ्यपुस्तक की प्रस्तुति से संबंधित व्यक्ति

कार्यशाला में शामिल व्यक्तिगण :

श्री गोलोक चंद्र डेका : व्याख्याता, हिंदी विभाग, गुवाहाटी महाविद्यालय, गुवाहाटी
श्री कुल प्रसाद उपाध्याय : प्राध्यापक, राजभाषा विभाग, भारत सरकार
श्री रामनाथ प्रसाद : सहायक साहित्य सचिव, असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहाटी
श्री हेमंत कुमार राभा : विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, नारंगी आंचलिक महाविद्यालय
श्री पुण्यव्रत बरदलै : व्याख्याता, हिंदी विभाग, नारंगी आंचलिक महाविद्यालय
श्री दिलीप चंद्र शर्मा : शिक्षक, कॉटन कॉलेजिएट हायर सेकेंडरी स्कूल, गुवाहाटी
श्री सुरेश सिंह : शिक्षक, टी.आर.पी. हिंदी हाई स्कूल, मालीगाँव

विशेष सहयोग :

श्री अजयेंद्र त्रिवेदी : वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा विभाग, यूको बैंक, जोनल ऑफिस, गुवाहाटी
श्री मृदुला बरुवा : प्राध्यापक, एस.सी.ई.आर.टी, असम

पुनरीक्षण :

डॉ. अच्युत शर्मा : एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यालय
श्री गोलोक चंद्र डेका : व्याख्याता, हिंदी विभाग, गुवाहाटी महाविद्यालय, गुवाहाटी

संकलन, संपादन एवं अलंकरण :

डॉ. सुष्मिता सूत्रधर दास : विभागाध्यक्ष, पाठ्यपुस्तक एवं पाठ्यचर्या विभाग, एस.सी.ई.आर.टी, असम
डॉ. अंजलि काकति : व्याख्याता, हिंदी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, उत्तर गुवाहाटी
श्री करबी दास : व्याख्याता, एस.सी.ई.आर.टी, असम

सी.आर.सी. और इलास्ट्रेशन :

श्री जयंत भागवती, श्री विचित्र शर्मा

सलाहकार

डॉ. सुष्मिता सूत्रधर दास
विभागाध्यक्ष, पाठ्यपुस्तक एवं पाठ्यचर्या विभाग,
एस.सी.ई.आर.टी, असम

समन्वयक

श्रीमती सुवला दत्त शइकीया
व्याख्याता, पाठ्यपुस्तक एवं पाठ्यचर्या विभाग,
एस.सी.ई.आर.टी, असम

डी.टी.पी.

□ लाचित दास □ श्यामंतक डेका

Copyright SCERT, Assam
not be republished

आमुख

असम राज्यिक शिक्षा–गवेषणा एवं प्रशिक्षण परिषद् (एस.सी.ई.आर.टी.) ने तृतीय भाषा की उपयोगिता तथा विद्यार्थियों की आयु–सीमा को ध्यान में रखते हुए सातवीं कक्षा के लिए हिंदी की पाठ्यपुस्तक **पल्लव, भाग-2** तैयार की है। सरकार ने अधिसूचना संख्या - PMA.103/2011/5 दिनांक Dispur, the 27th May 2011 के अनुसार शैक्षिक वर्ष 2011 से पाँचवीं कक्षा को निम्न प्राथमिक स्तर में शामिल किया है। **इस तरह उच्च प्राथमिक स्तर में छठी से आठवीं तक हिंदी-शिक्षण अनिवार्य है।** राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 को ध्यान में रखते हुए राज्यिक शिक्षा–गवेषणा एवं प्रशिक्षण परिषद्, असम ने तृतीय भाषा शिक्षण के लिए नई पाठ्यचर्या का निर्माण किया है। पाठ्यचर्या में सन्निविष्ट संस्तुतियों के आधार पर हिंदीतर भाषी विद्यार्थियों के लिए इस पाठ्यपुस्तक का प्रणयन किया गया है। विद्यार्थियों के सर्वांगीन विकास के लिए पाठ्यपुस्तक को योग्यता आधारित, कार्यकलाप समन्वित एवं आनंददायक बनाने का प्रयास किया गया है। पुस्तक को अधिक आकर्षक बनाने के लिए यथास्थान रंग–बिरंगे चित्रों का समावेश किया गया है।

उल्लेखनीय है कि प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक में प्रतिष्ठित कवि–साहित्यकारों के लोकप्रिय एवं बहुप्रचलित गीत, कविताएँ, कहानियाँ आदि संकलित की गई हैं। उन्हें हम श्रद्धा से स्मरण करते हैं। उच्च प्राथमिक स्तर से विश्वविद्यालय स्तर तक के शिक्षक–शिक्षिकाओं, असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के अनुभवी व्यक्तियों, वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा, यूको बैंक, जोनल ऑफिस सहित अनेक शैक्षिक संस्थानों के सहयोग से कार्यशालाओं के जरिए यह पाठ्यपुस्तक तैयार की गई है। जिन व्यक्तियों के अथक प्रयत्न से प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक को अध्येता–वर्ग के सामने लाना संभव हुआ है, उनके प्रति परिषद् आभार व्यक्त करती है। प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक के प्रणयन में असम सर्वशिक्षा अभियान मिशन से प्राप्त आर्थिक सहायता के लिए हम आभारी हैं।

सरकार के निर्देशानुसार निर्धारित अवधि के भीतर ही पाठ्यपुस्तक का प्रणयन किया गया है। अतः पाठ्यपुस्तक में कुछ अनिच्छाकृत त्रुटियाँ रह जाना स्वाभाविक है। इसके लिए मान्य शिक्षक–शिक्षिकाओं एवं पाठकों के सुझाव आमंत्रित हैं।

निरदा देवी

(डॉ. निरदा देवी)

निदेशक

राज्यिक शिक्षा–गवेषणा एवं प्रशिक्षण परिषद्, असम

काहिलीपाड़ा, गुवाहाटी

दिसम्बर, 2020

Copyright SCERT, Assam
not to be republished

पाठ्यपुस्तक से संबंधित दो बातें

(शिक्षक-शिक्षिकाओं के प्रति)

असम सरकार ने सन 2011 से पाँचवीं कक्षा को उच्च प्राथमिक स्तर से अलग करके निम्न प्राथमिक स्तर में शामिल कर दिया है और उच्च प्राथमिक स्तर में छठी कक्षा से आठवीं तक की कक्षाओं को अंतर्भूक्त किया है। अत: विद्यार्थियों की आयु को ध्यान में रखकर **'पल्लव, भाग-2'** नामक इस पाठ्यपुस्तक का प्रणयन किया गया है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005 सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। नई राज्यिक पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने के प्रयास है। इस पाठ्यपुस्तक का मुख्य उद्देश्य है- दैनिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी भाषा को समझना तथा बोलचाल की क्षमता का विकास करना। साथ ही दैनिक जीवन में आवश्यक वार्तालाप, संभाषण, पारिवारिक पत्र, आवेदन-पत्र आदि के लिए उपयुक्त भाषा-व्यवहार में दक्षता बढ़ाना।

इन उद्देश्यों को ध्यान में रखकर **'पल्लव, भाग-2'** में विभिन्न प्रकार के कुल सोलह पाठ शामिल किए गए हैं। इनमें गीत, कविताएँ, कहानियाँ, वर्णनमूलक लेख आदि हैं। विद्यार्थियों के मनोविज्ञान के आधार पर प्रत्येक पाठ के प्रारंभ में अलग-अलग पृष्ठभूमि रखी गई है और नए-पुराने कौशलों एवं शैलियों का प्रयोग किया गया है, ताकि सभी पाठ-शिक्षण-कार्य के दौरान इन बातों पर जरूर ध्यान रहे ।

पाठ की विषयवस्तु को आनंदप्रद बनाने के साथ प्रत्येक पाठ में दी गई अभ्यास-माला को आकर्षक बनाने की कोशिश की गई है। अभ्यास-मालाओं में प्रश्नों को आकर्षक तथा मनोग्राही ढंग से पेश करने का प्रयास किया गया है। इनमें पाठ आधारित प्रश्नों के अलावा सामूहिक चर्चा, विषय, परियोजना, व्याकरणिक दृष्टि से भाषा-अध्ययन और हमारे चारों ओर के वातावरण के संबंध में ज्ञान अर्जित करने की भी सुविधा दी गई है। इसके अतिरिक्त शिक्षक-शिक्षिकाएँ विभिन्न जन संचार माध्यमों के जरिए विद्यार्थियों को ज्ञान-प्राप्ति में योगदान देंगे।

'पल्लव, भाग-2' में अभ्यास-मालाओं के जरिए व्याकरण-शिक्षण की व्यवस्था रखी गई है। पाठों में दी गई अभ्यास-मालाओं में क्रमानुसार व्याकरण-शिक्षण की व्यवस्था है। व्याकरण-शिक्षण में प्रायोगिक व्यवस्था को अधिक महत्व दिया गया है। इस पाठ्यपुस्तक में 'आओ, जानें' शीर्षक के अंतर्गत व्याकरणिक तथ्यों की व्याख्या करने के अलावा विद्यार्थियों के सामूहिक ज्ञान को बढ़ाने का प्रयास भी है। शिक्षक-शिक्षिका अपनी सुविधा और समय के अनुसार पर्याप्त उदाहरणों से विद्यार्थियों के प्रायोगिक ज्ञान को बढ़ाने की व्यवस्था करें।

पाठों में संलग्न भाषा-ज्ञान, वार्तालाप की क्षमता आदि बढ़ाने के उद्देश्य से शिक्षक-शिक्षिकाओं के लिए सामूहिक चर्चा या पाठ पढ़ाते समय हिंदी में बातचीत करना अत्यंत आवश्यक है। वे विद्यार्थियों को हिंदी में बातचीत करने हेतु प्रोत्साहन अवश्य दें। पाठों के अंत में विद्यार्थियों की सुविधा को ध्यान में रखकर पाठ में प्रयुक्त नए शब्दों के अर्थ दिए गए हैं।

अत: व्यवस्थागत सुधारों और प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के लिए आपकी टिप्पणियों और सुझावों का स्वागत है।

Copyright SCERT Assam not to be republished

कहाँ, क्या है

	आमुख	V
	पाठ्यपुस्तक से संबंधित दो बातें	VI
1.	नन्हा-मुन्ना राही हूँ (गीत)	8 - 12
2.	चार मित्र	13 - 19
3.	एक तेजस्वी और दयावान बालक	20 - 27
4.	मेरी राजस्थान यात्रा	28 - 35
5.	जीना-जिलाना मत भूलना	36 - 40
6.	चाय : असम की एक पहचान	41 - 47
7.	हार की जीत	48 - 55
8.	अपनों के पत्र	56 - 61
9.	सुमन एक उपवन के	62 - 65
10.	स्वाधीनता संग्राम में पूर्वोत्तर की वीरांगनाएँ	66 - 71
11.	कागज की कहानी	72 - 78
12.	अशोक का शस्त्र-त्याग	79 - 86
13.	भगतिन मौसी	87 - 91
14.	आओ, स्कूल चलें (सब पढ़े, सब बढ़े)	92 - 99
15.	तुम कब जाओगे, अतिथि	100 - 104
16.	अमृत वाणी	105 - 110
	पाठों में निहित योग्यताएँ	111 - 112

Copyright SCERT, Assam
not to be republished

पाठ-1 नन्हा-मुन्ना राही हूँ

नन्हा मुन्ना राही हूँ देश का सिपाही हूँ,
बोलो मेरे संग जय हिंद..... जय हिंद.....
रास्ते पे चलूँगा न डर-डर के
चाहे मुझे जीना पड़े मर-मर के
मंजिल से पहले न लूँगा कहीं दम
आगे ही आगे बढ़ाऊँगा कदम
दाहिने बाएँ-दाहिने बाएँ, थम।
नन्हा मुन्ना राही हूँ.......

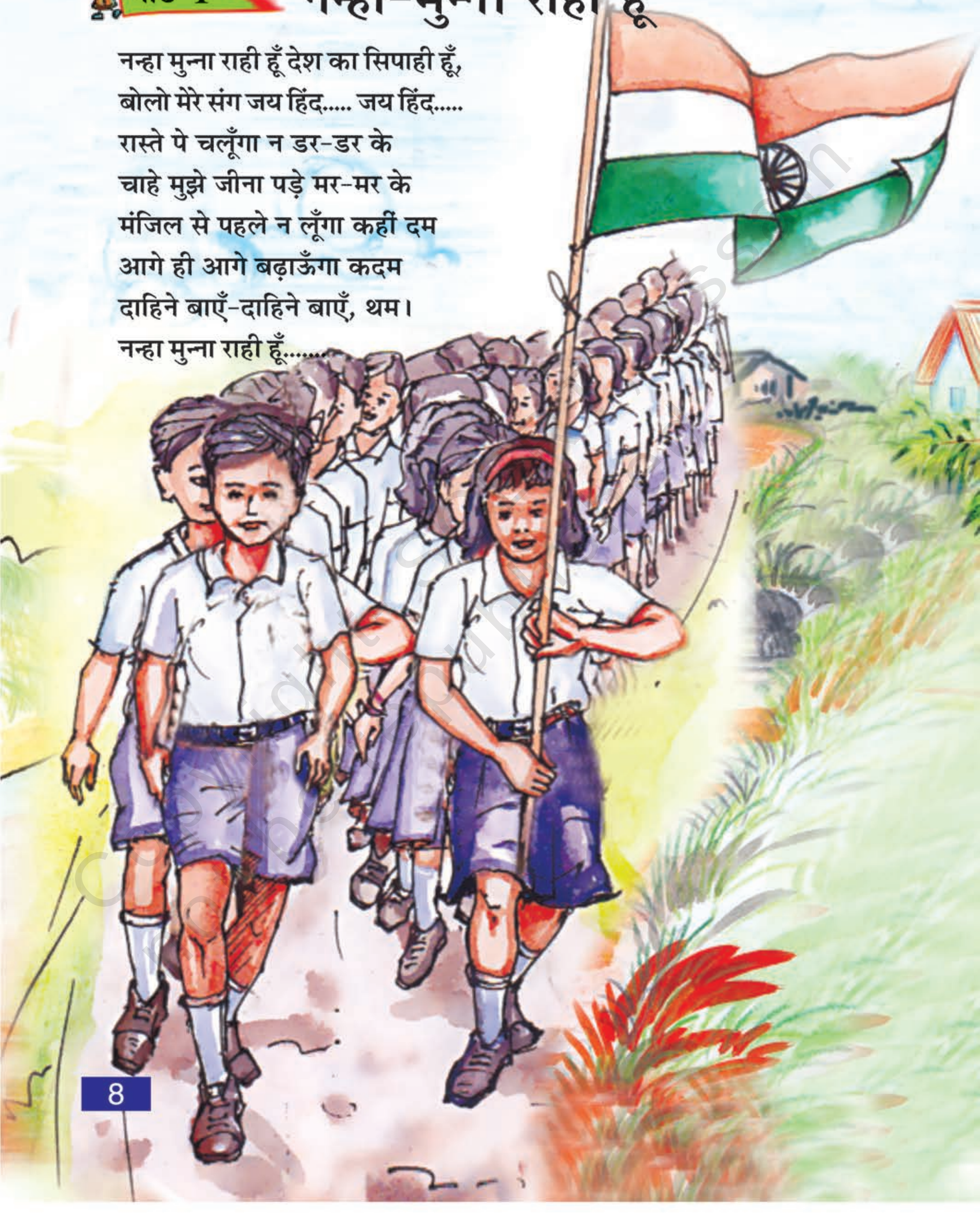

धूप में पसीना बहाऊँगा जहाँ
हरे-भरे खेत लहराएँगे वहाँ
धरती पे पापी न पाएँगे जनम
आगे ही आगे बढ़ाऊँगा कदम
दाहिने बाएँ-दाहिने बाएँ थम।
नन्हा-मुन्ना राही हूँ......

नया है जमाना मेरी नई है डगर
देश को बनाऊँगा मशीनों का नगर
भारत किसी से रहेगा नहीं कम
आगे ही आगे बढ़ाऊँगा कदम
दाहिने बाएँ-दाहिने बाएँ थम।
नन्हा-मुन्ना राही हूँ....

बड़ा होके देश का सहारा बनूँगा
दुनिया की आँखों का तारा बनूँगा
रखूँगा ऊँचा तिरंगा परचम
आगे ही आगे बढ़ाऊँगा कदम
दाहिने बाएँ-दाहिने बाएँ थम।
नन्हा-मुन्ना राही हूँ....

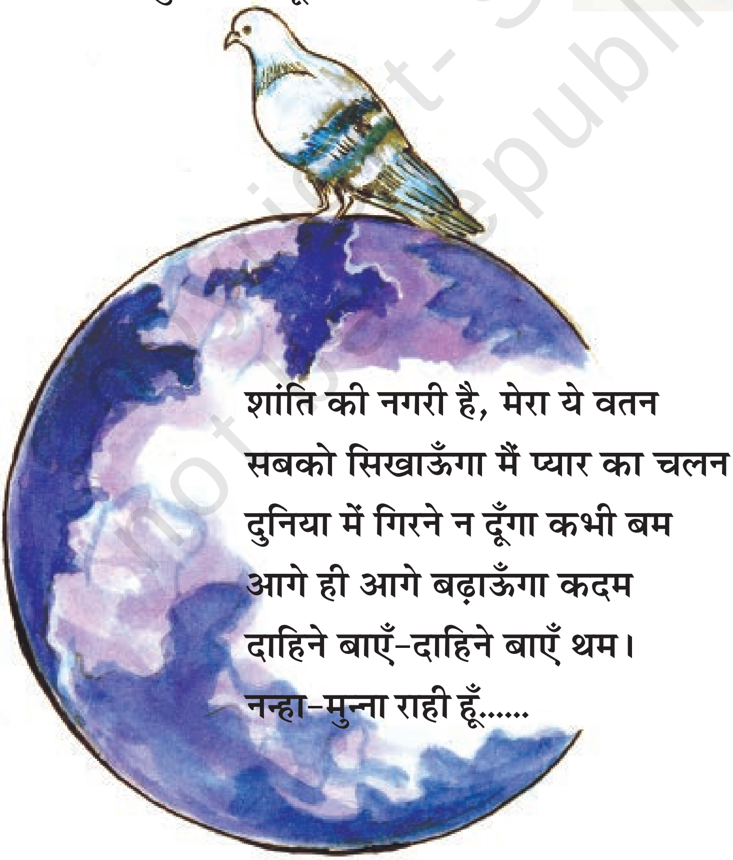

शांति की नगरी है, मेरा ये वतन
सबको सिखाऊँगा मैं प्यार का चलन
दुनिया में गिरने न दूँगा कभी बम
आगे ही आगे बढ़ाऊँगा कदम
दाहिने बाएँ-दाहिने बाएँ थम।
नन्हा-मुन्ना राही हूँ......

फिल्म – सन ऑफ इंडिया
संगीतकार – नौशाद अली
गीतकार – शकील बदायूनी
गायिका – शांति माथुर

अभ्यास-माला

पाठ से

1. 'नन्हा मुन्ना राही हूँ' एक देशप्रेममूलक गीत है।
   प्रस्तुत गीत को लय के साथ कक्षा में गाओ।
2. इस गीत को तुम किस माहौल में गुनगुना सकते हो? बताओ।

3. उत्तर लिखो :
   (क) कविता में उल्लिखित देश का सिपाही कौन है?
   (ख) अपना देश भारत कैसे किसी से कम नहीं है?
   (ग) "देश को बनाऊँगा मशीनों का नगर।" अपने देश को मशीनों का नगर बनाने का संकल्प क्यों लिया गया है?
   (घ) भारत के अलावा हमारे देश को और किन-किन नामों से जाना जाता है?
   (ङ) अपना तिरंगा ऊँचा रखने के लिए क्या करना जरूरी है?
   (च) तुम्हारी मंजिल क्या है? तुम कैसे उस मंजिल तक पहुँचोगे?
   (छ) हरे-भरे खेत भारत के किन प्रांतों में मिलते हैं, लिखो।

पाठ के आस-पास

1. नीचे कुछ मशीनों के चित्र हैं। उन मशीनों के नाम और कहाँ इनका प्रयोग होता है, लिखो।

ख

2. हमारे देश ने कृषि, उद्योग, तकनीकी समेत सभी क्षेत्रों में विकास किया है। तुम अपने सहपाठियों के साथ मिलकर कृषि व तकनीकी क्षेत्रों में देश की कामयाबी पर चर्चा करो।

Copyright-SCERT, Assam
not to be republished

3. प्रस्तुत गीत में भारतवर्ष को शांति की नगरी कहा गया है। नीचे हमारे देश के कुछ शांतिदूतों के चित्र दिए गए हैं। इन चित्रों को पहचानो एवं उनके बारे में पास ही दिए गए स्थानों में लिखो :

....

....

....

....

....

....

....

....

....

भाषा-अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्द के स्वर और व्यंजन अलग-अलग करके लिखे गए हैं- बढ़ाऊँगा = ब् + अ + ढ़् + आ + ऊँ + ग् + आ। इसे वर्ण-विच्छेद कहते हैं। अब निम्नलिखित शब्दों का वर्ण-विच्छेद करो :

मंजिल	–	लहराएँगे	–
परचम	–	दुनिया	–

2. आओ, शब्दों के शुद्ध रूप लिखें :

अशुद्ध		शुद्ध
पियार	=	प्यार
वनुगा	=	....
दूनीया	=	....
मशिनी	=	....

अशुद्ध		शुद्ध
चलुँगा	=	....
पायंगे	=	....
पापि	=	....
गीरने	=	....

Copyright SCERT, Assam not to be republished

योग्यता-विस्तार

1. **स्वर और व्यंजन वर्णों को छाँट कर निर्धारित जगहों में लिखो :**

स्वर वर्ण

....

....

....

....

क	अ	इ	ग	उ
ई	आ	ख	ऊ	घ
ङ	न	म	प	ल
छ	ऐ	ज	ओ	ए

व्यंजन वर्ण

....

....

....

....

2. **क्रम से संख्याएँ भरकर नीचे के खाली चौखटों को पूरा करो :**

१				५	६				१०
	१२		१४			१७		१९	
		२३					२८		
	३२		३४			३७		३९	
४१				४५	४६				५०

3. **तुमलोग ऐसे ही और देशप्रेममूलक गीत इकट्ठे करो और गाने की कोशिश करो।**

आओ, पाठ में आए कुछ शब्दों के अर्थ जानें :

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
आँखों का तारा	=	बहुत प्यारा	परचम	=	झंडा
चलन	=	नियम, रिवाज	लहराएँगे	=	हवा के झोंकों
नन्हा	=	छोटा-सा		=	से हिलेंगे
मंजिल	=	लक्ष्य	डगर	=	मार्ग, राह, रास्ता
पसीना	=	गर्मी में जो पानी शरीर से निकलता है	थम	=	ठहरना, रुक जाना

Copyright - SCERT, Assam not to be republished

पाठ-2

चार मित्र

पंचतंत्र की कहानियाँ बहुत पुरानी हैं। ये मूलतः संस्कृत में लिखी गई थीं। किंवदंती है कि एक राजा के तीन नासमझ बेटे थे। राजा ने एक विद्वान विष्णुशर्मा को उन्हें शिक्षा देने के लिए नियुक्त किया। विष्णुशर्मा ने उन्हें जीवन में प्रसन्न रहने और सफलता प्राप्त करने की कला सिखाई। पंचतंत्र में पशु-पक्षियों की कहानियों के माध्यम से नीति की शिक्षा दी गई है।

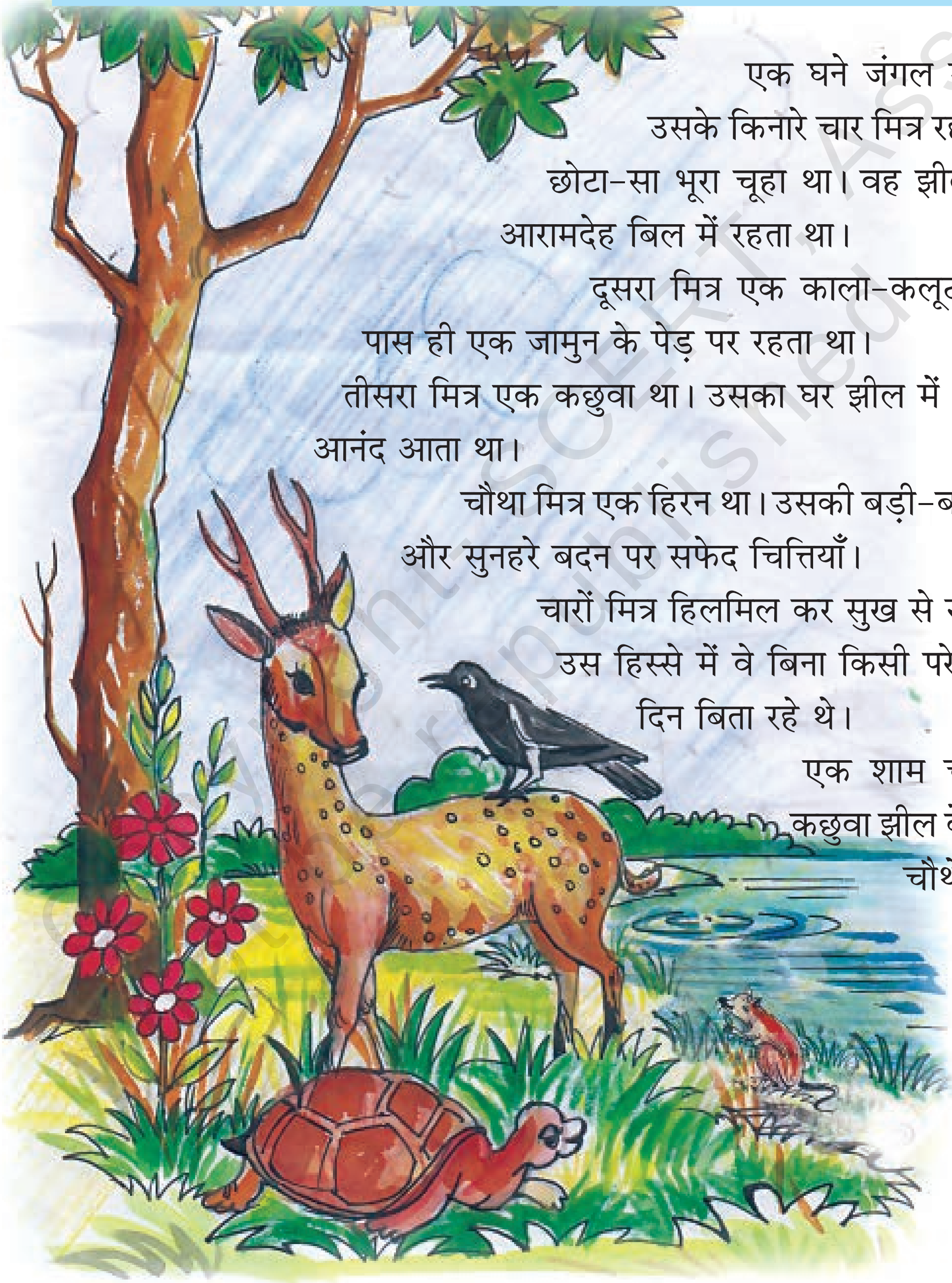

एक घने जंगल में एक झील थी। उसके किनारे चार मित्र रहते थे। पहला एक छोटा-सा भूरा चूहा था। वह झील के किनारे एक आरामदेह बिल में रहता था।

दूसरा मित्र एक काला-कलूटा कौवा था। वह पास ही एक जामुन के पेड़ पर रहता था।

तीसरा मित्र एक कछुवा था। उसका घर झील में था और वहीं उसे आनंद आता था।

चौथा मित्र एक हिरन था। उसकी बड़ी-बड़ी सुंदर आँखें थीं और सुनहरे बदन पर सफेद चित्तियाँ।

चारों मित्र हिलमिल कर सुख से रहते थे। जंगल के उस हिस्से में वे बिना किसी परेशानी के शांति से दिन बिता रहे थे।

एक शाम चूहा, कौवा और कछुवा झील के किनारे बैठे-बैठे चौथे मित्र हिरन का इंतजार कर रहे थे। बैठे-बैठे घंटों बीत गए पर हिरन नहीं आया।

कौवा हिरन की खोज में उड़ चला। उड़ते समय हिरन को पुकारता भी रहा, ''हिरन, प्यारे हिरन, तुम कहाँ हो?''

कुछ समय बाद उसे अपनी पुकार के जवाब में एक हल्की आवाज सुनाई दी। वह हिरन की आवाज थी।

''बचाओ, मुझे बचाओ'', हिरन कह रहा था, ''मैं यहाँ हूँ, यहाँ।''

कौवा नीचे आया तो देखा कि हिरन एक जाल में फँसा है।

''ओह, तुम तो जाल में फँसे हो!'' कौवे ने दु:खी होकर कहा, ''अब क्या किया जाए? अच्छा ठहरो, मैं तुम्हारी मदद के लिए दोस्तों के पास जाता हूँ।''

अपने दोस्त को देख हिरन की आँखों में आँसू भर आए, उसने कहा, ''भाई, जो ठीक समझो करो, मगर जो कुछ करना हो जल्द करो।''

कौवा फुर्ती से उड़ता हुआ झील के पास लौट आया। उसे देखते ही चूहा और कछुवा दोनों एक साथ बोलने लगे–

''क्या हमारा मित्र मिल गया?''

''हाँ दोस्तो, हाँ'', कौवे ने कहा, ''मिल तो गया लेकिन इस समय वह भारी खतरे में पड़ा हुआ है।''

कौवे ने हिरन के जाल में फँसे होने की सारी कहानी अपने मित्रों को कह सुनाई।

इस पर कछुवे ने चटपट एक उपाय सोच निकाला। उसने कहा, ''चिंता की कोई बात नहीं। चूहा जाल काटकर हिरन को आजाद कर सकता है।''

''हाँ, क्यों नहीं?'' चूहे ने कहा, ''लेकिन मैं उसके पास जाऊँगा कैसे?''

''यह भी कोई बात है?'' कौवे ने कहा, ''मैं तुम्हें

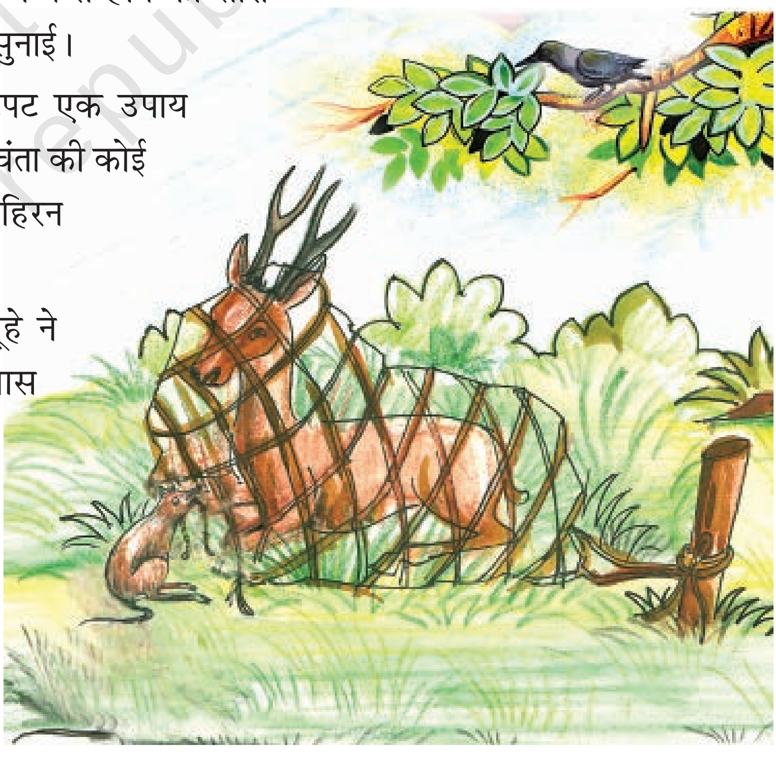

© Copyright SCERT, Assam not to be republished

अपनी पीठ पर बैठाकर ले जाऊँगा।''

''तो आओ चलें'', चूहे ने कहा और उचक कर कौवे की पीठ पर बैठ गया।

चूहे को लेकर कौवा उड़ा और थोड़ी ही देर में हिरन के पास जा पहुँचा। हिरन के पास पहुँचते ही चूहा फौरन कौवे की पीठ से उतरा और अपने पैने दाँतों से जाल काटने लगा। उसने जरा ही देर में हिरन को आजाद कर दिया। हिरन उठ खड़ा हुआ। उसी समय धीरे-धीरे रेंगता हुआ उनका चौथा साथी कछुवा भी वहीं आ पहुँचा।

सब हिरन के बच निकलने की चर्चा करने लगे। अचानक किसी के आने का खटका सुनकर चारों चुप हो गए। उन्होंने देखा सामने से बहेलिया चला आ रहा है।

बहेलिये पर नजर पड़ते ही कौवा उड़कर एक ऊँचे पेड़ की डाल पर जा बैठा, चूहा एक बिल में जा छिपा और हिरन चौकड़ी भरता हुआ पलभर में गायब हो गया।

लेकिन कछुवा बेचारा क्या करता? वह जैसे-तैसे एक झाड़ी की ओर रेंगने लगा।

बहेलिये ने पास आकर देखा, तो जाल खाली देख भौंचक रह गया।

''अरे! यह क्या?'' उसने कहा, ''फँसा-फँसाया हिरन भाग निकला!''

वह चकित होकर इधर-उधर देखने लगा। अचानक उसकी निगाह झाड़ी की ओर रेंगते हुए कछुवे पर पड़ी।

उसने कहा, ''यहाँ तो कछुवेराम दिखायी दे रहे हैं। चलो आज इन्हीं का भोग लगाया जाएगा।''

उसने लपक कर कछुवे को पकड़ा और एक थैले में बंद कर घर की ओर चल दिया।

पेड़ पर बैठा हुआ कौवा इस सारी घटना को देख रहा था।

''ओ चूहे भाई! ओ हिरन भाई'', उसने अपने दोस्तों को पुकार कर कहा, ''जल्दी आओ, जल्दी। हमारा मित्र कछुवा भारी मुसीबत में फँस गया है।''

चूहा और हिरन तुरंत भागे-भागे कौवे के पास आए।

कौवे ने कहा, ''कछुवे को आजाद कैसे कराया जाए?''

''जो कुछ भी करना हो'', चूहे ने कहा, ''बहेलिये के घर पहुँचने से पहले ही कर डालना चाहिए।''

© Copyright SCERT, Assam
not to be republished

हिरन ने कहा, ‘‘हमें क्या करना है, यह मैं बताता हूँ। मैं बहेलिये के रास्ते में खड़ा होकर घास चरने का बहाना करूँगा। बहेलिया मुझे देखेगा तो थैला छोड़कर मेरा पीछा करने लगेगा। उसी बीच चूहा थैला काट देगा और कछुवा आजाद हो जाएगा।’’

‘‘लेकिन मान लो, कहीं उसने तुम्हें पकड़ लिया तो?’’ कौवे ने पूछा।

‘‘अरे नहीं। तुम चिंता न करो। मैं इतना तेज दौड़ूँगा कि उसे नानी याद आ जाएगी।’’

हिरन बहेलिये के रास्ते में जाकर आराम से खड़ा हो गया और मजे से घास चरने लगा।

‘‘हिरन!’’ उसे देखते ही बहेलिया चिल्लाया, ‘‘कितना मोटा-ताजा हिरन!’’ उसने थैला जमीन पर रखा और हिरन को पकड़ने दौड़ा।

उसी समय चूहा फुर्ती से आया और थैला काटने लगा। जरा ही देर में कछुवा आजाद हो गया। वह, भागा और पास ही एक घनी झाड़ी में छिप गया। उधर हिरन ऐसा दौड़ा कि बहेलिया उसकी दुम भी न पकड़ सका। वह खाली हाथ थैले के पास लौट आया।

‘‘हिरन हाथ न आया तो क्या हुआ?’’ उसने कहा, ‘‘यह मोटा-ताजा कछुवा तो है ही। आज के खाने को यही काफी है।’’

लेकिन जब बहेलिये ने थैला उठाया तो वह खाली निकला। वह इतना चकित हुआ कि उसे अपनी ही आँखों पर यकीन न आया।

‘‘यह क्या?’’ वह चीखा, ‘‘कछुवा नदारद! इतना सुस्त जानकर कैसे भागा होगा? लगता है आज मेरी किस्मत ही खराब है।’’

कौवा, हिरन, चूहा और कछुवा छिपे-छिपे बहेलिये को देख रहे थे। जब वह खाली थैला लेकर चला गया तो वे सब ठाट से बाहर निकल आए।

इस प्रकार वे चारों मित्र मिलजुल कर एक दूसरे की मदद करते हुए कई वर्षों तक आनंद से दिन बिताते रहे।

(पंचतंत्र की कथा पर आधारित)

Copyright- SCERT Assam
not be republished

अभ्यास-माला

पाठ से

1. पूर्ण वाक्य में उत्तर दो :

(क) चारों मित्र कहाँ रहते थे?

(ख) कौवा किसकी खोज में उड़ चला?

(ग) जाल में फँसे हिरन को छुड़ाने का उपाय किसने किस रूप में निकाला?

(घ) कछुवे को किसने पकड़ा और उसे आजाद किसने किया?

(ङ) बहेलिए ने अपनी किस्मत को खराब क्यों कहा?

2. आओ, चित्रों को आवाजों के साथ मिलाएँ :

(क) मिमियाना (ख) चिंघाड़ना (ग) रेंकना (घ) भौंकना

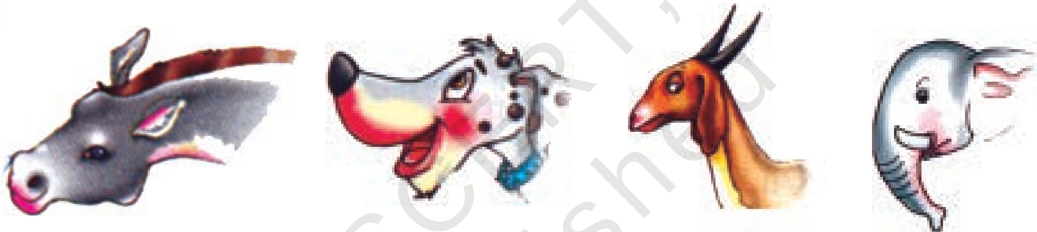

3. किसने-किससे कहा, बताओ :

(क) "बचाओ, मुझे बचाओ।" ....

(ख) "चिंता की कोई बात नहीं।" ....

(ग) "यहाँ तो कछुवेराम दिखाई दे रहे हैं।" ....

(घ) "बहेलिए के घर पहुँचने से
पहले ही कर डालना चाहिए।" ....

पाठ के आस-पास

1. तुम्हारा प्रिय मित्र कौन है? उसके बारे में पाँच वाक्य लिखो।
2. सच्ची मित्रता की किन्हीं पाँच विशेषताओं का उल्लेख करो।

योग्यता-विस्तार

1. 'पंच' का अर्थ है पाँच और 'तंत्र' का मतलब है आचरण के सिद्धांत- आत्मविश्वास, दृढ़ता, लगन, मैत्री, और ज्ञान-प्राप्ति। 'पंचतंत्र' में पशु-पक्षियों की कहानियों के जरिए नीति की शिक्षा दी जाती है। तुम भी पुस्तकालय अथवा अन्य स्रोत से 'पंचतंत्र' की कहानियों का संग्रह करके पढ़ो और कक्षा में उनकी चर्चा करो।

Copyright-SCERT, Assam not to be republished

2. आओ, पशु और पक्षियों के नाम अलग-अलग लिखें :

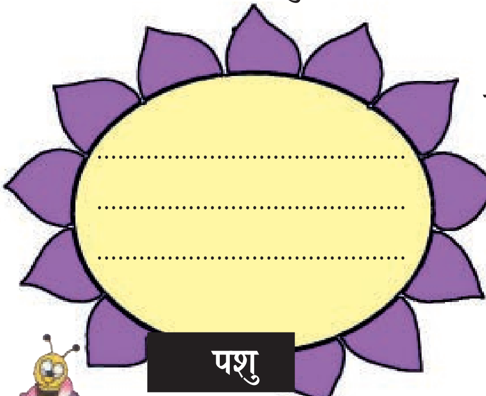

चूहा, हाथी, कौवा,
बाघ, कछुवा, घोड़ा,
हंस, तोता, हिरन,
मुर्गा, कबूतर, गाय,
कोयल, बगुला

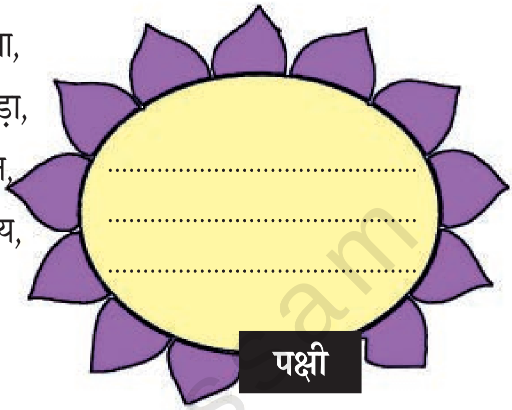

भाषा-अध्ययन

1. ***में, मैं का प्रयोग***

(क) एक घने जंगल में एक झील थी।

(ख) कौवा नीचे आया तो देखा कि हिरन एक जाल में फँसा है।

(ग) मैं तुम्हारी मदद के लिए दोस्तों के पास जाता हूँ।

(घ) मैं यहाँ हूँ, यहाँ।

(ङ) मैं तुम्हें अपनी पीठ पर बैठा कर ले जाऊँगा।

अब में/मैं से रिक्त स्थानों की पूर्ति करो :

(क) एक वर्ष .... बारह महीने होते हैं।

(ख) गाँव .... मेला लगा था।

(ग) .... अपने घर .... हमेशा सफाई रखता हूँ।

आओ, जानें :

वाक्य में क्रिया के जिस रूप से कार्य के समय का पता चलता है, उसे काल कहते हैं। काल के मुख्यत: तीन भेद हैं –

(क) **भूत काल** – जब काम के हो जाने का भाव हो।

(ख) **वर्तमान काल** – जब काम के जारी रहने का भाव हो।

(ग) **भविष्यत काल** – जब काम आने वाले समय में होने का भाव हो।

2. **र के प्रयोग :**

र के विविध रूप हैं। जैसे – र, रेफ, रकार।

ये भी देखो–

र	ˋ	ˏ	ˆ
रस	चर्चा	मित्र	ट्रेन
रस्सी	वर्षा	प्रकार	ड्रम

आओ, जानें :

जब 'र' किसी व्यंजन के साथ संयुक्त रूप से आता है तब वह कभी संयुक्त व्यंजन से पहले आता है और कभी बाद में आता है। जब 'र' पहले आता है, जैसे, र् + च तो रेफ (ˋ)

Copyright - SCERT, Assam
not be republished

होता है, 'र्च', चर्चा। वैसे ही जब 'र' बाद में आता है, जैसे- प् + र, तब रकार होता है- प्र, प्रकार, ड्र, ड्रम।

ड् + र् + अ + म् + अ = ड्रम

प् + र् + अ + ण् + आ + म् + अ = प्रणाम

ट् + र् + ए + न् + अ = ट्रेन

द् + र् + उ + त् + अ = द्रुत

इन वर्णों में 'र' कार का संयोग ध्यान से देखो :

त्+र्+अ=त्र, श्+र्+अ्=श्र, ह्+र्+अ=ह्र

इन्हें भी देखो :

स्+र्+अ=स्र, स्+त्+र्+अ=स्त्र

अब निम्नलिखित शब्दों को निर्देशानुसार अलग-अलग करके लिखो :

ग्रह, दर्पण, क्रम, पर्ण, मद्रास, ड्रम।

र (ᐞ)	र (्र , ्र)
....	....
....	....
....	....

3. अनुनासिक स्वर और अनुस्वार में अंतर है :

जब किसी स्वर का उच्चारण मुख और नाक दोनों से होता है, तब उसे अनुनासिक स्वर कहा जाता है। ऐसे स्वर के ऊपर चंद्रबिंदु (ँ) लगाया जाता है। जैसे- गँवार, आँख, ईंट, ऊँट, भैंस, गोंद आदि। अनुस्वार नाक से उच्चारित होने वाले वर्ग के पंचम वर्ण (ङ, ञ, ण, न, म) के स्थान पर विकल्प से बिंदु (ं) के रूप में आता है। जैसे-

ङ + ग = गङ्गा/गंगा

ञ + च = चञ्चल/चंचल

ण + ड = खण्ड/खंड

न + त = अन्त/अंत

म + प = सम्पर्क/संपर्क

आओ, पाठ में आए कुछ शब्दों के अर्थ जानें :

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
झील	=	बड़ा प्राकृतिक जलाशय, सरोवर	फँसना	=	कैद हो जाना
			फौरन	=	जल्द
काला-कलूटा	=	कुरूप	आजाद	=	मुक्त
सुनहरे	=	सोने के रंगवाले	यकीन	=	विश्वास
इंतजार	=	अपेक्षा	झाड़ी	=	कँटीला पौधा
पुकार	=	जोर से बुलाना	चौकड़ी	=	उछाल, उछल-कूद

Copyright SCERT, Assam
not be republished

पाठ-3

एक तेजस्वी और दयावान बालक

वीरेश्वर एक साहसी बालक था। उत्तरी कोलकाता के एक वकील के परिवार में 12 जनवरी, 1863 ई. में उसका जन्म हुआ था। उसके पिता का नाम था विश्वनाथ दत्त तथा माँ का नाम भुवनेश्वरी देवी था। लोग प्यार से उसे 'बिले' नाम से भी पुकारते थे। एक दिन की बात है। वीरेश्वर एक मेला देखकर कुछ दोस्तों के साथ लौट रहा था। अचानक एक घोड़ा-गाड़ी तीव्र गति से आ गई और एक छोटा बच्चा गाड़ी के नीचे आ गया। सभी देखते ही रह गए। वीरेश्वर ने अपने साहस का परिचय देते हुए बड़ी फुर्ती से उस बच्चे को गाड़ी के नीचे से निकाला। सभी ने उसकी प्रशंसा की।

बालक वीरेश्वर के मन में दया का भाव भरा हुआ था। उसमें एक विशेष आदत थी, दान की। जरूरतमंद को देखकर अपने पिता की ही तरह वह जो भी कीमती वस्तु हो दान कर देता था, यहाँ तक कि स्वयं के कपड़े भी। कभी-कभार माँ इस कारण से उसे कमरे में बंद कर देती थीं। तब भी वह रास्ते से गुजरते हुए भिखारियों को बुलाकर खिड़की से कमरे का सामान दे देता था। मजबूर होकर माँ को कमरा खोल देना पड़ता था।

दिन व दिन वीरेश्वर बड़ा होने लगा। वह स्कूल भी जाने लगा। माँ ने स्कूल में उसका नाम रखा नरेंद्रनाथ। कोलकाता के विद्यासागर मेट्रपलिटन स्कूल में उसकी पढ़ाई शुरू हुई। नरेंद्रनाथ लिखाई-पढ़ाई में भी तेज था। दोस्तों के साथ खेलकर समय बिताना उसे ज्यादा पसंद था। लेकिन जब भी पढ़ता था मन लगाकर पढ़ता था। धीरे-धीरे पढ़ाई में उसकी रुचि बढ़ने

Copyright SCERT, not to be republished

लगी। वह साहित्य, दर्शनशास्त्र, इतिहास आदि विषयों पर गंभीर अध्ययन करने लगा। प्रवेशिका परीक्षा में नरेंद्रनाथ प्रथम विभाग में उत्तीर्ण हुआ। उसके बाद कुछ दिनों के लिए प्रेसिडेंसी कॉलेज में भी अध्ययन किया। तत्पश्चात जनरल एसंब्लिज कॉलेज में उसने दाखिला लिया। आज यह कॉलेज स्कॉटिस चर्च कॉलेज नाम से परिचित है।

कॉलेज में पढ़ते समय नरेंद्रनाथ का प्रिय विषय रहा दर्शनशास्त्र। यूनान, जर्मनी आदि देशों के दर्शनशास्त्र का उसने विस्तारपूर्वक अध्ययन किया। उसके मन में तरह-तरह के प्रश्न उठने लगे। इन्हीं प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ते हुए वह एक दिन दक्षिणेश्वर काली मंदिर के साधक रामकृष्ण परमहंस के पास पहुँचा। उनके विचारों और सिद्धांतों से वह इतना प्रभावित हुआ कि उन्हें अपना गुरु मान लिया। अपने गुरु की छत्रछाया में नरेंद्र ने वेद, उपनिषद, गीता आदि का अध्ययन किया। गुरु रामकृष्ण परमहंस ने उसे बेसहारे और पीड़ित लोगों की सेवा करने के लिए प्रोत्साहित किया।

पिताजी विश्वनाथ दत्त के आकस्मिक निधन के बाद परिवार की आर्थिक स्थिति बिगड़ गई। उस समय नरेंद्र बी. ए. पास कर कानून की पढ़ाई कर रहा था। परिवार का दायित्व उसके नाजुक कंधों पर आ पड़ा। नरेंद्र को पढ़ाई छोड़नी पड़ी। फिर भी नरेंद्र ने अपना हौसला बनाए रखा और अपनी साधना व लगन से ज्ञानार्जन करता रहा। विश्व के जाने-माने कोलकाता विश्वविद्यालय से सम्मानीय अध्यापक पद के लिए उसे आमंत्रित किया गया था। लेकिन गरीब, लाचार और बेसहारे लोगों की सेवा करने के लिए उसने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया।

25 वर्ष की अवस्था में नरेंद्र ने गेरुवा वस्त्र धारण किया। संन्यास लेने के बाद वे स्वामी विवेकानंद नाम से लोकप्रिय हुए। तत्पश्चात स्वामी विवेकानंद जी ने पूरे भारतवर्ष की यात्रा की। इस यात्रा में उन्होंने राजाओं की विलासिता और प्रजाओं की दरिद्रता देखी। समाज में व्याप्त अंधविश्वासों और कुसंस्कारों को भी देखा। इन सब चीजों का उनके मन पर गहरा प्रभाव पड़ा और उन्होंने देश में आधुनिक एवं वैज्ञानिक शिक्षा का अभाव महसूस किया। मन ही मन स्वामी जी इन चीजों से मुक्त एक शक्तिशाली भारत का सपना देखने लगे।

वर्ष 1893 में अमरीका के शिकागो शहर में एक विश्व धर्म सम्मेलन आयोजित हुआ था। उस धर्म सम्मेलन में स्वामीजी ने हिंदू धर्म के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया था। शिकागो पर्लियामेंट ऑफ रिलीजन (Parliament of Religion) में स्वामीजी ने 'प्यारे अमरीकी बहनो और भाइयो' शब्दों के साथ ज्यों ही अपना ओजस्वी भाषण शुरू किया तो 7000

Copyright - SCERT, Assam not to be republished

विद्वानों से भरा पूरा हॉल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा था। आज भी दुनिया भर के लोग उस भाषण को याद करते हैं। इस भाषण के जरिए उन्होंने भारतीय अध्यात्म, सभ्यता और संस्कृति को विश्व भर में पहचान दिलायी थी। सम्मेलन में उनके विचार सुनकर दुनिया के तमाम विद्वान चकित रह गए। अमरीका में उनका भरपूर स्वागत हुआ। भाषण के बाद अमरीकी मीडिया ने उन्हें 'साईक्लोनिक हिंदू' (Cyclonic Hindu) नाम से नवाजा था। उस सम्मेलन के बाद विदेश में उनके भक्तों का एक समुदाय बन गया। अनेक लोग उनके शिष्य भी बन गए।

भारत वापस आकर स्वामीजी ने 'रामकृष्ण मिशन' नामक एक कल्याणकारी संस्था की भी स्थापना की। समस्त पृथ्वी के गरीब, बेसहारे लोगों की सेवा करना इस संस्था का प्रधान उद्देश्य है। आज देश-विदेश में इस संस्था की अनेक शाखाएँ काम कर रही हैं। स्वामीजी एक मानवतावादी संत थे। उन्होंने मानव की उन्नति और कल्याण को सर्वोपरि माना। स्वामीजी दुनिया के सभी धार्मिक विचारों को महत्व देते थे। उनकी ओजपूर्ण वाणी और उपदेश आज भी समस्त मानव जाति में शक्ति का संचार करता है।

देश की युवा शक्ति पर स्वामीजी को पूरा भरोसा था। इसलिए तन-मन से स्वस्थ होकर देश के भविष्य को बदलने की दिशा में काम करने के लिए आपने पूरी युवा शक्ति का आह्वान किया था।

स्वामीजी सिर्फ 39 साल तक ही जीवित रहे। वर्ष 1902 की 4 जुलाई को वेल्लुर मठ में उन्होंने अंतिम साँस ली। आज भी लोग इस महान दार्शनिक, ओजस्वी वक्ता, मानवतावादी संत को श्रद्धा के साथ स्मरण करते हैं। हमारा सौभाग्य है कि हम 2013 ई. में उनके जन्म का 150वाँ वर्ष मनाने वाले हैं। उनकी ही तरह हम भी देश की सेवा करें, यही हमारा परम कर्तव्य है।

Copyright - SCERT, Assam
not to be republished

अभ्यास-माला

पाठ से

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो :

(क) वीरेश्वर ने साहस का परिचय कैसे दिया ?

(ख) नरेंद्रनाथ के गुरु कौन थे ? गुरु से वह कैसे मिला ?

(ग) नरेंद्रनाथ ने संन्यास लेने के बाद क्या किया ?

(घ) विश्व धर्म सम्मेलन कब और कहाँ आयोजित हुआ था ?

(ङ) 'रामकृष्ण मिशन' नामक संस्था का प्रधान उद्देश्य क्या है ?

(च) स्वामीजी ने युवा शक्ति का आह्वान किसलिए किया था ?

रामकृष्ण मिशन

2. पूर्ण वाक्य में उत्तर दो :

(क) वीरेश्वर रास्ते से गुजरते हुए भिखारियों को बुलाकर क्या करता था ?

(ख) स्कूल में वीरेश्वर का नाम क्या रखा गया था ?

(ग) संन्यास लेने के बाद नरेंद्रनाथ किस नाम से लोकप्रिय हुए ?

(घ) अमरीकी मीडिया ने स्वामीजी को किस नाम से नवाजा था ?

पाठ के आस-पास

1. बेसहारे और लाचार लोगों को सहायता पहुँचानेवाली कुछ संस्थाओं के नाम बताओ।
2. क्या तुमने कभी गरीब और बेसहारे लोगों की सहायता की है ? अगर नहीं, तो क्यों नहीं कर पाए, लिखो। अगर सहायता की है, तो कैसे लोगों की और किस प्रकार से सहायता की है, बताओ।
3. किसी सफल व्यक्ति की जीवनी से उनके विद्यार्थी जीवन की दिनचर्या के बारे में पढ़ो और उसके आधार पर आदर्श विद्यार्थी की दिनचर्या पर एक लेख लिखो।

3. आओ, समूह में चर्चा करें :

विवेकानंद जी की कौन-कौन सी बातें महापुरुष शंकरदेव से मिलती हैं ?

(आवश्यक हो, तो शिक्षक की सहायता लो)

भाषा-अध्ययन

आओ, जानें :

1. संधि शब्द का अर्थ है मेल। परस्पर निकटस्थ दो शब्दों के प्रथम की अंत्यध्वनि और दूसरे की आद्यध्वनि के बीच जो मेल होता है उसे संधि कहते हैं।

Copyright SCERT Assam not to be republished

विद्या + आलय = विद्यालय

पूर्व + उत्तर = पूर्वोत्तर

निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद करो :

हिमालय = हिम + आलय

मेघालय = ... + ...

विद्यार्थी = ... + ...

महोत्सव = ... + ...

सूर्योदय = ... + ...

आओ, जानें :

उपसर्ग– जो शब्दांश शब्द के आदि में जुड़कर उसके अर्थ को बदल देता है, उसे **उपसर्ग** कहते हैं।

'अ' उपसर्ग जोड़कर तीन शब्द बनाए गए हैं–

प्रसन्न - अप्रसन्न

भाव - अभाव

सुविधा - असुविधा

आओ, समूह में बैठ कर 'प्र', 'कु', 'अ', 'वि' उपसर्ग–युक्त एक–एक शब्द पाठ से छाँटकर लिखें :

जैसे– प्र + गति = प्रगति

रेखांकित उपसर्ग का प्रयोग करके अन्य दो शब्द बनाओ :

विरोध = ... , ...

उपकार = ... , ...

सुयोग्य = ... , ...

प्रदीप = ... , ...

अभिमान = ... , ...

आओ, जानें :

प्रत्यय– जो शब्दांश शब्द के अंत में जुड़कर नया शब्द बनाने के साथ–साथ उसके अर्थ में विशेषता पैदा कर देता है, उसे **प्रत्यय** कहते हैं।

जैसे– भला + ई = भलाई

अब तुम लोग ‘ईय’ एवं ‘इत’ प्रत्यय लगाकर कुछ नए शब्द बनाओ :

जैसे – राष्ट्र + ईय = राष्ट्रीय प्रभाव + इत = प्रभावित

‘ईय’	‘इत’

प्रत्यय जोड़कर शब्द बनाओ :

स्वाधीन + ता = ...

दूध + वाला = ...

पत्र + कार = ...

आओ, जानें :

यह मोहन का घर है।

वे रमेश के मित्र हैं।

रीना की घड़ी सुंदर है।

ऊपर के वाक्यों में आए ‘का’, ‘के’, ‘की’ का प्रयोग इनके बाद आने वाले शब्दों के लिंग तथा वचन के अनुसार हुआ है। पुल्लिंग एकवचन में ‘का’, पुल्लिंग बहुवचन में ‘के’ तथा स्त्रीलिंग के दोनों वचनों में ‘की’ का प्रयोग किया जाता है।

इसे भी जानो :

मैं, हम, तू और तुम सर्वनाम-शब्दों के साथ का, के, की के स्थान पर रा, रे, री का प्रयोग होता है। जैसे– मैं– मेरा, मेरे, मेरी, हम–हमारा, हमारे, हमारी, तू– तेरा, तेरे, तेरी, तुम – तुम्हारा, तुम्हारे, तुम्हारी।

निजवाचक आप सर्वमान के साथ ना, ने, नी का प्रयोग होता है :

अपना, अपने, अपनी।

4. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध रूप में लिखो :

(क) मेरा / मेरी नाम दीपिका है।

(ख) हमारा / हमारे पिताजी आ रहे हैं।

(ग) तुम्हारे / तुम्हारा दोस्त बाजार जा रहा है।

Copyright SCERT, Assam
not to be republished

(घ) भारत का / की / के इतिहास गौरवमय है।

योग्यता विस्तार

1. **विद्यार्थी पाठ के आधार पर विवेकानंद जी के जीवन की महत्वपूर्ण बातों को छोटे-छोटे कार्डों पर लिखकर शिक्षण-कोण में रख देंगे। उदाहरण के लिए -**

जन्म - 1863 ई. में
मृत्यु - ई. 1902 की 4 जुलाई को

पिता- विश्वनाथ दत्त
माता- भुवनेश्वरी देवी

फिर सभी विद्यार्थी छोटे-छोटे समूहों में बँट जाएँगे और इन कार्डों पर लिखी गई बातों के आधार पर एक जीवनी प्रस्तुत करेंगे :

उसका नाम रखा गया नरेंद्रनाथ

कोलकाता के विद्यासागर मेट्रपलिटन स्कूल में उसकी पढ़ाई शुरू हुई।

25 वर्ष की अवस्था में नरेंद्र ने गेरुवा वस्त्र धारण किया।

उसके पिताजी के आकस्मिक निधन के बाद परिवार की आर्थिक स्थिति बिगड़ गई।

रामकृष्ण परमहंस को अपना गुरु मान लिया।

वर्ष 1893 में अमरीका के शिकागो शहर में एक विश्व धर्म सम्मेलन आयोजित हुआ था।

स्वामीजी ने एक कल्याणकारी संस्था की स्थापना की, जिसका नाम है-रामकृष्ण मिशन। अनेक लोग उनके शिष्य भी बन गए।

ऐसे ही अन्य महान व्यक्ति के जीवन से जुड़ी सूचनाएँ अथवा किस्से-कहानियाँ आदि छोटे-छोटे कार्डों पर लिखकर शिक्षण-कोण में रखे जा सकते हैं।

2. **शब्द-अंत्याक्षरी का खेल खेलो :**

क ....   कलम   मन   नर   रसाल   लता
ग ....
ल ....

© Copyright SCERT Assam not to be republished

3. आओ, संख्याओं का ज्ञान प्राप्त करें :

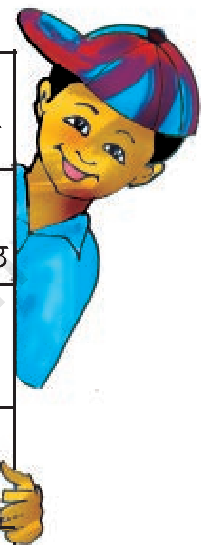

५१ इक्यावन	५२ बावन	५३ तिरपन	५४ चौवन	५५ पचपन	५६ छप्पन	५७ सत्तावन	५८ अट्ठावन
५९ उनसठ	६० साठ	६१ इकसठ	६२ बासठ	६३ तिरसठ	६४ चौंसठ	६५ पैंसठ	६६ छियासठ
६७ सड़सठ	६८ अड़सठ	६९ उनहत्तर	७० सत्तर	७१ इकहत्तर	७२ बहत्तर	७३ तिहत्तर	७४ चौहत्तर
७५ पचहत्तर	७६ छिहत्तर	७७ सतहत्तर	७८ अठहत्तर	७९ उन्नासी	८० अस्सी	८१ इक्यासी	८२ बयासी
८३ तिरासी	८४ चौरासी	८५ पच्चासी	८६ छियासी	८७ सत्तासी	८८ अट्ठासी	८९ नवासी	९० नब्बे
९१ इक्यानवे	९२ बानवे	९३ तिरानवे	९४ चौरानवे	९५ पंचानवे	९६ छियानवे	९७ सत्तानवे	९८ अट्ठानवे
९९ निन्यानवे	१०० सौ						

आओ, पाठ में आए कुछ शब्दों के अर्थ जानें :

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
तेजस्वी	=	तेज वाला, प्रखर बुद्धिवाला, प्रभावशाली	निधन	=	मृत्यु, देहावसान
			नाजुक	=	कोमल
तीव्र	=	तेज	हौसला	=	साहस
आदत	=	अभ्यास	लाचार	=	उपायविहीन
जरूरतमंद	=	जिसे आवश्यक हो	ओजस्वी	=	ओजपूर्ण
मजबूर होकर	=	विवश होकर, बाध्य होकर	तमाम	=	सारा
			नवाजना	=	अलंकृत करना, अर्पित करना
दिन व दिन	=	दिन के बाद दिन			
यूनान	=	ग्रीस	सर्वोपरि	=	सबसे ऊपर

Copyright SCERT, Assam not to be republished

पाठ-4

"देखो बेटी, आज के अखबार में एक स्कूली बच्ची ने अपनी मुंबई यात्रा के अनुभवों को व्यक्त करते हुए एक सुंदर लेख लिखा है।"

– पिताजी ने अखबार का पन्ना दिखाते हुए निकिता से कहा।

"बेटी, तुम भी अपनी पिछली राजस्थान यात्रा के बारे में एक छोटा-सा लेख तैयार कर सकती हो।"

"क्यों नहीं पिताजी लेकिन क्या मेरा लेख भी अखबार में प्रकाशित हो जाएगा?"

जिज्ञासा भरी नजरों से निकिता ने पिताजी की ओर देखा।

"अवश्य प्रकाशित हो जाएगा बेटी, तुम लिखो तो सही। तुम्हारा लेख मैं स्वयं अखबार के दफ्तर में देकर आऊँगा।"

अखबार में अपना लेख प्रकाशित होने की कल्पना से ही निकिता की आँखें चमक उठीं और वह अपनी पिछली राजस्थान यात्रा की यादों में खो गई। निकिता अपनी राजस्थान यात्रा के अनुभवों का एक आलेख तैयार करने लगी.......

मेरी राजस्थान यात्रा

राजस्थान घूमने की चाहत मेरे मन में बचपन से ही थी। क्योंकि राजस्थान की सांस्कृतिक परंपरा, ऐतिहासिक किले, रेगिस्तान, भोजन तथा विभिन्न उत्सव आदि के बारे में सुनती आई थी। इसलिए राजस्थान घूमने की इच्छा और भी प्रबल हो गई थी। पिताजी ने जब हमें बताया कि इस बार सर्दी की छुट्टियों में हम राजस्थान घूमने जा रहे हैं तो मेरा मन खुशी से झूम उठा। राजस्थान यात्रा के मेरे अनुभवों को आप सब के साथ बाँटते हुए मुझे बड़ी खुशी हो रही है। माँ, पिताजी, मेरा छोटा भाई अर्णव और मैं – हमने अपनी गुवाहाटी से नई दिल्ली तक की यात्रा

राजधानी एक्सप्रेस से की। राजस्थान की हमारी पहली मंजिल थी राज्य की राजधानी जयपुर। नई दिल्ली से जयपुर तक की यात्रा भी हमने रेलगाड़ी से ही तय की। लगभग पाँच घंटे की इस यात्रा में, मैं राजस्थान के राजपूत योद्धाओं और यहाँ की वीरांगनाओं की साहसिक कहानियों में खो गई थी। कब जयपुर पहुँच गए मुझे तो पता भी नहीं चला। रात हो चुकी थी। जनवरी का महीना था। हमारे यहाँ की तुलना में ठंड कुछ अधिक ही लग रही थी।

अगली सुबह हम सभी जयपुर घूमने निकले। यहाँ घूमते हुए मैंने देखा कि यह बड़ा ही सुनियोजित शहर है। बाजार सब सीधी सड़कों के दोनों ओर हैं। भवनों का निर्माण भी बिलकुल एक ही तरीके से किया गया है। यहाँ के प्रत्येक भवन में गुलाबी रंग का उपयोग किया गया है इसलिए इसे 'गुलाबी शहर' भी कहते हैं। आज का जयपुर शहर विश्व के सुंदरतम शहरों में से एक माना जाता है। यहाँ हमने अनेक दर्शनीय स्थल भी देखे जिनमें हवा महल, सिटी पैलेस, जंतर-मंतर, आमेर का किला आदि प्रमुख हैं। जयपुर का विश्व प्रसिद्ध हवामहल एक पाँच मंजिली इमारत है, जिसमें सैकड़ों झरोखे बने हुए हैं। जंतर-मंतर पर मैंने देखा कि विदेशी पर्यटक सूर्य की किरणों से समय की गणना कर अपनी कलाई में बंधी आधुनिक घड़ी में वही समय देखकर दंग रह जाते हैं। अपने गौरवशाली इतिहास पर मुझे मन ही मन गर्व हो रहा था।

हवामहल

हमारी अगली यात्रा उदयपुर के लिए थी। अनुपम प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर उदयपुर देशी एवं विदेशी पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केंद्र है। शायद यही कारण है कि उदयपुर को पूर्व का वेनिस, झीलों की नगरी, राजस्थान का कश्मीर आदि नामों से भी जाना जाता है। इस सुंदर शहर को नजदीक से देखने के बाद मुझे यह अहसास हुआ कि राजस्थान के भौगोलिक परिवेश के बारे में हम कितना गलत सोचते थे। यहाँ घूमते हुए हमने नगर के सबसे ऊँचे स्थान पर स्थित राजमहल को देखा जो काफी भव्य और विशाल है। यह पेशोला झील के तट पर बसा हुआ है। महल से पूरे शहर और झील का दृश्य कितना मनोरम दिखाई देता है! महल के अंदर

वीर महाराणा प्रताप के जीवन से संबंधित अनेक चित्र, अस्त्र–शस्त्र आदि भी हमने देखे।

मेरी राजस्थान यात्रा का एक अविस्मरणीय पल है अजमेर शरीफ की दरगाह में बिताया गया कुछ समय। महान सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिस्ती की याद में बनी इस दरगाह में देशी–विदेशी पर्यटकों की भीड़ देखने को मिली। हमलोगों ने भी दरगाह में जाकर मन की मुरादें पूरी कीं। वहाँ चल रही कव्वाली को सुनकर दिल खुश हो गया। इसके बाद पास के पुष्कर झील में जा पहुँचे। हमें पता चला कि यहाँ ऊँटों का विश्व प्रसिद्ध मेला लगता है, जिसमें हजारों की संख्या में ऊँट खरीदे और बेचे जाते हैं। लेकिन दुर्भाग्यवश हमें वह मेला देखने को नहीं मिला।

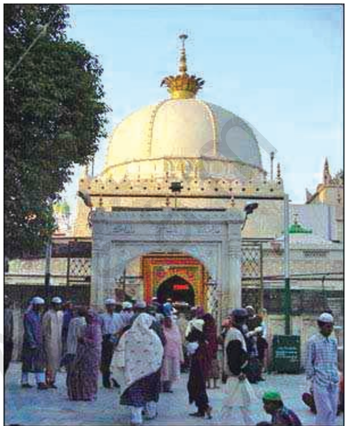
अजमेर शरीफ की दरगाह

इसके बाद हम राजस्थान के हिल स्टेशन माउंट आबू पर पहुँचे। हमने पूरे एक दिन और एक रात वहाँ बितायी। वहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य देखकर हम अभिभूत हो गए। प्राकृतिक सुंदरता और सुहाने मौसम के लिए इसे राजस्थान का स्वर्ग भी कहा जाता है। यहाँ का ऐतिहासिक मंदिर और प्राकृतिक खूबसूरती पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती है।

हिल स्टेशन माउंट आबू

पर्यटन के संदर्भ में राजस्थान का एक और महत्वपूर्ण आकर्षण है जैसलमेर शहर। अपनी यात्रा का असली आनंद तो हमने यहीं उठाया। यहाँ हमने देखा कि शहर के सारे प्राचीन भवन पीले–भूरे रंग के पत्थरों से बने हैं। इसीलिए यह शहर राजस्थान का 'स्वर्ण शहर' भी कहलाता है। यह क्षेत्र विशाल थार मरुस्थल का एक बड़ा भाग है जिसके कारण यहाँ केवल रेत ही रेत दिखाई देता है। पूरे इलाके में विभिन्न आकार–प्रकार के बालू के ऊँचे–ऊँचे टीलों का विशाल सागर–सा दिखाई देता है। रेत के टीलों का यह अथाह सागर राजस्थान का असल अहसास कराता है। सूर्यास्त के समय यहाँ काफी खूबसूरत नजारा होता है। इस विशाल रेगिस्तान में सभी पर्यटक ऊँट की सवारी का आनंद अवश्य उठाते हैं। हमने भी

थार रेगिस्तान में ऊँटों की कारवाँ

ऊँट की सवारी का आनंद उठाया। शुरू-शुरू में तो इतने ऊँचे ऊँट की पीठ पर चढ़ते हुए मुझे बहुत डर लग रहा था। मगर साहस करके एक बार चढ़ने के बाद जब ऊँट अपनी लचकदार लंबी गर्दन हिलाते हुए रेत पर चलने लगा तो मुझे बड़ा मजा आ रहा था। ऊँट की सवारी करते हुए मुझे लग रहा था मानो मैं युद्ध में जा रही कोई राजपूत वीरांगना हूँ। उस क्षण को याद करके मैं अब भी रोमांचित हो जाती हूँ।

घूमर नृत्य

यात्रा में हमें राजस्थान के प्रसिद्ध नृत्य 'घूमर', जो उत्सवों के अवसर पर महिलाओं द्वारा किया जाता है, देखने को मिला। साथ ही कठपुतली की कला भी देखने को मिली जिससे हमें बहुत ही आनंद आया। पूरी राजस्थान यात्रा के दौरान हम कई स्थानीय लोगों से मिले और उनसे बातचीत भी की। यहाँ पुरुष का पारंपरिक पहनावा धोती और कुर्ता है। सिर पर पगड़ी भी बाँधी जाती है। महिलाएँ लहंगा और ओढ़नी पहनती हैं। पूरे राज्य में संपर्क भाषा के रूप में हिंदी और राजस्थानी भाषाओं का प्रयोग होता है। हिंदी समझने और बोलनेवाले लोग पूरे राज्य में कहीं भी अपने को अजनबी महसूस नहीं करने देते। यात्रा के दौरान हमने शाकाहारी स्वादिष्ट भोजन के स्वाद का भरपूर आनंद उठाया। वहाँ के लोगों से मिलकर मुझे लगा कि वे काफी मिलनसार और अतिथि-परायण होते हैं।

रेगिस्तानी इलाके में बरसात बहुत कम होती है और यहाँ पानी भी सहज ही उपलब्ध नहीं होता। गर्मी के मौसम में तापमान भी काफी अधिक हो जाता है। लेकिन राज्य के दूसरे हिस्से में मौसम सामान्य रहता है। यह एक अति मनोरम और विविधताओं से भरा हुआ राज्य है।

हमारी छुट्टियाँ समाप्त हो रही थीं। हमें तय समय पर लौटना जरूरी था। मुझे अभी भी लगता है कि राजस्थान में और बहुत कुछ हैं जो हम देख नहीं सके। आप लोग भी मौका मिले तो राजस्थान जरूर जाइए। पर्यटन स्थल के रूप में यह एक बहुत ही आकर्षक और देखने लायक जगह है।

आलेख को पूरा करने के बाद निकिता ने उसे लिफाफे में भरा। फिर लिफाफे पर स्थानीय हिंदी अखबार के संपादक महोदय का नाम-पता लिखकर अपने पिताजी को सौंप दिया।

Copyright SCERT
not to be republished

अभ्यास-माला

पाठ से

1. सही विकल्प चुनकर उत्तर दो :

(क) निकिता अपनी राजस्थान यात्रा के अनुभव को लिखकर

(अ) विद्यालय की पत्रिका में प्रकाशित करना चाहती थी।

(आ) परीक्षा में आने वाले निबंध के रूप में तैयार करना चाहती थी।

(इ) अखबार में प्रकाशित करना चाहती थी।

(ई) अपनी सहेली को पत्र भेजना चाहती थी।

(ख) पिताजी ने निकिता से कहा था कि वे लोग इस बार राजस्थान की सैर करने जाएँगे–

(अ) सर्दी की छुट्टियों में

(आ) गर्मी की छुट्टियों में

(इ) बिहु की छुट्टियों में

(ई) दुर्गापूजा की छुट्टियों में

(ग) जयपुर को 'गुलाबी शहर' कहते हैं, क्योंकि –

(अ) यहाँ गुलाब का सबसे बड़ा बाग अवस्थित है।

(आ) यहाँ हर भवन के सामने गुलाब के पौधे लगे हुए हैं।

(इ) यहाँ गुलाबी रंग के संगमरमर की खानें हैं।

(ई) यहाँ के प्रत्येक भवन में गुलाबी रंग का उपयोग किया गया है।

(घ) निकिता की राजस्थान यात्रा में निम्नलिखित स्थानों के दर्शन का सही क्रम क्या रहा?

(अ) जयपुर, उदयपुर, जैसलमेर, माउंट आबू

(आ) जयपुर, उदयपुर, माउंट आबू, जैसलमेर

(इ) जैसलमेर, माउंट आबू, उदयपुर, जयपुर

(ई) उदयपुर, जैसलमेर, माउंट आबू, जयपुर

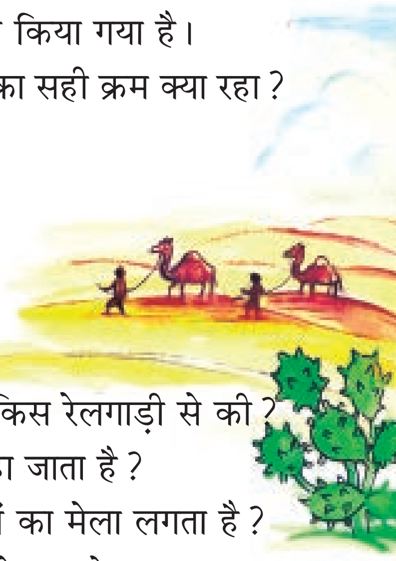

2. पूर्ण वाक्य में उत्तर दो :

(क) निकिता ने गुवाहाटी से दिल्ली तक की यात्रा किस रेलगाड़ी से की?

(ख) राजस्थान का 'स्वर्ण शहर' किस शहर को कहा जाता है?

(ग) राजस्थान के किस स्थान पर विश्व प्रसिद्ध ऊँटों का मेला लगता है?

(घ) राजस्थान के एक प्रसिद्ध नृत्य के नाम का उल्लेख करो।

Copyright SCERT Assam
not to be republished

आओ, इन्हें भी जानें :

रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान और सरिस्का टाइगर रिजर्व

राजस्थान में स्थित रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान देश के बेहतरीन बाघ संरक्षण क्षेत्रों में से एक है। 1981 ई. में इसे राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा मिला। इस उद्यान में जानवरों के अलावा पक्षियों की लगभग 264 प्रजातियाँ देखी जा सकती हैं।

राजस्थान का दूसरा राष्ट्रीय उद्यान है- सरिस्का टाइगर रिजर्व। 1955 ई. में इसे एक अभयारण्य घोषित किया गया था और 1979 ई. में इसे प्रोजेक्ट टाइगर के अंतर्गत टाइगर रिजर्व बनाया गया था।

पुष्कर मेला

अजमेर से लगभग 11 कि.मी. की दूरी पर स्थित एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है पुष्कर। यहाँ पर कार्तिक पूर्णिमा को मेला लगता है, जिसमें बड़ी संख्या में देशी-विदेशी पर्यटक भी आते हैं। ऊँटों का व्यापार ही यहाँ का मुख्य आकर्षण है। मीलों दूर से ऊँट-व्यापारी अपने पशुओं के साथ पुष्कर आते हैं। पच्चीस हजार से भी अधिक ऊँटों का व्यापार यहाँ पर होता है। यह संभवत: संसार भर में ऊँटों का सबसे बड़ा मेला है।

पाठ के आस-पास

1. पर्यटन की दृष्टि से राजस्थान की तरह असम भी एक महत्वपूर्ण राज्य है। असम के मुख्य पर्यटन स्थलों के बारे में जानकारी हासिल करो और उनकी एक तालिका बनाओ।
2. अगर तुम्हें गुवाहाटी से जयपुर की यात्रा रेलगाड़ी से करनी हो तो कौन-कौन-सी ट्रेनों से जा सकते हो, पता लगाओ और एक सूची बनाओ।
3. भारत के मानचित्र में राजस्थान कहाँ है, देखो और उसकी चारों सीमाओं से लगे राज्यों/देशों के नाम लिखो।
4. क्या तुम कभी कहीं घूमने गए हो ? अगर हाँ तो उस यात्रा के बारे में तुम्हें जो कुछ याद है, कक्षा में सुनाओ।

भाषा-अध्ययन

1. समानार्थक शब्द :

आँख
चक्षु
नेत्र
नयन

फूल
पुष्प
कुसुम
सुमन

ऊपर के चित्रों को देखो। प्रत्येक चित्र के साथ दिए गए चारों शब्दों के अर्थ में कोई अंतर नहीं है। ऐसे समान अर्थ वाले शब्दों को **समानार्थी** शब्द अथवा **पर्यायवाची** शब्द कहते हैं।

आओ, कुछ और समानार्थी शब्द जानें :

Copyright - SCERT, Assam
not to be republished

1.	सूर्य	=	आदित्य, रवि, सूरज	4.	रात	=	रजनी, रात्रि, निशा
2.	हाथ	=	हस्त, कर, पाणि	5.	पानी	=	जल, नीर, अंबु
3.	आग	=	अग्नि, ज्वाला, अनल	6.	चंद्र	=	चाँद, शशि, मयंक

अब तुम नीचे दिए गए शब्दों के दो-दो समानार्थी शब्द लिखो :

सागर = ... पुस्तक = ...

पेड़ = ... पक्षी = ...

2. विपरीतार्थक शब्द :

नीचे के वाक्यों को ध्यान से देखो :

1. **लिखित** परीक्षा के बाद **मौखिक** परीक्षा होगी।
2. **डरपोक** मत बनो, **निडर** बनो।
3. प्रश्न **सरल** था या **कठिन**?

ऊपर के प्रत्येक वाक्य में मोटे अक्षरों में छपे शब्द एक-दूसरे के उलटा अथवा विपरीत अर्थ दे रहे हैं। ऐसे शब्दों को **विपरीतार्थक** शब्द अथवा **विलोम** शब्द कहते हैं।

अब तुम कम से कम बीस शब्द संकलित करो और उनके विपरीतार्थक शब्द लिखो।

3. (क) को चिह्न का प्रयोग :

मैंने हरि को बुलाया। पिताजी ने मुझको एक कलम दी।

माँ ने बच्चे को सुलाया। मोहन ने रमेश को मिठाई दी।

वाक्य में जिस पर क्रिया के कार्य का फल पड़ता है तथा जिसे कुछ देने अथवा जिसके लिए कुछ करने का भाव प्रकट होता है, उसके साथ को चिह्न का प्रयोग किया जाता है। अब ऐसे पाँच वाक्य और लिखो जिनमें **को** चिह्न का प्रयोग किया गया हो और शिक्षक को दिखाओ।

(ख) से चिह्न का प्रयोग :

मैं कलम से लिखता हूँ। पेड़ से पत्ता गिरा।

किसान बैल से खेत जोतता है। मेरे पिताजी दिल्ली से आए है।

वाक्य में कर्ता जिस साधन के द्वारा क्रिया को संपन्न करता है, उसके साथ से चिह्न का प्रयोग होता है। इसके अलावा जब किसी का अन्य किसी से अलगाव प्रकट हो, तब भी से चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

अब तुम ऐसे पाँच वाक्य और लिखो जिनमें **से** चिह्न का प्रयोग हो और शिक्षक/शिक्षिका को दिखाओ।

Copyright © NCERT not to be republished

आओ, एक खेल खेलते हैं: *कक्षा के सभी विद्यार्थी दो समूहों में बँट जाओ। अब पहले समूह का एक विद्यार्थी कोई ऐसा एक वाक्य बोलो जिसमें 'को' चिह्न का प्रयोग हो। उसके बाद दूसरे समूह का एक विद्यार्थी उसी तरह एक ऐसा वाक्य बोलो जिसमें 'से' चिह्न का प्रयोग हो। खेल बिना रुके चलते रहना चाहिए। जो समूह सही वाक्य बनाता जाएगा, उसकी जीत और जो सही वाक्य नहीं बना सकेगा उसकी हार मानी जाएगी। है न मजेदार!!!*

4. सकारात्मक, नकारात्मक और प्रश्नबोधक वाक्य :

जिस वाक्य से किसी बात के होने का बोध हो उसे **सकारात्मक वाक्य** कहते हैं।

जैसे– हमने खाना खा लिया। वह चला गया।

जिस वाक्य से किसी बात के न होने का बोध हो उसे **नकारात्मक वाक्य** कहते हैं।

जैसे– हमने खाना नहीं खाया। वह नहीं गया।

जिस वाक्य से किसी प्रकार के प्रश्न किए जाने का बोध हो उसे **प्रश्नबोधक वाक्य** कहते हैं। ऐसे वाक्यों के अंत में पूर्ण विराम की जगह इस चिह्न (?) का प्रयोग किया जाता है। जैसे– क्या तुमने खाना खा लिया? क्या वह चला गया?

आओ, निम्नलिखित वाक्यों को पहचानें और उनका प्रकार बताएँ :

1. किताब की कीमत क्या है? प्रश्नबोधक वाक्य .
2. मैंने रेगिस्तान नहीं देखा है। ....
3. हम राजस्थान घूमने गए थे। ....
4. दीपा नाचना नहीं जानती। ....
5. बच्चा कैसे गिर गया? ....
6. इस जंगल में जानवर नहीं है। ....
7. मैंने ताजमहल देखा है। ....

आओ, पाठ में आए कुछ शब्दों के अर्थ जानें :

शब्द		अर्थ
व्यक्त	=	प्रकट करना
सुनियोजित	=	सुंदर ढंग से सजाया हुआ
उपयोग	=	व्यवहार
वेनिस	=	इटली देश का एक प्रसिद्ध शहर

शब्द		अर्थ
हिल स्टेशन	=	पहाड़ी स्वास्थ्यवर्धक स्थान
खूबसूरती	=	सुंदरता
मरुस्थल	=	रेगिस्तान
कठपुतली	=	लकड़ी के बने छोटे-छोटे पुतले

Copyright SCERT Assam not to be republished

जीना-जिलाना मत भूलना

पाठ-5

सवेरे उगकर सूरज कहता
रोशनी फैलाना मत भूलना,
चमक-चमक कर चाँद कहता
चाँदनी बिखेरना मत भूलना।

हरियाली फैलाकर पेड़ कहते
छाँव देना मत भूलना,
चहक-चहक कर पक्षी कहते
मीठे गाना मत भूलना।

खिल-खिल कर फूल कहते
प्यार बाँटना मत भूलना,
हिल-मिल कर भौंरे कहते
गले लगाना मत भूलना।

बढ़ती-बढ़ती नदियाँ कहतीं
बढ़ते रहना मत भूलना,
बहती-बहती हवाएँ कहतीं
जिंदगी देना मत भूलना।

कहती प्रकृति, आए विपत्ति
हँसना-हँसाना मत भूलना,
चलें गोलियाँ, फटें गोले
जीना-जिलाना मत भूलना।

– *डॉ. अच्युत शर्मा*

आओ, जानें:

'जीना-जिलाना मत भूलना' नामक इस कविता के जरिए कवि ने यही कहना चाहा है कि प्रकृति के विविध उपकरण हम मनुष्यों को अपने कर्तव्य की याद दिलाते हैं। सूर्य हमें ज्ञान और आशा की रोशनी फैलाने के लिए कहता है, तो चाँद सेवा और परोपकार की चाँदनी बिखराने की बात करता है। हरे-भरे पेड़ हमें दूसरों को आराम की छाया प्रदान करने का संदेश देते हैं, तो चिड़ियाँ मीठी-मीठी बातें करने का उपदेश देती हैं। फूल हमें आपस में प्यार बाँटने की बात बताते हैं, तो भौंरे सबको गले लगाने को कहते हैं। बढ़ती हुई नदियाँ हमें जीवन में निरंतर आगे बढ़ने को कहती हैं, तो बहती हुई हवाएँ दूसरों को जीवन देने की बात करती हैं। प्रकृति हमें यही संदेश देती है कि जीवन में भले ही आपदाएँ आएँ, हम स्वयं हँसना और दूसरों को हँसाना न भूलें। प्रकृति हमसे कहती है कि जीवन में कैसा भी संकट आए, हम स्वयं भी जीएँ और दूसरों को भी जीने में मदद पहुँचाएँ।

अभ्यास-माला

पाठ से

1. आओ, 'जीना-जिलाना मत भूलना' शीर्षक कविता का हाव-भाव के साथ वाचन करें।

2. पूर्ण वाक्य में उत्तर दो :

(क) तरह-तरह के पक्षी हमसे क्या कहते हैं ?

(ख) रंग-बिरंगे फूल हमें क्या बताते हैं ?

(ग) हमारे लिए भौंरों का संदेश क्या है ?

(घ) बढ़ती हुई नदियाँ हमें कौन-सा उपदेश देती हैं ?

(ङ) 'जीना-जिलाना मत भूलना' नामक कविता के कवि कौन हैं ?

3. सोचो और संक्षेप में उत्तर दो :

(क) सवेरे पूर्व दिशा में उदित होकर सूर्य हमें क्या करने के लिए कहता है ?

(ख) रात को आकाश में चमक-चमक कर चाँद हमें किस कर्तव्य की याद दिलाता है ?

(ग) हरे-भरे पेड़-पौधे हमें क्या संदेश देते हैं ?

(घ) बहती हुई हवाएँ हमें क्या करने को कहती हैं ?

4. निम्नलिखित पंक्तियों का सरल अर्थ लिखो :

कहती प्रकृति आए विपत्ति
हँसना-हँसाना मत भूलना,
चलें गोलियाँ, फटें गोले
जीना-जिलाना मत भूलना।

Copyright SCERT, Assam
not to be republished

5. **'जीना-जिलाना मत भूलना' कविता का मूल भाव स्पष्ट करो।**

पाठ के आस-पास

1. 'प्रकृति एक खुली पुस्तक है' विषय पर कक्षा में चर्चा करो।
2. तुम्हारे आस-पास प्रकृति के जो भी उपकरण हैं, उन सबके नाम लिखो और उनको प्राणी तथा अप्राणी के हिसाब से दो वर्गों में बाँटो।
3. तितली और जुगनूँ हमें किन कर्तव्यों की याद दिलाते हैं, उसे वर्णित करते हुए एक कविता लिखो।
4. तुमने प्राकृतिक और मानव द्वारा सर्जित आपदाएँ जरूर देखी होंगी। ऐसी किसी आपदा के समय तुम्हें प्राप्त हुए अनुभवों को लिख डालो।
5. तुमलोग चार-पाँच के समूहों में बँट जाओ तथा 'जीओ और जिलाओ' विषय पर बारी-बारी से अपने विचार प्रकट करो।

भाषा-अध्ययन

1. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखो :

सवेरा सूरज चाँद पेड़ पक्षी फूल भौंरा नदी हवा

2. वाक्य में प्रयोग करो :

चमक-चमक कर, चहक-चहक कर, खिल-खिल कर, हिल-मिल कर

3. आओ, निम्नलिखित वाक्यों पर ध्यान दें :

<u>क - वर्ग</u>	<u>ख - वर्ग</u>
हमलोग <u>जीते</u> हैं।	हमलोग <u>जिलाते</u> हैं।
मोहन <u>पढ़ता</u> है।	मोहन <u>पढ़ाता</u> है।
वह <u>हँसती</u> है।	वह <u>हँसाती</u> है।
वह <u>रोता</u> है।	वह <u>रुलाता</u> है।

यहाँ क - वर्ग की रेखांकित क्रियाओं से स्वयं कुछ करने का बोध हो रहा है, जबकि ख - वर्ग की रेखांकित क्रियाओं से दूसरों को कुछ करने हेतु प्रेरित करने का भाव प्रकट हो रहा है। प्रेरणा देने का बोध कराने वाली ऐसी क्रियाओं को **प्रेरणार्थक क्रिया** कहते हैं। देखना, सीखना, लिखना, भागना, नाचना - इन क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूप हैं क्रमशः **दिखाना, सिखाना, लिखाना, भगाना** और **नचाना**। इनका प्रयोग करके एक-एक वाक्य बनाओ और शिक्षक/शिक्षिका को दिखाओ।

Copyright SCERT, Assam
not be republished

4. तुम लोगों ने 'जीना-जिलाना मत भूलना' कविता को पढ़ते समय स्थान-स्थान पर 'भूलना' क्रिया-रूप के प्रयोग पर जरूर ध्यान दिया होगा- 'रोशनी फैलाना मत भूलना', 'छाँव देना मत भूलना', 'हँसना-हँसाना मत भूलना' आदि। यहाँ परोक्ष रूप से अनुज्ञा (आज्ञा, अनुरोध आदि) का बोध हो रहा है। और कुछ वाक्य लेते हैं –

सदा सच **बोलना**। कभी झूठ मत **बोलना**।

सुबह व्यायाम **करना**। किसी को दु:ख मत **देना**।

यहाँ 'बोलना' 'करना' और 'देना' क्रियाओं से अनुज्ञा का भाव प्रकट हो रहा है। इन्हें **क्रिया का अनुज्ञा रूप** कहते हैं।

क्रिया के अनुज्ञा रूप और हैं। आओ, कुछ और वाक्य लेते हैं :

तू बाजार **जा**। तू खाना **खा**।

तुम बाजार **जाओ**। तुम खाना **खाओ**।

आप बाजार **जाइए**। आप खाना **खाइए**।

यहाँ **जा** – **जाओ** – **जाइए** और **खा** – **खाओ** – **खाइए** – इन क्रिया-रूपों के जरिए प्रत्यक्ष रूप से अनुज्ञा का भाव व्यक्त हो रहा है। अब तुमलोग ऐसे ही 'आना', 'गाना', 'पढ़ना', 'लिखना' और 'बैठना' क्रियाओं के अनुज्ञा रूप बनाकर वाक्यों में प्रयोग करो तथा अपने शिक्षक/शिक्षिका को दिखाओ।

5. आओ, निम्नांकित वाक्यों को ध्यान से पढ़ें और समझें :

सवेरे उगकर सूरज कहता है। खिल-खिल कर फूल कहते हैं। बढ़ती हुई नदियाँ कहती हैं।

इन वाक्यों के रेखांकित क्रिया-पदों से वर्तमान समय में नियमित रूप से किसी काम के होने का भाव प्रकट हो रहा है। और कुछ वाक्य लेते हैं :

लड़का स्कूल जाता है। लड़की स्कूल जाती है।

लड़का स्कूल जा रहा है। लड़की स्कूल जा रही है।

लड़का स्कूल जाता होगा। लड़की स्कूल जाती होगी।

उपरोक्त वाक्यों के रेखांकित क्रिया-पदों से वर्तमान समय में कुछ होने का बोध हो रहा है। अत: ये वर्तमान काल के क्रिया-पद हैं। वर्तमान काल क्रिया-व्यापार की निरंतरता को सूचित करता है। इसके तीन भेद हैं- सामान्य वर्तमान काल, तात्कालिक वर्तमान काल और संदिग्ध वर्तमान काल।

Copyright SCERT Assam
to be republished

पूर्वोक्त वाक्यों में '**जाता है**' और '**जाती है**' क्रिया-पदों से वर्तमान समय में नियमित रूप से कार्यों के घटित होने का बोध हो रहा है। अत: ये **सामान्य वर्तमान काल के क्रिया-पद** हैं। '**जा रहा है**' और '**जा रही है**' क्रिया-पदों से वर्तमान समय में क्रिया-व्यापारों के जारी रहने का भाव स्पष्ट है। ये **तात्कालिक वर्तमान काल के क्रिया-पद** हैं। '**जाता होगा**' और '**जाती होगी**' से वर्तमान समय में क्रिया-व्यापार के घटित होने में संदेह का भाव व्यक्त हो रहा है। अत: ये **संदिग्ध वर्तमान काल के क्रिया-पद** हैं।

अब तुम लोग वर्तमान काल के इन तीनों भेदों के तीन-तीन वाक्य बनाकर शिक्षक/शिक्षिका को दिखाओ।

योग्यता-विस्तार

1. हँसी का जीवन में बड़ा महत्व है। यह 'टॉनिक' का काम करती है। इसलिए आजकल जगह-जगह 'लाफिंग क्लब' खोले जा रहे हैं। अगर तुम्हारे इलाके में ऐसा 'क्लब' नहीं है, तो अपने मित्रों के सहयोग से इसे खोलने का प्रयास करो।
2. फ्लोरेंस नाइटिंगल और मदर टेरेसा विश्व की ऐसी दो महीयसी नारियाँ हैं, जिन्होंने घायल, दु:खी एवं पीड़ित जनों को जिलाया था अर्थात उन्हें जीने में बड़ी मदद पहुँचायी थीं। उन दोनों के बारे में जानकारी प्राप्त करो। आवश्यकता हो तो अपने शिक्षक/शिक्षिका की सहायता लो।

आओ, पाठ में आए कुछ शब्दों के अर्थ जानें :

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
जिलाना	= दूसरे को जीने की प्रेरणा देना, जीने में मदद पहुँचाना	विपत्ति	= आपदा, बाधा, परेशानी
		गोले	= बम आदि गोलाकार मारणास्त्र
उगकर	= उदित होकर	उपकरण	= उपादान
सूरज	= सूर्य	निरंतर	= लगातार, अविराम
रोशनी	= प्रकाश, उजियाला	संकट	= आपदा, विपत्ति
छाँव	= छाया	चलें गोलियाँ, फटें गोले	= मनुष्य द्वारा सर्जित आपदाओं का आना
बढ़ती-बढ़ती	= आगे बढ़ती हुई		
बहती-बहती	= बहती हुई		

Copyright SCERT Assam
not to be republished

पाठ-6 चाय : असम की एक पहचान

पक्की सड़क के बीच से होती हुई गाड़ी धीरे–धीरे आगे बढ़ रही थी। दोनों ओर के हरे–हरे पत्तों वाले पौधों को देखकर शबनम और रोहन खुशी से उछल पड़े, क्योंकि पहली बार उनलोगों को ऐसा दृश्य देखने को मिला था। दोनों को ऐसा लगा मानो हरियाली उनलोगों को सामने बुला रही है। गाड़ी धीरे–धीरे एक चौराहे पर रुक गई, जहाँ लोगों की भीड़ खड़ी थी।

शबनम पिताजी से बोल उठी– ''पिताजी, वहाँ क्यों भीड़ लगी हुई है ?''

शबनम के सवालों का जवाब देते हुए पिताजी बोले– ''वहाँ झुमुर नृत्य चल रहा है। इसलिए लोगों की भीड़ लगी हुई है।'' इसी बीच झुमुर का सुमधुर गाना उन लोगों को सुनाई पड़ा :

आसाम मरले हामराओ मरबो
कोनो भुल नाइरे
जीवने–मरणे आसाम
सोनार आसाम देश रे
....

गाना सुनकर उनलोगों को पता ही नहीं चला कि कब वे गाड़ी से उतर पड़े। दोनों झुमुर देखने लगे। इसी बीच पिताजी बोल उठे– ''चलो, उस दुकान में हम चाय पीते हैं।'' सभी दुकान में बैठ गए। चाय की चुस्की लेकर शबनम बोल पड़ी– ''वाह! पिताजी, यहाँ की चाय का स्वाद ही कुछ निराला है। आप पीकर देखिए न पिताजी!''

चाय के कप पर मुँह रखकर पिताजी बोलने लगे– ''हाँ, चाय तो बहुत अच्छी बनी है। इसकी खूशबू भी बढ़िया है। यह चाय हमारे असम की है। यह हमारे असम की एक पहचान है। आते समय सड़क के दोनों ओर तुमलोग जो हरे–हरे पत्तों वाले पौधे देखते हुए आए हो– यह वही चाय है, जो हमलोग पी रहे हैं। चलो, देर हो रही है।''

वे लोग फिर रवाना हुए। गाड़ी चल पड़ी। गाड़ी की गति धीरे–धीरे बढ़ने लगी। बातों–बातों में रोहन ने पिताजी से पूछा – ''पिताजी, इन हरे–हरे पत्तों से चाय कैसे बनती है ?''

‘‘हाँ, तुमने यह बहुत अच्छा सवाल पूछा है। सुनो, चाय के बगीचे से पहले हरे-हरे कोमल पत्ते तोड़े जाते हैं। यह काम चाय मजदूर लोग करते हैं।’’

इतने में शबनम खुशी से चिल्ला उठी- ‘‘अरे भैया, देखो तो, वे महिलाएँ एकसाथ चाय की कोमल पत्तियाँ तोड़ रही हैं। कितनी अच्छी लग रही हैं!’’

‘‘हाँ-हाँ, वे बहुत अच्छी लग रही हैं।’’ रोहन बोल पड़ा।

पिताजी दोनों की बातों को आगे बढ़ाते हुए कहने लगे- ‘‘साधारणतः चाय बगीचों में पत्ते तोड़ने का काम ज्यादातर महिलाएँ करती हैं। इसके बाद पत्तों को सी. टी. सी. मशीन पर दिया जाता है। इस तरह मशीन से कई प्रकार की चाय निकाली जाती हैं। यहाँ से कुछ ही दूरी पर जोरहाट के टोकलाई में विश्व का प्रथम और एशिया का सबसे बड़ा चाय का रिसर्च सेंटर ‘टोकलाई टी रिसर्च सेंटर’ अवस्थित है। मौका मिले तो हम कभी इसे देख लेंगे।’’

शबनम पिताजी की सारी बातें सुन रही थी। वह बोल पड़ी, ‘‘पिताजी, हमारे असम में चाय की शुरुआत कब और कैसे हुई, थोड़ा-सा बताइए न।’’

शबनम के आग्रहपूर्ण सवाल का उत्तर देते हुए पिताजी कहने लगे, ‘‘धान की खेती की भाँति चाय की खेती की शुरुआत भी सबसे पहले चीन में हुई। चीन के बाद भारत, श्रीलंका, जापान आदि विश्व के कई देशों में धीरे-धीरे इसकी शुरुआत होने लगी। ‘चाय’ शब्द चीन देश से आया है। वहाँ चाय को ‘चा’ बोला जाता है। अंग्रेजी में इसका प्रतिशब्द है ‘टी’। सिंगफौ जनजाति चाय को ‘फिनाप’ अथवा ‘फालाप’ नाम से जानते थे। आहोम लोग चाय को ‘नाम-फालाप’ शब्द से जानते थे। ‘नाम’ का मतलब है पानी और ‘फालाप’ का मतलब है चाय। इस प्रकार दोनों के मिलने पर अर्थ हुआ ‘चाय-पानी’। 1823 ई. में ‘ईस्ट इंडिया कंपनी’ के एजेंट मेजर ब्रुस साहब को सिंगफौ के राजा ने

© Copyright SCERT Assam not to be republished

चाय के दो पौधे भेंट किए थे। उसके बाद रॉबर्ट ब्रुस साहब ने असम में चाय की खोज की। इस काम में असम के प्रथम चाय कृषक मणिराम देवान ने भी उनकी मदद की थी। इस तरह रॉबर्ट ब्रुस साहब की खोज से ही असम में चाय की खेती का श्रीगणेश हुआ था।''

पिताजी कहते गए– ''1839 ई. में ईस्ट इंडिया कंपनी ने ही पहली बार असम में चाय की खेती की शुरुआत की। इसके बाद भारत के अन्य राज्यों में भी चाय की खेती की शुरुआत धीरे–धीरे होने लगी। असम का पहला चाय बगीचा है– **चाबुवा चाय बगीचा''।** इसी बीच रोहन फिर बोल उठा– ''पिताजी, ये वही मणिराम देवान हैं न, जिन्होंने स्वाधीनता संग्राम में अपना जीवन न्यौछावर किया था ?'' ''हाँ–हाँ, वे ही हैं। वे हमारे असम के प्रथम चाय कृषक ही नहीं, बल्कि देशप्रेमी भी थे। उन्होंने 1853 ई. में असम में दो चाय बगीचे स्थापित किए थे– पहला **चिनामारा चाय बगीचा** और दूसरा **चेलेंग चाय बगीचा**। इन दोनों बगीचों के कारण वे एक मशहूर चाय कृषक के रूप में जाने जाते हैं।''

इतने में ड्राइवर ने गाड़ी फिर रोक दी, क्योंकि दोनों को बहुत भूख लगी थी। इस समय दिन के 2 बज रहे थे। सबने भोजन किया। गाड़ी ने फिर गति ली।

पिताजी फिर बोलने लगे– ''हमारे असम में छोटे–बड़े कई चाय बगीचे हैं। 2001 ई. के आँकड़ों के अनुसार हमारे असम में लगभग ढाई हजार छोटे चाय बगीचे हैं। ज्यादातर चाय के बगीचे ऊपरी असम में स्थित हैं।''

पिताजी और कुछ कहना चाहते थे कि रोहन बीच में ही बोल उठा– ''पिताजी, लोग चाय क्यों पीते हैं ? क्या इसकी कोई उपयोगिता है ?'' ''हाँ, क्यों नहीं ?'' पिताजी ने उत्तर दिया– ''साधारणत: लोग शरीर एवं मन में ताजगी लाने के लिए चाय पीते हैं। इसके साथ–साथ और भी कई वजहें हैं, जिनके कारण लोग चाय पीते हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार चाय पीने से फेफड़ों के रोग, कैंसर, हैजा, टाइफाइड आदि रोग होने की संभावना कम होती है।''

पिताजी ने आगे कहा– ''भारतवर्ष के ज्यादातर लोग चाय पीते हैं और विश्व में भी इसकी बहुत माँग है। जिन देशों के पास चाय नहीं है, वे अन्य देशों से इसका आयात करते हैं। विश्व में सबसे ज्यादा चाय असम में ही होती है, क्योंकि यहाँ की मिट्टी चाय खेती के लिए बहुत उपयोगी है। असम की चाय की विश्व बाजार में एक अलग पहचान है। कहा जाता है कि चाय के कारण ही अंग्रेजों ने असम में पहली बार 1885 ई. में रेलगाड़ी चलाने की व्यवस्था की थी। इस तरह देखा जाता है कि हमारा असम चाय के लिए ही आज विश्व में प्रसिद्ध है।''

ऐसे ही गपशप करते–करते वे लोग शिवसागर पहुँच गए।''

© SCERT, Assam not be republished

आओ, जान लें :

साधारणतः झुमुर असम के चाय बगीचों के लोगों का एक सामूहिक नृत्य है। इस नृत्य के जरिए वे लोग विभिन्न अवसरों पर सामूहिक रूप से खुशियाँ मनाते हैं। यह उनलोगों की संस्कृति का एक अभिन्न अंग है।

अभ्यास-माला

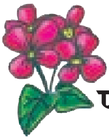

पाठ से

मणिराम देवान

1. पूर्ण वाक्य में जवाब दो :

(क) चाय की खेती की शुरुआत सबसे पहले कहाँ हुई थी ?

(ख) सिंगफौ लोग चाय को किस नाम से जानते थे ?

(ग) असम में चाय की खोज सबसे पहले किसने की ?

(घ) असम के प्रथम चाय कृषक कौन थे ?

2. रेखा खींचकर मिलाओ :

(क) उछल पड़ना	आरंभ करना
(ख) श्रीगणेश करना	कूद पड़ना
(ग) हाथ बँटाना	मग्न हो जाना
(घ) खो जाना	मदद करना

दृष्टिहीन लड़का

3. संक्षेप में उत्तर दो :

(क) हरी-हरी पत्तियों से चाय कैसे बनती है ?

(ख) लोग चाय क्यों पीते हैं ?

(ग) पीने के लिए चाय कैसे तैयार की जाती है ?

(घ) भारतवर्ष के किन-किन राज्यों में चाय के बगीचे हैं ?

पाठ के आस-पास

1. चाय बगीचे के लोगों में कौन-कौन सी जातियाँ एवं जनजातियाँ हैं ? उनकी भाषाएँ क्या-क्या हैं ? इस पर सामूहिक रूप से कक्षा में चर्चा करो।
2. झुमुर नृत्य के साथ गाए जाने वाले कई गीत हैं। उनमें से पाँच गीतों का संग्रह करके मिलकर गाओ।
3. लंदन ओलंपिक में असम की चाय को मिलने वाले महत्व पर आपस में चर्चा करो।

Copyright - SCERT, Assam
not to be republished

योग्यता-विस्तार

1. (क) 'चाय असम की एक पहचान है' विषय पर एक लेख प्रस्तुत करो।

(ख) असम से चाय का निर्यात किया जाता है। इसके अलावा असम से और कई चीजों का निर्यात किया जाता है। उनमें से किन्हीं तीन चीजों के नाम का उल्लेख करते हुए उनके बारे में संक्षेप में लिखो।

(ग) झुमुर के अलावा चाय बगीचों में और क्या-क्या त्योहार मनाए जाते हैं, बताओ।

2. **सोचकर लिखो :**

(अ) अगर धूप न हो तो क्या होगा?

....

(आ) अगर हवा न हो तो क्या होगा?

....

(इ) अगर पानी न हो तो क्या होगा?

....

(ई) अगर पेड़-पौधे न हो तो क्या होगा?

....

3. **टिप्पणियाँ लिखो :**

(क) झुमुर (ख) बिहु (ग) बागरुम्बा

4. **निम्नलिखित अवतरण को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों का उत्तर दो :**

भारत सरकार द्वारा मोर को राष्ट्रीय पक्षी की मान्यता प्रदान किया जाना भारतीय संस्कृति एवं परंपरा के अनुकूल ही है। रंग-बिरंगी यह पक्षी हमारे राष्ट्रीय जीवन की विविधता के सर्वथा उपयुक्त भी है। इस पक्षी की देखभाल, पालन-पोषण तथा इसकी नस्ल को कायम रखना प्रत्येक भारतीय नागरिक का कर्तव्य है। यदि कोई व्यक्ति इस पक्षी के प्रति निर्दयता का व्यवहार करता दिखाई दे तो हर भारतीय का यह धर्म है कि वह उसे ऐसा करने से रोके। राष्ट्रीय पक्षी होने के नाते इस पक्षी को अधिक सम्मान एवं आदर प्रदान करना चाहिए और हर प्रकार से इसकी सुरक्षा का प्रयत्न करना चाहिए। अब यह करोड़ों भारतीय आकांक्षाओं, भावनाओं एवं सदिच्छाओं का प्रतीक बन गया है।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का एक उचित शीर्षक दो।

Copyright - SCERT, Assam not be republished

(ख) हमारा राष्ट्रीय पक्षी क्या है ?

(ग) राष्ट्रीय पक्षी के प्रति भारतीय नागरिक का क्या कर्तव्य है ?

(घ) हर भारतीय का क्या धर्म है ?

भाषा-अध्ययन

1. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखो :

(क) जो खेत में काम करता है –

(ख) चार राहों का संगम स्थल –

(ग) जिसे देखा न जा सके –

(घ) जिसे पीया जा सके –

2. आओ, जानें :

जिस शब्द से किसी जाति, व्यक्ति, स्थान, वस्तु और गुण आदि के नाम का बोध होता है उसे **संज्ञा** कहते हैं।

इसके मूलत: तीन भेद हैं। जैसे– व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा और भाववाचक संज्ञा।

(क) व्यक्तिवाचक संज्ञा : जिस संज्ञा शब्द से किसी विशेष व्यक्ति, स्थान अथवा प्राणी का बोध होता है उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे–

(1) डॉ. राजेंद्र प्रसाद जी भारत के प्रथम राष्ट्रपति थे।

(2) तेजपुर प्रसिद्ध शहर है।

ऊपर के वाक्यों में रेखांकित शब्द किसी व्यक्ति, स्थान आदि के नाम का बोध कराते हैं। अत: ये व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्द हैं। तुम अपनी ओर से व्यक्तिवाचक संज्ञा के और दो उदाहरण लिखो।

(ख) जातिवाचक संज्ञा : जिस संज्ञा शब्द से किसी प्राणी अथवा वस्तु की जाति का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे–

(1) गाय घास खाती है।

(2) घोड़ा तेज दौड़ सकता है।

(3) सोना कीमती धातु है।

ऊपर के वाक्यों में रेखांकित शब्द किसी प्राणी अथवा वस्तु की जाति का बोध कराते हैं। अत: ये जातिवाचक संज्ञा शब्द हैं। अब तुम जातिवाचक संज्ञा के और दो उदाहरण लिखो।

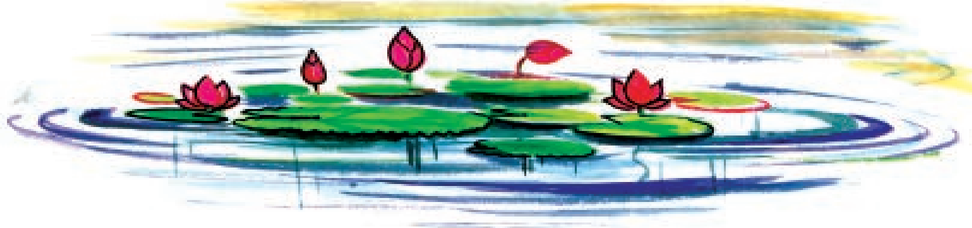

Copyright SCERT Assam not to be republished

(ग) भाववाचक संज्ञा : जिस सज्ञा शब्द से भाव, गुण, दशा अथवा कार्य का बोध होता है, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे-

(1) चोरी करना पाप है।
(2) फूलों में खुशबू होती है।
(3) तैरना अच्छा व्यायाम है।

ऊपर के वाक्यों में रेखांकित संज्ञा शब्द भाव, गुण, दशा अथवा कार्य आदि का बोध कराते हैं। अत: ये भाववाचक संज्ञा शब्द हैं। अब तुम भाववाचक संज्ञा के दो उदाहरण प्रस्तुत करो।

परियोजना

1. असम के किन्हीं दस चाय बगीचे चुन लो और ये किन जिलों में स्थित हैं- इस पर एक ब्योरा प्रस्तुत करो।

2. चाय बगीचे के आधार पर निर्मित किसी एक असमीया फिल्म को ध्यान में रखकर नीचे दिए गए तथ्यों की जानकारी प्रस्तुत करो :

(क) फिल्म का नाम ....
(ख) संगीतकार का नाम ....
(ग) निर्देशक का नाम ....
(घ) कहानीकार का नाम ....

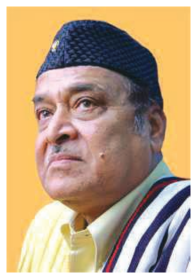

आओ, पाठ में आए कुछ शब्दों के अर्थ जानें :

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
निराला	=	अलग, जो दूसरे से भिन्न हो	संग्राम	=	युद्ध, लड़ाई
पहचान	=	परिचय	मशहूर	=	विख्यात
चौराहा	=	चार राहों का समूह	ताजगी	=	नयापन, ताजा
रवाना होना	=	चल देना	वजह	=	कारण
शुरुआत	=	आरंभ	आयात करना	=	दूसरे देश से किसी चीज का लाया जाना
कई	=	अनेक, बहुत	लगभग	=	प्राय:
मदद	=	सहायता	आँकड़ा	=	तथ्य
श्रीगणेश होना	=	आरंभ होना			

Copyright - SCERT, Assam
not to be republished

पाठ–7

हार की जीत

'हार की जीत' हृदय-परिवर्तन की कहानी है। बाबा भारती के अद्‌भुत एवं तीव्र चाल तथा मनोहारी रूप वाले 'सुलतान' नाम के घोड़े पर डाकू खड़गसिंह का मन आ जाता है और युक्तिपूर्वक वह घोड़े को ले भागता है। किंतु खड़गसिंह का डाकू मन बाबा भारती के एक संत वाक्य से विह्वल हो उठता है और उसका हृदय पूर्णत: परिवर्तित हो जाता है। वह बाबा भारती को घोड़ा वापस लौटा देता है। इस प्रकार बाबा भारती की हार, जीत में बदल जाती है।

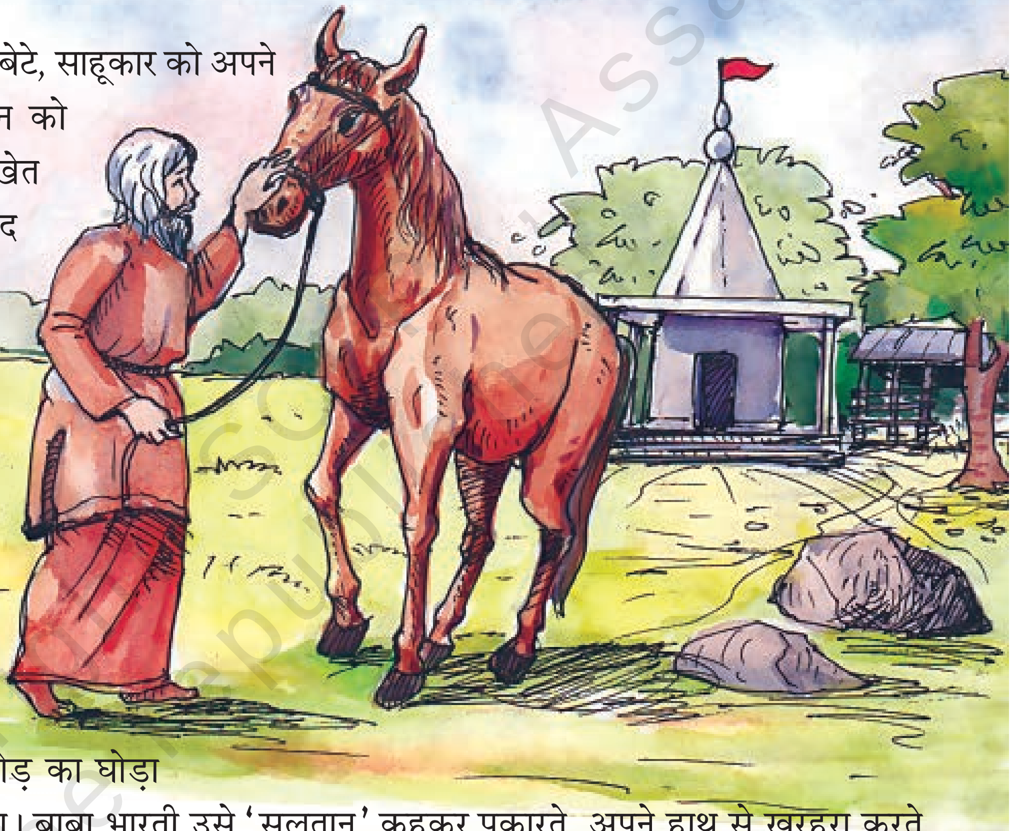

माँ को अपने बेटे, साहूकार को अपने देनदार और किसान को अपने लहलहाते खेत देखकर जो आनंद आता है, वही आनंद बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर आता था। भगवद्‌भजन से जो समय बचता, वह घोड़े को अर्पण हो जाता। वह घोड़ा बड़ा सुंदर था, बड़ा बलवान। उसके जोड़ का घोड़ा सारे इलाके में न था। बाबा भारती उसे 'सुलतान' कहकर पुकारते, अपने हाथ से खरहरा करते, खुद दाना खिलाते और देख-देखकर प्रसन्न होते थे। उन्होंने रुपया, माल, असबाब, ज़मीन आदि अपना सबकुछ छोड़ दिया था, यहाँ तक कि उन्हें नगर के जीवन से भी घृणा थी। अब गाँव से बाहर एक छोटे-से मंदिर में रहते और भगवान का भजन करते थे। "मैं सुलतान के बिना नहीं रह सकूँगा।"- उन्हें ऐसी भ्रांति-सी हो गई थी। वे उसकी चाल पर लट्टू थे। कहते, "ऐसा चलता है, जैसे मोर घटा को देखकर नाच रहा हो।" जब तक संध्या समय सुलतान पर चढ़कर आठ-दस मील का चक्कर न लगा लेते, उन्हें चैन न आता।

खड़गसिंह उस इलाके का प्रसिद्ध डाकू था। लोग उसका नाम सुनकर काँपते थे। होते-होते सुलतान की कीर्ति उसके कानों तक भी पहुँची। उसका हृदय उसे देखने के लिए अधीर हो उठा। वह एक दिन दोपहर के समय बाबा भारती के पास पहुँचा और नमस्कार करके बैठ गया।

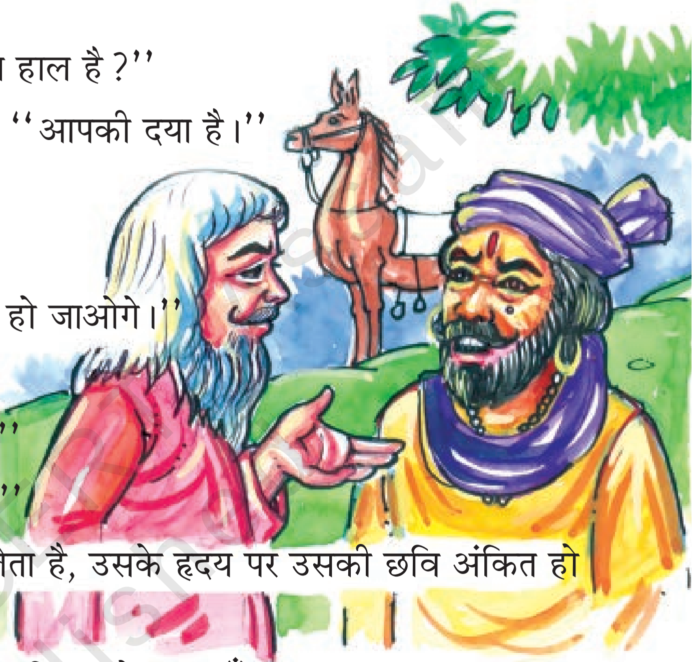

बाबा भारती ने पूछा, "खड़गसिंह, क्या हाल है?"

खड़गसिंह ने सिर झुकाकर उत्तर दिया, "आपकी दया है।"

"कहो, इधर कैसे आ गए?"

"सुलतान की चाह खींच लाई।"

"विचित्र जानवर है। देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगे।"

"मैंने भी बड़ी प्रशंसा सुनी है।"

"उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी।"

"कहते हैं, देखने में भी बड़ा सुंदर है।"

"क्या कहना, जो उसे एक बार देख लेता है, उसके हृदय पर उसकी छवि अंकित हो जाती है।"

"बहुत दिनों से अभिलाषा थी, आज उपस्थित हो सका हूँ।"

बाबा भारती और खड़गसिंह अस्तबल में पहुँचे। बाबा ने घोड़ा दिखाया घमंड से, खड़गसिंह ने घोड़ा देखा आश्चर्य से। उसने सहस्रों घोड़े देखे थे, परंतु ऐसा बाँका घोड़ा उसकी आँखों से कभी न गुजरा था। सोचने लगा, भाग्य की बात है। ऐसा घोड़ा खड़गसिंह के पास होना चाहिए था। इस साधु को ऐसी चीजों से क्या लाभ! कुछ देर तक आश्चर्य से चुपचाप खड़ा रहा। इसके पश्चात उसके हृदय में हलचल होने लगी। बालकों की-सी अधीरता से बोला, "परंतु बाबाजी, इसकी चाल न देखी तो क्या!"

बाबाजी भी मनुष्य ही थे। अपनी वस्तु की प्रशंसा दूसरे के मुख से सुनने के लिए उनका हृदय भी अधीर हो गया। घोड़े को खोलकर बाहर लाए। घोड़ा वायु-वेग से उड़ने लगा। उसकी चाल देखकर खड़गसिंह के हृदय पर साँप लोट गया। वह डाकू था और जो वस्तु उसे पसंद आ जाए, उस पर वह अपना अधिकार समझता था। उसके पास बाहुबल था और आदमी थे। जाते-जाते उसने कहा, "बाबाजी, मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।"

बाबा भारती डर गए। अब उन्हें रात को नींद न आती। सारी रात अस्तबल की रखवाली में कटने लगी। प्रतिक्षण खड़गसिंह का भय लगा रहता, परंतु कई मास बीत गए और वह न आया। यहाँ तक कि बाबा भारती कुछ लापरवाह हो गए और इस भय को स्वप्न के भय की नाईं मिथ्या समझने लगे।

संध्या का समय था। बाबा भारती सुलतान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे। इस समय उनकी आँखों में चमक थी, मुख पर प्रसन्नता। कभी घोड़े के शरीर को देखते और कभी उसके रंग को और मन में फूले न समाते थे।

सहसा एक ओर से आवाज आई, ''ओ बाबा, इस कंगले की भी सुनते जाना।''

आवाज में करुणा थी। बाबा ने घोड़े को रोक लिया। देखा, एक अपाहिज वृक्ष की छाया में पड़ा कराह रहा है। बोले, ''क्यों, तुम्हें क्या कष्ट है ?''

अपाहिज ने हाथ जोड़कर कहा, ''बाबा, मैं दुखिया हूँ। मुझ पर दया करो। रामाँवाला यहाँ से तीन मील है, मुझे वहाँ जाना है। घोड़े पर चढ़ा लो, परमात्मा भला करेगा।''

''वहाँ तुम्हारा कौन है ?''

''दुर्गादत्त वैद्य का नाम आपने सुना होगा। मैं उनका सौतेला भाई हूँ।''

बाबा भारती ने घोड़े से उतरकर अपाहिज को घोड़े पर सवार किया और स्वयं उसकी लगाम पकड़कर धीरे-धीरे चलने लगे।

सहसा उन्हें एक झटका-सा लगा और लगाम हाथ से छूट गई। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उन्होंने देखा कि अपाहिज घोड़े की पीठ पर तन कर बैठा है और घोड़े को दौड़ाए लिए जा रहा है। उनके मुख से भय, विस्मय और निराशा से मिली हुई चीख निकल गई। वह अपाहिज डाकू खड़गसिंह था।

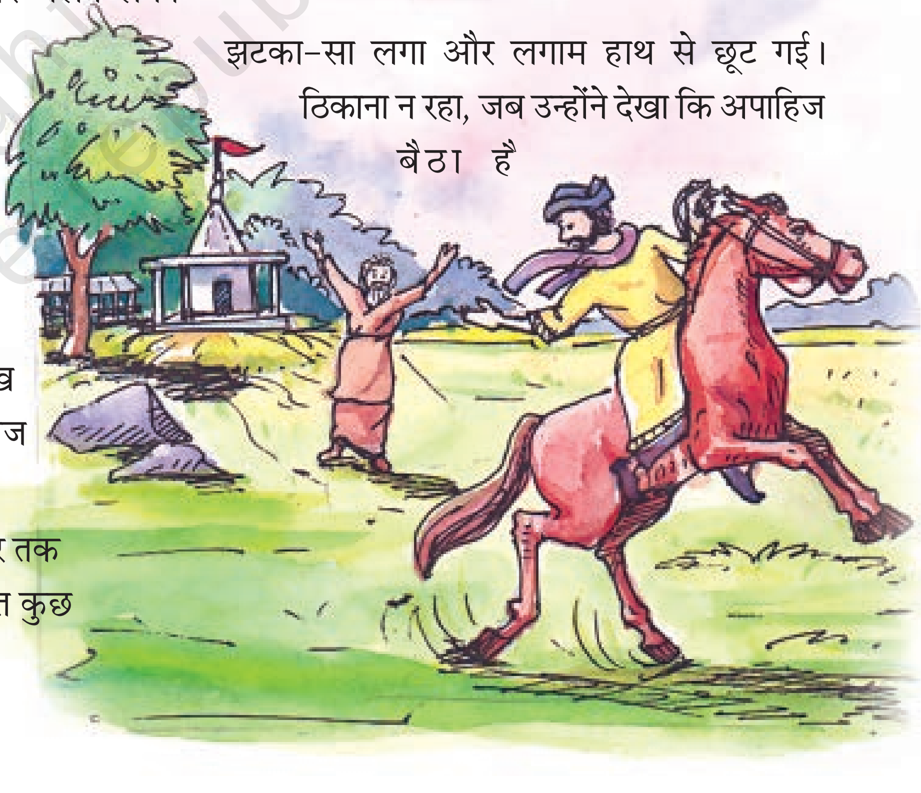

बाबा भारती कुछ देर तक चुप रहे और इसके पश्चात कुछ

Copyright SCERT, Assam
not to be republished

निश्चय करके पूरे बल से चिल्लाकर बोले, "जरा ठहर जाओ!"

खड़गसिंह ने यह आवाज सुनकर घोड़ा रोक लिया और उसकी गर्दन पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा, "बाबाजी, यह घोड़ा अब न दूँगा।"

"परंतु एक बात सुनते जाओ।"

खड़गसिंह ठहर गया। बाबा भारती ने निकट जाकर उसकी ओर ऐसी आँखों से देखा, जैसे बकरा कसाई की ओर देखता है और कहा, "यह घोड़ा तुम्हारा हो चुका है। मैं तुमसे इसे वापस करने के लिए न कहूँगा।" परंतु खड़गसिंह, केवल एक प्रार्थना करता हूँ। उसे अस्वीकार न करना, नहीं तो मेरा दिल टूट जाएगा।"

"बाबाजी, आज्ञा कीजिए। मैं आपका दास हूँ, केवल यह घोड़ा न दूँगा।"

"अब घोड़े का नाम न लो। मैं तुमसे इसके विषय में कुछ न कहूँगा। मेरी प्रार्थना केवल यह है कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।"

खड़गसिंह का मुँह आश्चर्य से खुला रह गया। उसका विचार था कि उसे घोड़े को लेकर यहाँ से भागना पड़ेगा, परंतु बाबा भारती ने स्वयं उससे कहा कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना। इससे क्या प्रयोजन सिद्ध हो सकता है? खड़गसिंह ने बहुत सोचा, बहुत सिर मारा, परंतु कुछ समझ न सका। हारकर उसने अपनी आँखें बाबा भारती के मुख पर गड़ा दीं और पूछा, "बाबाजी इसमें आपको क्या डर है?"

सुनकर बाबा भारती ने उत्तर दिया, "लोगों को यदि इस घटना का पता लग गया तो वे किसी दीन-दुखी पर विश्वास न करेंगे।" यह कहते-कहते उन्होंने सुलतान की ओर से इस तरह मुँह मोड़ लिया, जैसे उनका उससे कभी कोई संबंध ही नहीं रहा हो।

बाबा भारती चले गए। परंतु उनके शब्द खड़गसिंह के कानों में उसी प्रकार गूँज रहे थे। सोचता था, कैसे ऊँचे विचार हैं, कैसा पवित्र भाव है। उन्हें इस घोड़े से प्रेम था, इसे देखकर उनका मुख फूल की नाई खिल जाता था। कहते थे, "इसके बिना मैं रह न सकूँगा।" इसकी रखवाली में वे कई रातें सोए नहीं। भजन-भक्ति न कर रखवाली करते रहे। परंतु आज उनके मुख पर दुःख की रेखा तक न दिखाई पड़ती थी। उन्हें केवल यह ख्याल था कि कहीं लोग दीन-दुखियों पर विश्वास करना न छोड़ दें। ऐसा मनुष्य, मनुष्य नहीं, देवता है।

रात्रि के अंधकार में खड़गसिंह बाबा भारती के मंदिर में पहुँचा। चारों ओर सन्नाटा था। आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे। थोड़ी दूर पर गाँवों के कुत्ते भौंक रहे थे। मंदिर के अंदर कोई शब्द सुनाई न देता था। खड़गसिंह सुलतान की बाग पकड़े हुए था। वह धीरे-धीरे अस्तबल

Copyright SCERT, Assam
not to be republished

के फाटक पर पहुँचा। फाटक खुला पड़ा था। किसी समय वहाँ बाबा भारती स्वयं लाठी लेकर पहरा देते थे, परंतु आज उन्हें किसी चोरी, किसी डाके का भय न था। खड़गसिंह ने आगे बढ़कर सुलतान को उसके स्थान पर बाँध दिया और बाहर निकल कर सावधानी से फाटक बंद कर दिया। इस समय उसकी आँखों में नेकी के आँसू थे।

रात्रि का तीसरा पहर बीत चुका था। चौथा पहर आरंभ होते ही बाबा भारती ने अपनी कुटिया से बाहर निकल ठंडे जल से स्नान किया। उसके पश्चात इस प्रकार जैसे कोई स्वप्न में चल रहा हो, उनके पाँव अस्तबल की ओर बढ़े। परंतु फाटक पर पहुँचकर उन्हें अपनी भूल प्रतीत हुई। साथ ही घोर निराशा ने पाँवों को मन-मन भर का भारी बना दिया। वे वहीं रुक गए।

घोड़े ने अपने स्वामी के पाँवों की चाप को पहचान लिया और जोर से हिनहिनाया।

अब बाबा भारती आश्चर्य और प्रसन्नता से दौड़ते हुए अंदर घुसे और अपने प्यारे घोड़े के गले से लिपटकर इस प्रकार रोने लगे, मानो कोई पिता बहुत दिन से बिछड़े हुए पुत्र से मिल रहा हो। बार-बार उसकी पीठ पर हाथ फेरते, बार-बार उसके मुँह पर थपकियाँ देते।

फिर वे संतोष से बोले, "अब कोई दीन-दुखियों की सहायता से मुँह न मोड़ेगा।"

– ***सुदर्शन***

आओ, जानें : *सुदर्शन जी हिंदी के श्रेष्ठ कथाकार हैं। इनका असली नाम पंडित बद्रीनाथ भट्ट है। इनका जन्म 1896 ई. में स्यालकोट (वर्तमान पाकिस्तान के अंतर्गत) में हुआ था। आपको बचपन से ही कहानी लिखने का शौक था। हिंदी में आपने सैकड़ों कहानियाँ लिखी हैं। 'सुदर्शन-सुमन', 'सुदर्शन सुधा', 'तीर्थ यात्रा', 'सुप्रभात' आदि उनके प्रसिद्ध कहानी-संग्रह हैं। 1967 ई. में आपका स्वर्गवास हुआ।*

अभ्यास-माला

पाठ से

1. प्रश्नों के दिए गए उत्तरों में से सही उत्तर चुनो :

(क) बाबा भारती ने अपने प्रिय घोड़े का नाम क्या रखा था?

(i) राजा (ii) सुलतान

(iii) बाबू (iv) बहादुर

(ख) "मैं सुलतान के बिना न रह सकूँगा।" यह कथन है-

(i) खड़गसिंह का (ii) बाबा भारती का

(iii) सुदर्शनजी का (iv) एक किसान का

Copyright-SCERT, Assam not to be republished

(ग) 'जो उसे एक बार देख लेता है, उसके हृदय पर उसकी छवि अंकित हो जाती है।'– इस वाक्य में 'उसे' से किसका बोध होता है?

(i) सुलतान का (ii) खड़्गसिंह का

(iii) बाबा भारती का (iv) गाँव का

2. **एक वाक्य में उत्तर दो :**

(क) बाबा भारती को क्या देखकर आनंद आता था?

(ख) खड़्गसिंह कौन था?

(ग) खड़्गसिंह बाबा भारती के पास क्यों आया था?

(घ) बाबा भारती के मन में किस बात का डर समा गया?

(ङ) वह अपाहिज व्यक्ति कौन था?

3. **संक्षेप में उत्तर दो :**

(क) बाबा भारती सुलतान की देखभाल कैसे करते थे?

(ख) घोड़े को देखकर खड़्गसिंह ने क्या निश्चय किया?

(ग) सुलतान की विशेषताओं के बारे में लिखो।

(घ) सुलतान को दोबारा पाकर बाबा भारती के अंदर क्या प्रतिक्रिया हुई?

4. **किसने किससे और कब कहा? बताओ :**

(क) "ओ बाबा, इस कंगले की भी सुनते जाना।"

(ख) "इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।"

(ग) "अब कोई दीन-दुखियों की सहायता से मुँह न मोड़ेगा।"

पाठ के आस-पास

1. (क) नीचे दिए गए चित्रों में से घोड़े के खाद्य पर ☑ चिह्न लगाओ :

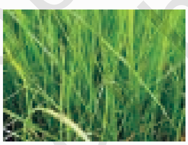 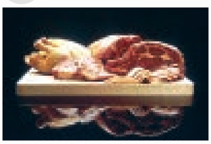 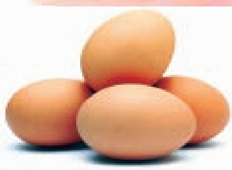

(ख) भिन्न प्राणी पर ◯ लगाओ।

(अ) घोड़ा (आ) गाय (इ) गधा (ई) शेर

(ग) किसकी सवारी करना तुमको अच्छा लगता है? कारण बताओ :

(अ) हाथी (आ) घोड़ा (इ) मोटर गाड़ी (ई) रेलगाड़ी (उ) हवाई जहाज

Copyright SCERT Assam not to be republished

2. महाराणा प्रताप के घोड़े चेतक के बारे में जानकारी प्राप्त करो।

योग्यता-विस्तार

1. 'हार की जीत' कहानी को एकांकी में रूपांतरित करके कक्षा में उसका अभिनय करो।
2. अवसर मिलने पर सुदर्शन जी की अन्य कहानियों को पुस्तकालय से लेकर पढ़ो।
3. 'दुष्ट से दुष्ट मनुष्य का भी हृदय-परिवर्तन संभव है।'- कक्षा में इस विषय पर अपने साथियों से चर्चा करो।

भाषा-अध्ययन

1. आओ, सस्वर पढ़ें :

नाना ओढ़े नरम रजाई
नानी ने भी आग जलाई,
लड़का बोला लड्डू दो
लड़की बोली मुँह खोलो।

बच्चो, यहाँ नाना-नानी और लड़का-लड़की शब्दों से पुरुष और स्त्री का बोध होता है। जिस शब्द से पुरुष जाति का बोध होता है उसे पुल्लिंग कहते हैं और जिस शब्द से स्त्री जाति का बोध हो उसे स्त्रीलिंग कहते हैं। इसी के आधार पर पुरुष और स्त्री के बोध कराने वाले शब्दों को लिखो :

बालक	चाची	मुर्गा ....
मामा	बकरी	भाई ....
धोबी	कुत्ता....................	राजा ....

2. चित्रों को देखो और उनके नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :

यह पत्ता है।

ये पत्ते हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में तुमने ने देखा और जाना कि **पत्ता** शब्द एक के लिए तथा **पत्ते** शब्द अनेक के लिए प्रयुक्त हुए हैं।

3. कौवे ने कहा- ''अब क्या किया जाए।'' प्रस्तुत वाक्य में रेखांकित शब्द 'कौवे' एकवचन के होने पर भी 'कौवा' शब्द के बहुवचन के रूप जैसा प्रयुक्त हुआ है। ध्यान रहे कि एकवचन के आकारांत पुल्लिंग शब्द के साथ जब विभक्ति-चिह्न का प्रयोग होता है तब हम उसे बदलकर एकारांत कर देते हैं। जैसे-

Copyright- SCERT not to be republished

एकवचन-रूप

लड़का = लड़के ने /को /से /में   चूहा = चूहे ने /को /से /में

बहुवचन-रूप

लड़के = लड़कों ने /को /से /में,   चूहे = चूहों ने /को /से /में

आओ, जानें :

क्रिया के जिस रूप से कार्य के समाप्त हो चुकने का पता चलता है, उसे <u>भूतकाल</u> कहते हैं। भूतकाल के सात भेद माने जाते हैं।

नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से देखो और समझो :

सुरेश ने खाना <u>खाया</u>। (सामान्य भूत)

सुरेश ने खाना <u>खाया</u> है। (आसन्न भूत)

सुरेश ने खाना <u>खाया था</u>। (पूर्ण भूत)

सुरेश खाना <u>खा रहा था</u>। (तात्कालिक भूत)

सुरेश खाना <u>खाता था</u>। (अपूर्ण भूत)

सुरेश ने खाना खाया होगा। (संदिग्ध भूत)

अगर रमेश <u>खाता</u>, तो सुरेश भी खाना <u>खाता</u>। (हेतु-हेतु मद् भूत)

अब इन वाक्यों को देखकर भूतकाल के प्रत्येक भेद के दो-दो वाक्य बनाओ और शिक्षक/शिक्षिका को दिखाओ।

आओ, पाठ में आए कुछ शब्दों के अर्थ जानें :

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
खरहरा	=	लोहे की कंघी जिससे घोड़े के शरीर का मैल साफ किया जाता है	बाँका	=	सुंदर और बना-ठना
			अपाहिज	=	अपंग
			पाँवों का मन भर का होना	=	मन दु:खी होने के कारण चलने में कठिनाई अनुभव करना
असबाब	=	सामान, वस्तु, चीज			
घन-घटा	=	बादलों की घटा			
अस्तबल	=	वह स्थान जहाँ घोड़े रखे जाते हैं	दास	=	सेवक, नौकर, गुलाम
			नेकी	=	सच्चाई, अच्छा कार्य
सहस्रों	=	हजारों			

Copyright : SCERT, Assam
not to be republished

पाठ-8

अपनों के पत्र

सर्दी का मौसम है। गौतम और गीतांजलि आँगन में खेल रहे हैं। उन्हें अपने पिताजी की याद सता रही है। वे भारतीय स्थल सेना में नौकरी करते हैं। हाल ही में उनका अरुणाचल प्रदेश में तबादला हुआ है। काफी दिनों के बाद उनके पिताजी से एक चिट्ठी आई। एकाएक गीतांजलि चिल्लाने लगी, ''चिट्ठी आई – चिट्ठी आई।'' डाकिए ने गौतम को एक लिफाफा दिया। दोनों चिट्ठी निकालकर पढ़ने लगे।

प्यारे
गौतम और गीतांजलि,

तवाङ
20.12.2011

मेरा प्यार व आशीर्वाद लेना। तुमलोगों की चिट्ठी मुझे बहुत पहले ही मिल चुकी थी। परंतु जवाब लिखने के बाद भी चिट्ठी भेज नहीं पा रहा था। यहाँ मेरी खैरियत ही है। उम्मीद है कि घर में सभी सकुशल हैं। कुछ दिन पहले मेरी ड्यूटी भारत-चीन सीमा पर लगी है। तुम्हें

यह जानकर हैरानी होगी कि वहाँ से टेलीफोन करना तो दूर की बात, चिट्ठी भेजना भी आसान नहीं है।

ओह! मैं तो भूल ही गया था, तुम लोगों ने अपनी चिट्ठी में अरुणाचल प्रदेश के बारे में पूछा था। जानते हो इसके प्राकृतिक सौंदर्य को देखे बिना तुमलोग शायद ही इसकी कल्पना कर सकोगे। पूरा प्रदेश पहाड़ों से भरा है। चारों ओर हरियाली ही हरियाली है।

तुम लोगों को यह जानकर खुशी होगी कि यहाँ आकर मुझे किसी से बातचीत करने में तकलीफ ही नहीं हुई है। राजधानी इटानगर समेत पूरे राज्य में संपर्क भाषा के रूप में हिंदी ही प्रचलित है। हालाँकि यहाँ की कार्यालयीन भाषा अंग्रेजी है।

बच्चो, सबसे दिलचस्प बात तो यह है कि यहाँ कई दर्शनीय स्थल हैं। तावाङ, बोमडिला, टिपि, भालुकपुंग, इटानगर, जिरो, आलंग आदि ढेर सारे दर्शनीय स्थलों का आगार है अरुणाचल।

तावाङ शहर भी किसी दृष्टि से कम नहीं। वहाँ का बौद्ध मंदिर करीब 400 साल पुराना है। उस मंदिर में दिसंबर–जनवरी महीने में बड़ा उत्सव होता है। देश–विदेश के पर्यटक यहाँ आकर जमा होते हैं।

जानते हो तावाङ पहुँचने के लिए विश्व के दूसरे सबसे ऊँचे सी–ला पास पार होकर जाना पड़ता है। उसकी एक फोटो भी भेज रहा हूँ। तवाङ से कुछ ही दूरी पर भारत–चीन सीमा है, यानी सीमा पार चीन है। यहीं मेरी ड्यूटी लगी है।

टिपि आर्किडों से भरा एक अविस्मरणीय स्थल है। भालुकपुंग में तो तुमलोग पिछली बार पिकनिक मनाने आए थे। भालुकपुंग पौराणिक कथा से जुड़ा एक पर्यटन स्थल है। वहाँ राजा वाण के पोते भालुक ने अपनी राजधानी बनवाई थी।

बच्चो, तुमलोगों को एक बार अरुणाचल प्रदेश घुमाने जरूर ले आऊँगा। बस आज यहीं खत्म करता हूँ। हाँ, अंत में मेरा प्यार तुम्हारी माँ को भी देना।

तुम्हारे
पिताजी

चिट्ठी पढ़ने के बाद गीतांजलि कागज–कलम लेकर चिट्ठी का जवाब लिखने बैठ गई। थोड़ी देर बाद गौतम ने गीतांजलि से कहा,

"बहन, सुनाओ तो पिताजी को क्या-क्या लिख रही हो?"

गीतांजलि ने भैया को चिट्ठी दिखाई।

पिताजी,

मेरी खबर अच्छी है। आपकी चिट्ठी आज मिली।.......

चिट्ठी का आरंभ देखकर गौतम ने कहा- "अरे, यह तुम क्या लिख रही हो? चिट्ठी लिखने का तरीका होता है। पारिवारिक पत्र में सबसे ऊपर संबोधन होना चाहिए। उसके दाहिनी ओर चिट्ठी भेजने वाले के स्थान और दिनांक लिखे जाते हैं। इसके बाद अभिवादन, मूल कलेवर और अंत में स्वनिर्देश वांछनीय हैं। आओ, मैं बोलता जाता हूँ, तुम लिखती जाओ।"

गौतम बोलता गया और गीतांजलि लिखती गई.......।

पूज्य पिताजी, | धुबड़ी
सादर प्रणाम! | 29.12.2011

हमें आपकी चिट्ठी मिलने पर बेहद खुशी हुई। चिट्ठी के साथ भेजी गई तस्वीरों को देखकर और आनंद मिला। यहाँ हम सभी सकुशल हैं। पिताजी, अरुणाचल के बारे में जानकर हम वहाँ जाने के लिए बैचेन हो उठे हैं। जितनी जल्दी हो सके वहाँ ले जाइएगा। हमारी पढ़ाई अच्छी चल रही है। आप वहाँ सावधानी से रहिएगा। भगवान से प्रार्थना है कि आप वहाँ खैरियत से रहे। अच्छा, आज के लिए बस इतना ही। चिट्ठी के उत्तर की प्रतीक्षा रहेगी।

आपके प्यारे बेटे-बेटी
गौतम और गीतांजलि

गौतम ने चिट्ठी पूरी होने के बाद माँ को भी पढ़ सुनाया। इसके बाद एक लिफाफे में उसे बंद कर दिया और लिफाफे पर पिता का नाम और कार्यालय का पता लिख लिया। उसने माँ से इजाजत ली और चिट्ठी डाकघर में डाल आया।

आओ, यह भी जानें :

अरुणाचल प्रदेश के पश्चिम कामेंग जिले में स्थित 'टिपि' नामक स्थान में एक प्रसिद्ध ऑर्किड गवेषणा केंद्र है। वहाँ 7500 से भी अधिक ऑर्किडों का संग्रह है।

Copyright SCERT, Assam
not to be republished

अभ्यास-माला

पाठ से

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो :

(क) गौतम और गीतांजलि कहाँ खेल रहे थे?

(ख) गौतम और गीतांजलि के पिता को चिट्ठी भेजने में देर क्यों हुई थी?

(ग) भालुकपुंग में किसने राजधानी बनवाई थी?

(घ) गौतम और गीतांजलि के पिता कौन-सी नौकरी करते थे और उनका तबादला किस जगह पर हुआ था?

2. संक्षेप में उत्तर दो :

(क) अरुणाचल के पाँच दर्शनीय स्थलों के नाम लिखो।

(ख) टिपि की विशेषता क्या है?

(ग) अरुणाचल की संपर्क भाषा और कार्यालयीन भाषा क्या-क्या हैं?

(घ) तावाङ शहर के बौद्ध मंदिर के बारे में संक्षिप्त जानकारी दो।

3. पारिवारिक पत्र में कौन-कौन से अंग होने चाहिए, पाठ के आधार पर एक रूपरेखा बनाकर लिखो।

4. पाठ के आधार पर तावाङ के बारे में पाँच वाक्य लिखो।

पाठ के आस-पास

1. सूचना-प्रौद्योगिकी के विकास के साथ-साथ संपर्क-व्यवस्था में भरपूर बदलाव आ रहा है। तुम पत्र के अलावा संपर्क-साधन के अन्य उपायों की एक सूची बनाओ और उनकी तस्वीरों का संग्रह करके कॉपी पर चिपकाओ।

2. प्रस्तुत पाठ में पारिवारिक पत्र के बारे में बताया गया है। पारिवारिक पत्र के अलावा पत्र के अन्य और क्या-क्या भेद हैं जान लो और एक तालिका बनाओ।

3. हम वर्ष में विभिन्न प्रकार के त्यौहार मनाते हैं। तुमने इस बार होली किस तरह मनाई, उसकी जानकारी देकर अपने मित्र को एक पत्र लिखो।

4. चिट्ठी भेजते समय पाने वाले के पते के साथ स्थान का डाक सूचकांक (पिन कोड) अवश्य लिखना चाहिए। कुछ प्रमुख महानगरों के डाक सूचकांक हैं-

600001	400001	700001	110001	560001
चेन्नई	मुंबई	कोलकाता	दिल्ली	बेंगलुरू

Copyright - SCERT, Assam
not to be republished

तुम असम के प्रत्येक जिला मुख्यालय, जैसे– डिब्रूगढ़, तिनसुकिया, जोरहाट, गुवाहाटी, बंगाईगाँव, बरपेटारोड आदि के डाक सूचकांकों का संग्रह करके कॉपी पर लिखो।

5. आओ, समूह में बैठकर बातें करें :

(क) क्या तुमलोगों ने भारतीय सेना के बारे में कभी बातचीत की है? सेना प्रधान की नौकरी करने से कैसा लगेगा, आपस में चर्चा करो।

(ख) अरुणाचल प्रदेश के आदिवासी लोगों की पोशाकों और उनके द्वारा प्रयुक्त आभूषणों के बारे में जानकारी एकत्र करो तथा अपने साथियों को बताओ।

भाषा–अध्ययन

1. आओ, जानें :

वाक्य में संज्ञा शब्द के बार–बार प्रयोग से बचने के लिए जिस शब्द का व्यवहार होता है, उसे **सर्वनाम** कहते हैं।

पढ़ो और समझो :

गीतांजलि अच्छी लड़की है। वह रोज स्कूल जाती है।
गौतम और राहुल क्रिकेट खेलते हैं। वे मशहूर क्रिकेट खिलाड़ी हैं।
दिल्ली भारत की राजधानी है। यह एक प्राचीन शहर है।

इन वाक्यों में रेखांकित शब्द नाम के बदले आए हैं। अतः ये सर्वनाम हैं।

2. आओ, सर्वनामों के साथ आने वाले क्रिया–रूप ध्यान से देखें और लिखें :

क्रिया	तू	तुम	आप
खेलना	खेल	खेलो	खेलिए
आना			
पढ़ना			

3. इन वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :

(क) तुमलोगों को एक बार अरुणाचल प्रदेश घुमाने के लिए ले **आऊँगा**।

(ख) आप वहाँ सावधानी से **रहिएगा**।

(ग) चिट्ठी के उत्तर की प्रतीक्षा **रहेगी**।

ऊपर के वाक्यों में मोटे अक्षरों वाले शब्दों से पता चलता है कि काम आने वाले समय में होने वाला है। जब काम आने वाले समय में होने का भाव होता है उसे **भविष्यत् काल** कहते हैं।

Copyright-SCERT, Assam not to be republished

4. **खाली जगहों को भविष्य का बोध होने वाले क्रिया-रूपों से पूरा करो :**

(क) गोपाल बाजार .... ।

(ख) गीतांजलि और गौतम विज्ञान प्रदर्शनी देखने .... ।

(ग) माँ भी उनलोगों के साथ .... ।

(घ) यहाँ आने से ही पता .... ।

5. **नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से पढ़ो :**

सीमा, एक **अच्छा** फल दो। हाँ-हाँ, दोनों **कच्चे** फल **खराब** हैं। **पके** आम ही दो।

इन वाक्यों में अच्छा, खराब, कच्चे, पके शब्द फल की विशेषता बता रहे हैं।

राम **स्वस्थ** लड़का है। वह पढ़ाई में भी **तेज** है। उसका आचरण भी **ठीक** है।

यहाँ स्वस्थ, तेज, ठीक विशेषता बताने वाले शब्द हैं।

जान लें : ऊपर के वाक्यों में मोटे अक्षरों वाले और रेखांकित शब्द अच्छा, कच्चे, पके, स्वस्थ, तेज, ठीक किसी की विशेषता बताते हैं। ऐसे शब्दों को **विशेषण** कहा जाता है।

अरुणाचल के मनोरम दृश्य को ध्यान से देखो :

अरुणाचल का प्राकृतिक दृश्य

सी-ला पास

परियोजना

कल्पना के सहारे तावाङ के प्राकृतिक दृश्य का एक चित्र बनाओ।

आओ, पाठ में आए कुछ शब्दों के अर्थ जानें :

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
ठिठुरन	= ठंड के कारण होने वाला कंपन	सफर	= यात्रा
तबादला	= बदली, स्थानांतरण	फुर्सत	= अवकाश, खाली समय
खैरियत	= कुशलता	सदियों पुराना	= सैकड़ों वर्ष पुराना
तकलीफ	= दिक्कत, परेशानी	अविस्मरणीय	= न भूलने लायक
कार्यालयीन	= कार्यालयों में प्रयोग होनेवाली	सुहावने	= सुंदर
		इजाजत	= आज्ञा, अनुमति

Copyright SCERT Assam
not to be republished

पाठ-9

सुमन एक उपवन के

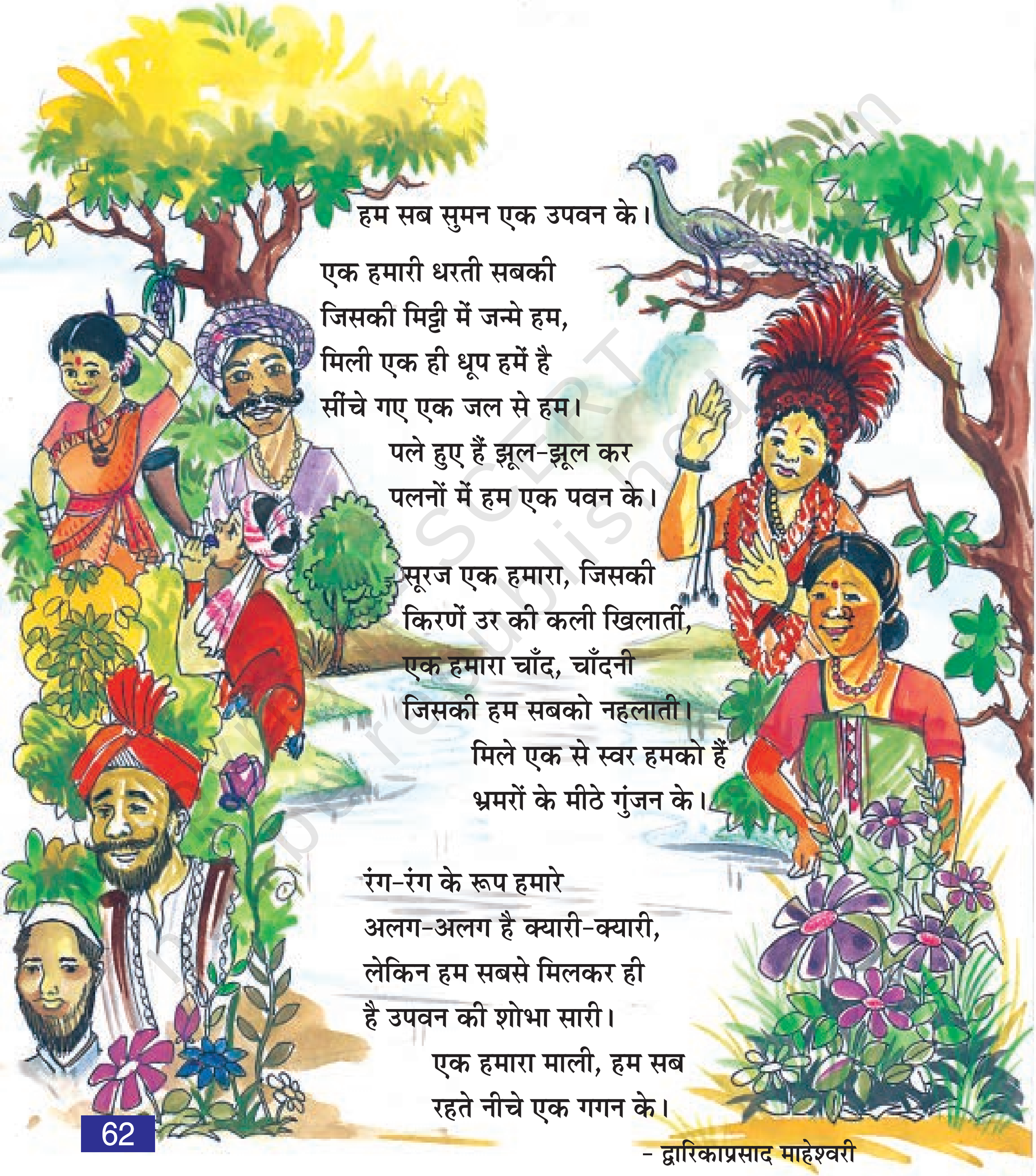

हम सब सुमन एक उपवन के।

एक हमारी धरती सबकी
जिसकी मिट्टी में जन्मे हम,
मिली एक ही धूप हमें है
सींचे गए एक जल से हम।
पले हुए हैं झूल-झूल कर
पलनों में हम एक पवन के।

सूरज एक हमारा, जिसकी
किरणें उर की कली खिलातीं,
एक हमारा चाँद, चाँदनी
जिसकी हम सबको नहलाती।
मिले एक से स्वर हमको हैं
भ्रमरों के मीठे गुंजन के।

रंग-रंग के रूप हमारे
अलग-अलग है क्यारी-क्यारी,
लेकिन हम सबसे मिलकर ही
है उपवन की शोभा सारी।
एक हमारा माली, हम सब
रहते नीचे एक गगन के।

– द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी

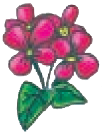

अभ्यास-माला

पाठ से

1. संक्षेप में उत्तर दो :

(क) कविता में 'सुमन' और 'उपवन' किन्हें कहा गया है?

(ख) फूलों की कलियाँ किससे खिलती हैं?

(ग) भ्रमरों के गुंजन कैसे लगते हैं?

(घ) कवि के अनुसार हमारा माली कौन है?

(ङ) चाँदनी किसको नहलाती है?

2. उत्तर लिखो :

(क) कवि ने उपवन के फूलों को किन कारणों से समान कहा है?

(ख) कई रंगों के फूल उपवन की शोभा बढ़ाते हैं। उसी प्रकार भिन्न जाति-उपजातियों के लोग देश की शोभा कैसे बढ़ाते हैं?

(ग) प्रस्तुत कविता से हमें क्या सीख मिलती है?

3. "संसार एक उपवन है और हम उसके फूल हैं।" इस संदर्भ में अपनी राय प्रस्तुत करो।

पाठ के आस-पास

1. प्रस्तुत कविता 'अनेकता में एकता' के भाव का चित्रण करती है। ऐसी ही भाववाली कोई अन्य कविता कक्षा में सुनाओ।

2. "भारत विविध भाषाओं एवं संस्कृतियों वाला सुंदर देश है।" इस कथन का आशय स्पष्ट करो।

3. सोचो, समझो और रेखा खींचकर मिलाओ :

मिट्टी	धूप
सूर्य	झूला
पवन	चाँदनी
चाँद	जन्म
गुँजन	शोभा
उपवन	भ्रमर

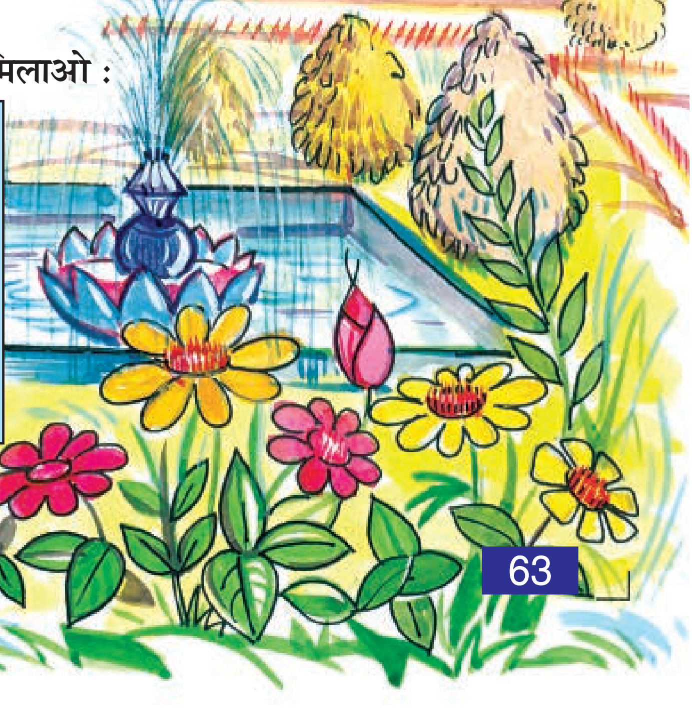

Copyright : SCERT, Assam
not to be republished

भाषा-अध्ययन

1. प्रस्तुत कविता में कुछ शब्दों की पुनरुक्ति हुई है। आओ, इनसे वाक्य बनाएँ :

अलग-अलग　　रंग-रंग　　क्यारी-क्यारी　　झूल-झूल

2. निम्नलिखित शब्दों को शब्द-कोश के क्रम से सजाओ :

सुमन, उपवन, धरती, धूप, खींचना, पवन, किरण, डर, गगन, गुँजन, शोभा

3. पर्यायवाची शब्द को समानार्थक शब्द अथवा समान अर्थवाला शब्द भी कहते हैं। नीचे दिए गए शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखो :

धरती = ..., ...

सूरज = ..., ...

चाँद = ..., ...

उपवन = ..., ...

4. 'क' खंड के शब्दों के साथ 'ख' खंड के विपरीतार्थक शब्दों को मिलाओ और खाली स्थानों में उन्हें भरो :

क	ख
धूप	आकाश
धरती	अनेक
एक	मृत्यु
जन्म	छाँव

.... x ....

.... x ....

.... x ....

.... x ....

5. नीचे दिए गए वाक्यों को देखो और समझो :

(क) हाथ **में** घड़ी है।　　(ख) मेज **पर** किताब है।

(ग) सीता घर **में** नहीं है।　　(घ) सूरज के उगने **पर** सवेरा होता है।

ऊपर लिखे वाक्यों को ध्यान से देखो। इन वाक्यों में 'में' और 'पर' चिह्नों का प्रयोग हुआ है। क्रिया जिस स्थान या समय पर घटित होती है उसके साथ 'में' तथा 'पर' चिह्न जोड़ा जाता है। जब अंदर होने का भाव हो, तब 'में' और जब ऊपर होने का भाव हो तब 'पर' चिह्न का प्रयोग होता है।

Copyright SCERT, Assam
not be republished

अब तुम भी 'में' और 'पर' लगाकर तीन-तीन वाक्य लिखो :

में	पर
(क)	(क)
(ख)	(ख)
(ग)	(ग)

योग्यता-विस्तार

1. अपने आस-पास के किन्हीं पाँच फूलों और उनके रंगों के नाम बताओ।
2. तुम अपने जन्म-दिन के अवसर पर किसी फूल का पौधा या कोई पेड़ लगाओ और उसकी देखभाल करो।
3. ''एकता में बल है।'' प्रस्तुत विषय पर कक्षा में चर्चा करो।
4. नीचे दिए गए कवितांश को ध्यानपूर्वक पढ़ो और उसे आगे बढ़ाओ :

सुबह-सवेरे आती तितली,
फूल-फूल पर जाती तितली,
रंग-बिरंगे पंख सजाए,
सबके मन को भाती तितली।
....
....
....
....

आओ, पाठ में आए कुछ शब्दों के अर्थ जानें :

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
सुमन	=	फूल	चाँदनी	=	चाँद का प्रकाश
उपवन	=	बाग, बगीचा	नहलाना	=	स्नान कराना
धूप	=	सूर्य का प्रकाश, आतप	शोभा	=	सुंदरता
पवन	=	हवा, वायु	गगन	=	आकाश
कली	=	अविकसित फूल	गुंजन	=	कोमल, मधुर ध्वनि

© Copyright- SCERT, Assam
not to be republished

पाठ-10

स्वाधीनता संग्राम में पूर्वोत्तर की वीरांगनाएँ

सातवीं कक्षा के कुछ विद्यार्थी शिक्षामूलक भ्रमण समाप्त करके तेजपुर से कल ही लौट आए थे। दोपहर का विराम चल रहा था। तेजपुर जाने वाले और वहाँ न जा पाने वाले विद्यार्थियों में बातचीत चल रही थी। ईशान ने वहाँ की **कनकलता** की मूर्ति के बारे में बताया। उसने यह भी बताया कि वीरांगना कनकलता ने किस प्रकार अपने देश को अंग्रेज शासन से मुक्त कराने के लिए स्वतंत्रता संग्राम में अपने प्राणों का बलिदान किया था। उनकी बातचीत चल ही रही थी कि इतने में अध्यापक बरामदे से गुजरे। बच्चों की बातें सुनकर वे उनके पास आए।

अध्यापक : क्या कर रहे हो तुमलोग ? कनकलता की बात हो रही थी क्या ?

अनिकेत : ईशान हमें तेजपुर में स्थित कनकलता की मूर्ति के बारे में बता रहा था, गुरुजी ?

अध्यापक : बहुत अच्छी बात है ? तुमलोग तो जानते ही हो कि हमारा देश लगभग दो सौ वर्ष तक अंग्रेजों के अधीन था।

मीना : जी हाँ, गुरुजी। 15 अगस्त, 1947 ई. को हमारा देश अंग्रेजी सरकार के शासन से आजाद हुआ था।

अध्यापक : हमारे देशवासियों को आजादी के लिए सालों संघर्ष करना पड़ा। आजादी की इस लड़ाई में हमारे देश के अनेक लोग शहीद हुए।

ईशान : और हमारे असम की कनकलता भी उनमें से एक थी, है न गुरुजी ?

अध्यापक : हाँ! देश के अन्य प्रांतों की तरह हमारे असम के लोगों ने भी अंग्रेजों से आजाद होने के लिए गाँधीजी के मार्ग-दर्शन में अहिंसक आंदोलन में भाग लिया था। गाँधीजी के

Copyright: SCERT, Assam
not to be republished

नेतृत्व में 1942 ई. में 'भारत छोड़ो' आंदोलन चला था। इस आंदोलन के दौरान तेजपुर के पास गहपुर नामक जगह में थाने पर हमारा तिरंगा फहराने के लिए लोग जुलूस बनाकर आए थे। इस जुलूस के सबसे आगे तिरंगा लेकर बढ़ रही थी कनकलता। पुलिस ने जुलूस को रोका। परंतु कनकलता के मन में आजादी की धून सवार थी। वह झंडा फहराए बिना कैसे लौट जाए? वह आगे बढ़ी, तो गुस्से में लाल-पीला होकर पुलिस के दारोगा ने उस पर गोली चला दी। कनकलता देश की आजादी के लिए शहीद हो गई।

मनु : गुरुजी, कनकलता की तरह क्या असम की और भी किसी नारी ने आजादी की लड़ाई में भाग लिया था?

अध्यापक : हाँ! देश की आजादी की लड़ाई में असम की वीरांगनाएँ भी पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ी थीं। कनकलता के अतिरिक्त **भोगेश्वरी फुकननी, अमलप्रभा दास, पुष्पलता दास, चंद्रप्रभा शइकीयानी** आदि महीयसी नारियों के अवदान भी इस आंदोलन में उल्लेखनीय हैं।

रीना : सुना है पूर्वोत्तर के अन्य राज्यों की भी अनेक महिलाओं ने इस आंदोलन में भाग लिया था। इन वीर महिलाओं के विषय में हमें कुछ बताइए न गुरुजी!

अध्यापक : ठीक है। सुनो, स्वाधीनता आंदोलन को गति देने में हमारे पड़ोसी राज्य मणिपुर तथा नागालैंड की महिलाओं का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। नागारानी गाइदिंल्यू असम की कनकलता की ही तरह किशोरी अवस्था में, केवल तेरह साल की उम्र में अंग्रेजों के खिलाफ आंदोलन में कूद पड़ी थीं।

गाइदिंल्यू

अनिकेत : गुरुजी, क्या वे झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की तरह नागालैंड की रानी थीं?

अध्यापक : नहीं, नहीं। वे लक्ष्मीबाई की तरह रानी नहीं थीं। मणिपुर राज्य के लंकाओ नामक एक गाँव में 26 जनवरी, 1915 ई. को उनका जन्म हुआ था। अंग्रेजों के खिलाफ आंदोलन में भाग लेने के कारण 1932 ई. में जब वे केवल 16 साल की एक किशोरी थीं तभी अंग्रेज सरकार ने उन्हें गिरफ्तार करके जेल की सजा दी थी। तब से वे भारत की स्वतंत्रता-प्राप्ति तक जेल में ही रहीं।

Copyright SCERT, Assam not to be republished

मनु : तो उन्हें रानी क्यों कहा जाता है गुरुजी ?

अध्यापक : जब वे शिलांग जेल में बन्दी थीं तब 1937 ई. में पं जवाहरलाल नेहरूजी ने उनसे मुलाकात की थी। नेहरूजी ने उनको 'नागारानी' कहकर संबोधित किया था और तब से वे 'रानी गाइदिंल्यू' नाम से प्रसिद्ध हुईं।

ईशान : इनके बारे में जानकर बहुत अच्छा लगा। और अन्य के बारे में बताइए न गुरुजी !

रोपुइलियानी

अध्यापक : अच्छा सुनो, मिजोरम की एक स्वतंत्रता सेनानी ***रोपुइलियानी*** का नाम भी बहुत श्रद्धा से लिया जाता है। उनके पति वन्दुला मिजोरम के देनलुंग नामक गाँव के मुखिया थे। पति की मृत्यु के पश्चात रोपुइलियानी देनलुंग गाँव की मुखिया बनी थीं। मिजोरम के लिखित इतिहास के अनुसार 19वीं सदी में गाँव की मुखिया बननेवाली वे पहली महिला थीं।

रीना : उन्होंने क्या किया था गुरुजी ?

अध्यापक : रोपुइलियानी ने अंग्रेजों की हुकुमत कबूल करने से साफ इनकार किया था और खुले आम उनका विरोध किया था। इसी अपराध में 1893 ई. में उन्हें अंग्रेज सरकार ने गिरफ्तार करके जेल की सजा दी थी। लगभग एक साल जेल में कैद रहने के बाद 1894 ई. में जेल में ही उनकी मृत्यु हो गई।

अनिकेत : गुरुजी, और अन्य के बारे में भी बताइए न !

अध्यापक : मेघालय राज्य की शहीद माता ***राशिमनी हाजों*** नाम से प्रसिद्ध वीरांगना ने स्वाधीनता संग्राम में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। इसी प्रकार सिक्किम राज्य की स्वाधीनता संग्रामी ***हेलेन लेपचा उर्फ सावित्री देवी*** का नाम भी उल्लेखनीय है। अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए भी उन्होंने अपना संघर्ष जारी रखा था। देखो, अब घंटी लगने का समय हो गया। बाद में कभी और बताएँगे। ठीक है ? अब चलते हैं।

हेलेन लेपचा

अनिकेत : जी गुरुजी, आपने हमें बहुत कुछ बताया। हमें यह जानकर गर्व हुआ है कि पूर्वोत्तर की महिलाओं ने भी देश के स्वतंत्रता आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। आपको बहुत धन्यवाद !

Copyright : SCERT, Assam
not to be republished

अभ्यास-माला

पाठ से

1. पूर्ण वाक्य में उत्तर दो :

(क) स्वाधीनता दिवस कब मनाया जाता है ?

(ख) स्वाधीनता से पहले हमारे देश का नियंत्रण किनके हाथों में था ?

(ग) 'भारत छोड़ो' आंदोलन के दौरान असम की कौन-सी बालिका शहीद हुई थी ? वह कहाँ की रहने वाली थी ?

(घ) स्वाधीनता आंदोलन का नेतृत्व किसने किया था ?

(ङ) हेलेन लेपचा किस नाम से जानी जाती थी ?

2. नीचे दिए गए कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़कर सही ☑ अथवा गलत ☒ का निशान लगाओ :

(क) देशवासियों ने मिलकर अंग्रेजों के विरोध में आवाज उठाई।

(ख) स्वाधीनता की लड़ाई पूर्वोत्तर भारत में नहीं लड़ी गई।

(ग) वर्तमान पूर्वोत्तर भारत में कुल आठ राज्य हैं।

(घ) रानी गाइदिंल्यू असम की वीरांगना थीं।

(ङ) स्वाधीनता के लिए लड़ने वाले यश के बारे में नहीं सोचते।

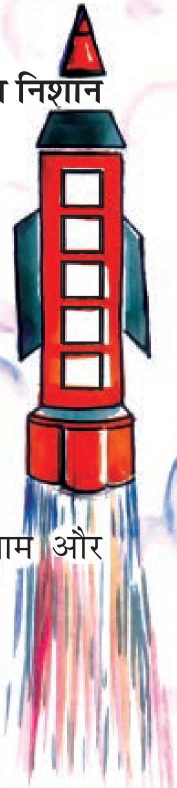

3. संक्षिप्त उत्तर लिखो :

(क) दोपहर के विराम में कक्षा के भीतर क्या चल रहा था ?

(ख) असम की किन्हीं पाँच वीरांगनाओं के नाम बताओ।

(ग) असम से भिन्न पूर्वोत्तर भारत की किन्हीं तीन वीरांगनाओं के नाम और संग्राम-क्षेत्र बताओ।

(घ) कनकलता किस प्रकार देश की स्वाधीनता के लिए शहीद हो गई थी ?

पाठ के आस-पास

1. सोचो और लिखो :

(क) तुम्हारे विद्यालय में स्वाधीनता दिवस कैसे मनाया जाता है ?

(ख) तुम स्वाधीनता दिवस के अवसर पर क्या-क्या करते हो ? एक तालिका बनाओ।

(ग) तुम्हारे अंचल के स्वाधीनता सेनानियों के नाम निम्न तालिका में भरो :

महिला	पुरुष

Copyright SCERT Assam
not to be republished

इनमें से किसी एक के बारे में छोटा-सा अनुच्छेद लिखो।

(घ) नीचे दो भिन्न समयों में संघटित स्वतंत्रता आंदोलनों का उल्लेख किया गया है। इन दोनों आंदोलनों में नेतृत्व देने वाले दो-दो स्वतंत्रता सेनानियों के नाम लिखो :

(अ) 1857 ई. का आंदोलन (आ) 1942 ई. का आंदोलन

2. भारतवर्ष को अंग्रेजों के शासन से मुक्त कराने के लिए जनता को क्या-क्या करना पड़ा होगा, उसके बारे में क्या जानते हो ? सामूहिक परिचर्या का आयोजन करके अपना-अपना अनुभव कक्षा में व्यक्त करो।

भाषा-अध्ययन

आओ, जानें :

1. **(क)** कनकलता साहसी लड़की थी। वह स्वाभिमानी थी। उसने ओजस्वी भाषण रखा। उसने प्यारे तिरंगे को थाने में फहराने का निश्चय किया।

ऊपर रेखांकित शब्द विशेषण हैं। जो शब्द संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता बताए उसे **विशेषण** कहते हैं। अब तुम भी कुछ विशेषण शब्द खोजो और उनसे वाक्य बनाओ।

(ख) नेहा छोटी लड़की है। अरूप छोटा लड़का है। तीन छोटे लड़के जा रहे हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द क्रमश: छोटी, छोटा और छोटे हैं। पहले वाक्य में कर्ता 'नेहा' स्त्रीलिंग एकवचन की है। इसलिए विशेषण 'छोटी' है। दूसरे वाक्य में कर्ता अरूप है जो पुल्लिंग एकवचन का है। इसलिए विशेषण 'छोटा' है। तीसरे वाक्य में 'तीन लड़के' पुल्लिंग बहुवचन हैं, इसलिए 'छोटे' विशेषण रूप है। इस तरह लिंग, वचन के अनुसार विशेषण का परिवर्तन हो जाता है। ऐसे कुछ उदाहरण देने की कोशिश करो।

(ग) सही विशेषण चुनकर वाक्यों को पूरा करो :

(i) वह बच्चा कितना .... है! (प्यारी, प्यारे, प्यारा)

(ii) उसका परिवार .... है। (बड़े, बड़ा, बड़ी)

(iv) कक्षा में अनेक .... लड़के हैं। (अच्छा, अच्छे, अच्छी)

(v) किसी को .... नजर से मत देखो। (बुरा, बुरे, बुरी)

2. **नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से देखो :**

रमेश ने पुस्तक पढ़ी। सीमा ने खाना खाया है।

Copyright - SCERT, Assam
not to be republished

राजेश ने अभिनय किया था। लता ने गीत गाया होगा।

ऊपर लिखे वाक्यों में 'ने' चिह्न का प्रयोग हुआ है। वाक्य में कर्ता के साथ 'ने' चिह्न का प्रयोग होता है। परंतु यह चिह्न वर्तमान काल तथा भविष्यत् काल में प्रयुक्त नहीं होता। यह भूतकाल के केवल चार भेदों– सामान्य, आसन्न, पूर्ण और संदिग्ध भूत में ही प्रयुक्त होता है। यह चिह्न तभी प्रयोग किया जाता है, जब क्रिया के साथ कर्म हो।

अब 'ने' चिह्न का प्रयोग करके पाँच वाक्य बनाओ और शिक्षक/शिक्षिका को दिखाओ।

योग्यता-विस्तार

1. आओ, हम पूर्वोत्तर की वीरांगनाओं की बारे में एक साथ चर्चा करें।

2. स्वाधीनता संग्राम में लोकप्रिय गोपीनाथ बरदलै तथा देशभक्त तरुणराम फुकन की देनों के बारे में जानकारी हासिल करो।

3. भारतीय नारियों ने केवल स्वतंत्रता संग्राम में ही अपना योगदान नहीं दिया, बल्कि अंतरिक्ष की यात्राओं में भी सराहनीय योगदान दिया है। उनके नामों की सूची तैयार करो।

परियोजना : मुला गाभरु अथवा सती जयमती के जीवन एवं कार्यों का उल्लेख करते हुए एक परियोजना तैयार करके अपने शिक्षक/शिक्षिका को दिखाओ।

आओ, पाठ में आए कुछ शब्दों के अर्थ जानें :

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
आजाद	= स्वाधीन, स्वतंत्र	गिरफ्तार	= कैद
शहीद	= मातृभूमि के लिए मौत को गले लगाने वाले	मुलाकात	= भेंट
		हुकुमत	= शासन
जुलूस	= पंक्ति में लोगों का आगे बढ़ना	कबूल	= स्वीकार
		पूर्वोत्तर	= भारतवर्ष का उत्तर-पूर्वी भाग, जिसमें इन दिनों असम, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा, मेघालय और सिक्किम– ये आठ प्रांत शामिल हैं।
धून	= लगन		
अवदान	= देन		
वीरांगना	= वीर महिला		
खिलाफ	= विरुद्ध		

Copyright SCERT, Assam
not be republished

पाठ-11

कागज की कहानी

बच्चो ! कागज देखने में कितना सुंदर और आकर्षक लगता है ! सफेद कागज पर हमारी लिखावट भी उतनी ही सुंदर बनती है। विभिन्न रंगों के कागजों का विविध प्रयोग होता है। सफेद कागज अक्सर लिखने अथवा छपाई के काम आता है। इससे पैकिंग का कार्य भी लिया जाता है। हम जिधर भी दृष्टि डालते हैं, उधर कागज के उपयोग दिखाई देते हैं। आज कागज हमारी जीवन-चर्या का महत्वपूर्ण अंग बन गया है।

जरा सोचो, जब मनुष्य ने पहली बार कागज पर कुछ लिखा होगा! उसने किसी वस्तु, फल-फूल या किसी जीव-जंतु का चित्र बनाया होगा! तब वह कितना खुश हुआ होगा! परंतु लिखने अथवा चित्र बनाने का यह काम कागज बनने से पहले से ही होता आ रहा है। तब मनुष्य पेड़ों के छाल-पत्तों पर, जानवरों की खाल पर, मिट्टी की पट्टियों पर तथा धातु के पत्तरों पर लिखता था। परंतु आज हमारे पास लिखने के लिए बढ़िया से बढ़िया कागज उपलब्ध हैं। पढ़ने के लिए अनगिनत पुस्तकें हैं। कागज के रूप में सभ्यता का भरपूर विकास हो चुका है। लेकिन यह कागज कैसे बना? कहाँ से आया? इसे किसने बनाया- इसके पीछे एक बड़ी ही रोचक कहानी है।

साइलुन नामक एक चीनी व्यक्ति को कागज का जन्मदाता माना जाता है। हालांकि मिस्र देश में 'पेपिरस' नामक एक प्रकार के सरकंडे से कागज बनाने का प्रयास हो चुका था। इसी कारण अंग्रेजी भाषा में कागज के लिए 'पेपर' शब्द का प्रयोग चल निकला। पेड़-पौधों के बारे में साइलुन हमेशा नई-नई बातों का पता लगाता रहता था। धीरे-धीरे उसका नाम चारों ओर फैलने लगा। चीन के राजा को साइलुन के बारे में जब पता चला तो उसने साइलुन को अपने दरबार में बुलाकर कहा- "तुममें

बड़ी प्रतिभा है। हम तुम्हारी खोजों से बहुत खुश हैं। परंतु तुम किसी ऐसी वस्तु की खोज करो जिससे संसार में तुम्हारा नाम हो जाए और आनेवाली पीढ़ियाँ भी उस चीज को देखकर तुम्हें याद करें।''

साइलुन उसी समय से इस खोज में लग गया। उसने पेड़ के एक ऐसे गूदे का पता लगाया जिसपर किसी ब्रूश या कलम से स्थायी निशान बनाए जा सकते थे। उसने शहतूत के पेड़ को बहुत देर तक छीला। जब उसके भीतर से बारीक रेशे निकल आए तो साइलुन ने उन रेशों को पानी मिलाकर खूब पीसा। पीसते–पीसते जब उसकी लुगदी–सी बन गई तो उसे सूखने के लिए धूप में रख दिया। लुगदी सूखकर एक कठोर परत बन गई। बाद में साइलुन ने उस परत को लकड़ी के पट्टे पर रखकर समतल कर दिया। इस तरह कागज का जन्म हुआ।

साइलुन ने जिस तरीके से कागज तैयार किया था– आज भी उसी तरीके से कागज बनाया जाता है। अंतर केवल इतना है कि पहले हाथ से कागज बनता था, आज यह काम मशीनों से होता है। शहतूत और बाँस से कागज बनाए जाते हैं। उसके अतिरिक्त खाद, सड़ी हुई लकड़ी, भूसी तथा अन्य घास–फूस से भी कागज बनते हैं। लेकिन इन्हें बनाने में अधिक खर्च आता है। प्रत्येक पेड़–पौधा रेशों से बना होता है। बढ़िया कागज इन्हीं रेशों से तैयार होता है। इन रेशों में पेक्टिन, माँड़ी, चीनी आदि कई प्रकार के रासायनिक तत्व पाए जाते हैं जो कागज को मजबूती प्रदान करते हैं। आवश्यकतानुसार कागज मोटा अथवा बारीक बनाया जाता है। मोटा कागज पेड़ों के रेशों से तथा बारीक कागज रूई के रेशों एवं विशेष प्रकार के घास से तैयार होता है। इन्हें बनाने वाली मशीनें भी अलग–अलग होती हैं। कागज को चमकीला और आकर्षक बनाने के लिए अलग से उसमें कुछ रासायनिक द्रव्य भी मिलाए जाते हैं। रंगीन कागज बनाने के लिए उसमें विभिन्न रंग भी मिलाए जा सकते हैं।

पहले प्रत्येक कागज अलग–अलग बनाया जाता था। बड़े आकार के एक सौ कागज बनाने में एक कुशल कारीगर को एक घंटा लगता था। जब कागज की माँग बढ़ी तो लोगों का ध्यान कम समय में अधिक कागज बनाने पर गया। फ्रांस और ब्रिटेन के इंजीनियरों ने सरल रूप में कागज बनाने के तरीके ढूँढ़ने में सफलता पाई। आज हालत यह है कि मशीनों से बड़ी मात्रा में तथा बेहतर

Copyright - SCERT, Assam
not to be republished

गुणवत्तावाला कागज तैयार हो रहा है। दो हजार वर्ष पहले चीन में हाथ से जितना कागज बनता था, आज उससे दस हजार गुना अधिक कागज बन रहा है।

कारखानों में कागज बनाने के लिए बड़े पैमाने पर पेड़ों की आवश्यकता होती है। इसलिए इस कार्य में लगी बड़ी-बड़ी कंपनियों ने बड़े-बड़े जंगल खरीद लिए हैं। दिन-रात पेड़ काटे जा रहे हैं और उन्हें ट्रकों में भरकर कागज के कारखानों में पहुँचाया जा रहा है। पेड़ काटना हमारे पर्यावरण के लिए कितना नुकसानदेह है! फिर भी कागज प्राप्त करने के लिए हमें यह नुकसान सहना पड़ता है। परंतु आज वैज्ञानिक इस प्रयास में लगे हुए हैं कि कागज बनाने के लिए कम से कम पेड़-पौधे काटे जाएँ।

105 ई. में चीन में सर्वप्रथम कागज बनाया गया था। वहाँ से यह आविष्कार कोरिया, जापान और अन्य देशों में पहुँचा। चीन से तिब्बत होकर कागज बनाने की कला भारत पहुँची और फिर अरबवासियों ने इसे प्राप्त किया। इटली में कागज बनाने की कला का विकास हुआ तो वह पूरे यूरोप को कागज भेजने लगा। कलम-पेंसिल के आविष्कार होने और छापेखाने के खुल जाने से कागज के उपयोग में बेतहाशा बढ़ोत्तरी हुई है। संसार के सभी देशों में कागज के कारखाने खुल गए हैं। संयुक्त राज्य अमरीका, कनाडा, फिनलैंड, स्वीडन, रूस आदि देश कागज के उत्पादन में आगे हैं। भारत में उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल और पंजाब में कागज बनाने के कारखाने हैं। असम में जागीरोड और जोगीघोपा नामक स्थानों पर कागज बनाने के कारखाने हैं। कामरूप जिले के पानीखाइती नामक स्थान पर हार्डबोर्ड (मोटा कागज) बनाने का एक कारखाना है।

आज कंप्यूटर के बढ़ते प्रयोग से कागज के उपयोग में बहुत कमी आई है। इंटरनेट के इस युग में महत्वपूर्ण जानकारियाँ हमें कंप्यूटर से मिल रही हैं। कई प्रकार की पत्र-पत्रिकाएँ और पुस्तकें हम कंप्यूटर के द्वारा पढ़ रहे हैं। आज सभी विभागों के कार्यालयों एवं बैंकों में कंप्यूटर से ही कार्य हो रहा है। उन कंप्यूटरों में सभी रिकार्ड संचित रहते हैं। इससे कागज की बचत हुई है और कागज बनाने के लिए पेड़-पौधों की कटाई में भी कमी आई है।

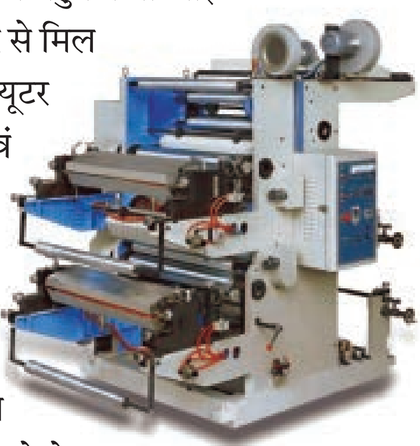

कागज बड़ी ही उपयोगी वस्तु है। पढ़ने के बाद हम कागज को जहाँ-तहाँ फेंक देते हैं- यह गलत बात है। पढ़ने के बाद कागज को दूसरे रूपों में भी प्रयोग किया जा सकता है। हमें याद रखना चाहिए कि कागज कभी रद्दी नहीं होता। पुनरावर्तन के द्वारा उससे कितनी ही चीजें बनाई जा सकती हैं!

अभ्यास-माला

पाठ से

1. प्रश्नों के लिए दिए गए उत्तरों में से सही उत्तर चुनो :

(क) कागज का आविष्कार किस देश में हुआ था?

(अ) भारत (आ) चीन (इ) जापान (ई) ब्रिटेन

(ख) प्राचीन चीन में किस पेड़ से कागज बनाया जाता था?

(अ) पेपिरस (आ) शहतूत (इ) बाँस (ई) गन्ना

(ग) उत्तम कागज किससे तैयार होता है?

(अ) पेड़ के गूदे से (आ) रेशे से (ग) पत्ते से (ई) छाल से

2. एक वाक्य में उत्तर दो :

(क) कागज किस प्रकार आज हमारी जीवन-चर्या का महत्वपूर्ण अंग बन गया है?

(ख) कागज का आविष्कार किसने किया?

(ग) अंग्रेजी भाषा का 'पेपर' शब्द किस शब्द से बना है।

(घ) पेड़ के रेशों में कौन-कौन से तत्व पाए जाते हैं?

3. संक्षेप में उत्तर दो :

(क) कागज हमारे किस काम आता है?

(ख) चीन के राजा ने साइलुन से क्या कहा था?

(ग) साइलुन ने कागज की खोज कैसे की?

(घ) कागज किन-किन चीजों से बनाया जाता है?

(ङ) कागज के निर्माण से पर्यावरण पर क्या प्रभाव पड़ता है?

4. सत्य कथन के आगे ☑ और गलत कथन के आगे ☒ निशान लगाओ :

(क) सफेद कागज पर सुंदर लिखावट बनती है। ☐

(ख) पहले मनुष्य कागज पर लिखता था। ☐

Copyright SCERT, Assam
not be republished

(ग) साइलुन की खोजों से चीन का राजा नाखुश था। ☐

(घ) कागज बनाने के लिए लुगदी तैयार की जाती है। ☐

(ङ) चीन में आज भी हाथ से कागज बनाया जाता है। ☐

(च) असम के जागीरोड में कागज बनाने का एक बड़ा कारखाना है। ☐

पाठ के आस-पास

1. कागज चीन देश की देन है। चीन ने संसार को और क्या-क्या चीजें दी हैं ?
2. कागज का दोबारा प्रयोग किस-किस काम में किया जा सकता है ?
3. कागज ज्ञान-विज्ञान के विस्तार का महत्वपूर्ण साधन किस प्रकार है ?
4. असम में कागज के कारखाने कहाँ-कहाँ हैं ? विस्तृत जानकारी प्राप्त करो।
5. समूह में बैठकर भारतवर्ष के मानचित्र में कागज उत्पादन के स्थानों को ढूँढ़ो।
6. कागज से क्या-क्या चीजें बनती हैं ? सोचो और पाँच वाक्य लिखो।

भाषा-अध्ययन :

1. आओ, जानें :

जिस शब्द से किसी कार्य के करने या होने का बोध होता है, उसे **क्रिया** कहते हैं।

अब ध्यान से देखो :

(क) संगीता पुस्तक पढ़ती है। (ख) दीपु पत्र लिखता है।

(ग) धीरेन खेलता है। (घ) शिक्षक हिंदी पढ़ाते हैं।

अब तुमलोग नीचे के वाक्यों में से क्रिया-शब्द छाँटकर लिखो :

वाक्य	**क्रिया-शब्द**
(क) लड़के खेलते हैं।	....
(ख) जावेद आम खाता है।	....
(ग) मनीष पुस्तक पढ़ता है।	....
(घ) मीरा गाना गाती है।	....

2. वाक्य में क्रिया-शब्द का प्रयोग कई रूपों में होता है :

Copyright - SCERT, Assam
not to be republished

कर्ता के अनुसार – राजेन विद्यालय गया।

राधा बाजार जाएगी।

कर्म के अनुसार – पंकज ने रोटी खाई।

सायरा ने फल खाया।

अब तुमलोग नीचे के वाक्यों को ध्यान से पढ़ो और उन्हें दिए गए निर्देशानुसार सजाओ :

(क) रहीम खेलता है।

(ख) गीता हँसती है।

(ग) लड़का गाना गाता है।

(घ) महेश ने पत्र लिखा।

(घ) गुरुजी ने हमें हिंदी पढ़ाई।

(ङ) राजू ने कहानी सुनाई।

कर्ता के अनुसार	कर्म के अनुसार
(क)	(क) ....
(ख)	(ख) ....
(ग)	(ग) ....

3. कर्ता के लिंग और वचन के अनुसार क्रिया का रूप इस प्रकार बदलता है :

(क) राम बाजार **गया**। (पुल्लिंग प्रयोग)

सीता बाजार **गई**। (स्त्रीलिंग प्रयोग)

(ख) लड़का **खेलता** है। (एकवचन प्रयोग)

लड़के **खेलते** हैं। (बहुवचन प्रयोग)

अब तुमलोग बॉक्स में लिखे वाक्यों में लिंग और वचन के अनुसार क्रिया के रूप लिखो :

लिंग के अनुसार

(क) लड़की नाचती है।

लड़का .... है।

(ख) मोहन आता है।

मीरा .... है।

वचन के अनुसार

(क) घोड़ा दौड़ता है।

घोड़े .... हैं।

(ख) गाय घास खाती है।

गायें घास ....।

Copyright SCERT Assam not be republished

(ग) गोविंद पढ़ता है।
सीता .... है।

(घ) हितेश दौड़ता है।
शेफाली .... है।

(ग) बगुला उड़ता है।
बगुले .... हैं।

(घ) पत्ता गिरता है।
पत्ते .... ।

आओ, ये भी जानें :

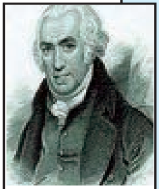
जेम्स वाट

(क) भाप के इंजन का आविष्कार करने वाले – जेम्स वाट
(ख) रेडियो का आविष्कार करने वाले – मारकोनी
(ग) टेलीफोन का आविष्कार करने वाले – ग्राहम बेल
(घ) पौधों में जीवन का आविष्कार करने वाले – जगदीश चंद्र बसु
(ङ) कार का आविष्कार करने वाले – माइकल फोर्ड

मारकोनी

परियोजना :

बच्चो, तुम्हारे जीवन में प्रयोग में आने वाली बहुत–सी चीजें या मशीनें हैं। उनको ढूँढ़ो और चित्र बनाओ।

आओ, पाठ में आए कुछ शब्दों के अर्थ जानें :

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
प्रतिभा	= कुछ नया करने की जन्मजात शक्ति	बेहतर गुणवत्तावाला	= बढ़िया, अच्छे गुणवाला
पीढ़ी	= वंशज	बारीक	= महीन, पतला
रेशा	= पतला भाग	नुकसानदेह	= हानि पहुँचानेवाला
लुगदी	= लकड़ी के गूदे को पानी के साथ पीसकर बनाई गई लेई या पेस्ट	बेतहाशा	= बहुत तेजी से
		संचित	= जमा
		रद्दी	= बेकार
तरकीब	= तरीका, उपाय	पुनरावर्तन	= दुबारा उपयोग में लाना

© SCERT Assam not be republished

पाठ-12

अशोक का शस्त्र-त्याग

(पहला दृश्य)

(एक मैदान में मगध के सैनिकों के शिविर लगे हैं। बीच में मगध की पताका फहरा रही है। पताका के पास ही सम्राट अशोक का शिविर है। संध्या बीत चुकी है। आकाश में तारे चमकने लगे हैं। शिविरों में दीपक जल गए हैं। अपने शिविर में अशोक अकेले टहल रहे हैं। उनके मुख पर चिंता की छाया है। वे कुछ सोचते हुए आसन पर बैठ जाते हैं।)

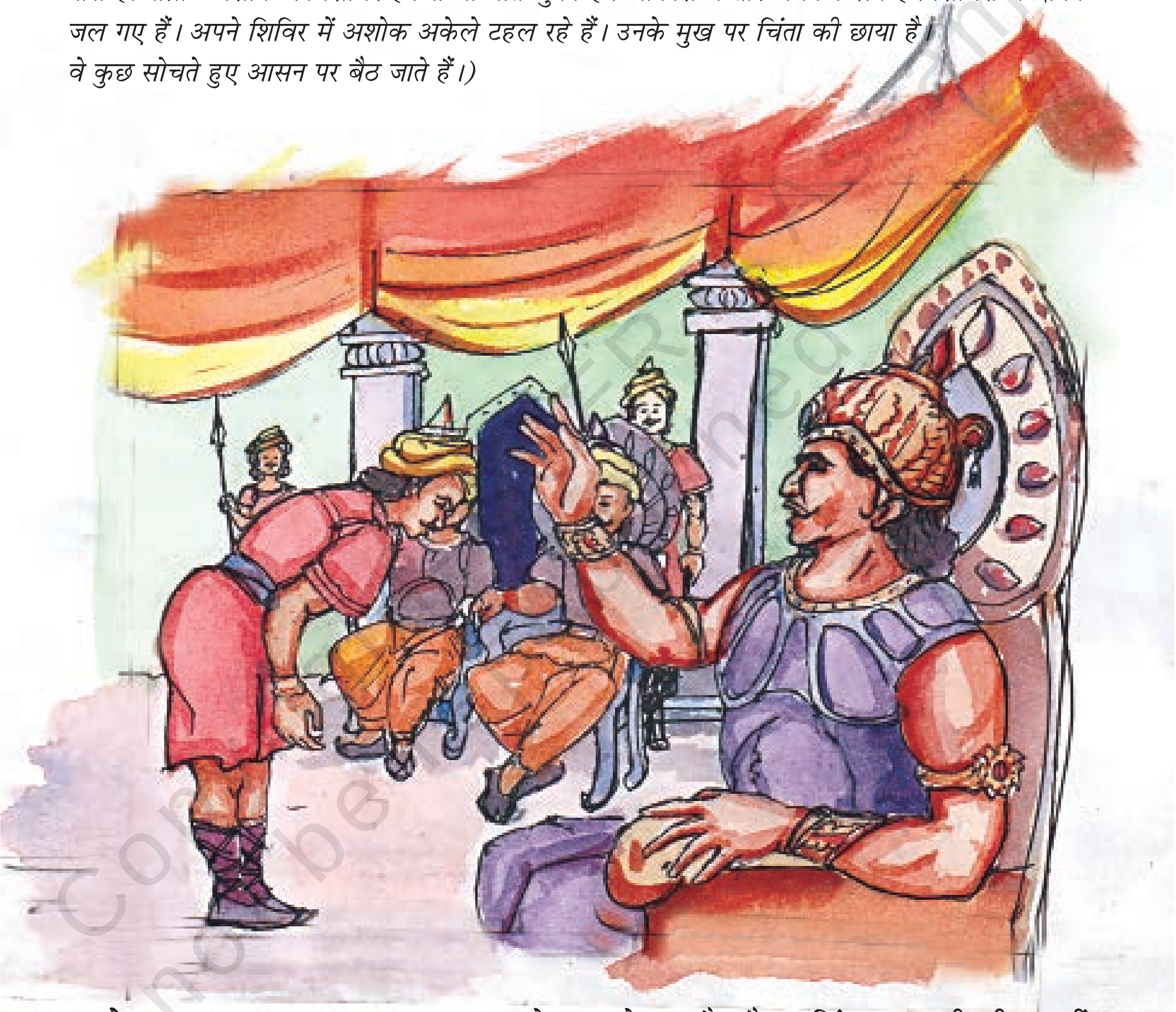

अशोक : *(स्वत:)* आज चार साल से युद्ध हो रहा है और कलिंग आज भी जीता नहीं जा सका है। दोनों ओर के लाखों आदमी मारे गए हैं, लाखों घायल हुए हैं, पर हम आज भी असफल हैं। क्या होगा इसका परिणाम?

द्वारपाल : *(सिर झुकाकर)* राजन! संवाददाता आना चाहता है।

अशोक : आने दो।

संवाददाता : *(प्रवेश कर)* महाराज अशोक की जय हो। शुभ संवाद है। गुप्तचर समाचार लाया है कि कलिंग के महाराज लड़ाई में मारे गए हैं।

अशोक : *(प्रसन्नतापूर्वक)* मारे गए हैं! तो मगध की विजय हुई है! कलिंग जीत लिया गया है! *(संवाददाता चुप रहता है।)*

अशोक : बोलते क्यों नहीं हो तुम? चुप क्यों हो?

संवाददाता : *(धीरे से)* बोलूँ क्या महाराज! कलिंग-दुर्ग के फाटक आज भी बंद हैं। फिर किस मुँह से कहूँ कि कलिंग जीत लिया गया।

अशोक : *(उत्तेजित होकर)* कलिंग के फाटक आज भी बंद हैं?

संवाददाता : हाँ महाराज! कलिंग के फाटक आज भी बंद हैं।

अशोक : *(उत्तेजित होकर खड़े होते हुए)* बंद हैं तो खुल जाएँगे। जाओ, जाकर सेनापति से कह दो कि कल सेना का संचालन मैं स्वयं करूँगा। कल या तो कलिंग के दुर्ग के फाटक खुल जाएँगे या मगध की सेना ही वापस चली जाएगी। जाओ *(हाथ से जाने का संकेत करते हैं)।*

(दूसरा दृश्य)

(दूसरे दिन प्रातःकाल का समय। शस्त्र-सज्जित अशोक घोड़े पर बैठे हैं। उनके पास उनका सेनापति है। सामने कलिंग-दुर्ग है, जिसके फाटक बंद हैं।)

अशोक : मेरे वीर सैनिको! आज चार साल से युद्ध हो रहा है, फिर भी हम इस कलिंग को जीत नहीं पाए हैं। उसके किसी दुर्ग पर मगध की पताका नहीं फहरा रही है। कलिंग के महाराज मारे गए हैं। उनके सेनापति पहले ही कैद हो चुके हैं, फिर भी कलिंग आत्मसमर्पण नहीं कर रहा है। आओ, आज हम अपनी मातृभूमि की शपथ लेकर प्रण करें कि या तो हम कलिंग के दुर्ग पर अधिकार कर लेंगे या सदा के लिए मृत्यु की गोद में सो जाएँगे।

सब सैनिक : *(तलवार खींचकर)* मगध की जय! सम्राट अशोक की जय!

(सहसा दुर्ग का फाटक खुल जाता है। सब आश्चर्य से उधर देखने लगते हैं। उनकी तलवारें खिंची की खिंची रह जाती हैं। शस्त्र-सज्जित स्त्रियों की विशाल सेना फाटक के बाहर निकलने लगती है। सेना के आगे पुरुष भेष में एक वीरांगना है, जो सैनिक भेष में साक्षात् चंडी-सी दिखाई देती है। यह कलिंग महाराज की लकड़ी पद्मा है। स्त्रियों की सेना अशोक

Copyright SCERT, Assam not to be republished

की सेना से कुछ दूरी पर रुक जाती है। अशोक के सिपाही मंत्रमुग्ध-से देखते रह जाते हैं। अशोक भी चकित रह जाते हैं।)

पद्मा : *(आगे बढ़कर अपनी सेना से)* बहिनो! तुम वीर-कन्या, वीर-भगिनी और वीर-पत्नी हो। मुझे तुमसे कुछ नहीं कहना है। जिस सेना ने तुम्हारे पिता, भाई, पुत्र और पति की हत्या की है, वह तुम्हारे सामने खड़ी है। आज उसी से तुम्हें लोहा लेना है। तुम प्रण करो कि जननी जन्म-भूमि को पराधीन होते देखने के पहले तुम सदा के लिए अपनी आँखें बंद कर लोगी।

अशोक : *(स्वत:)* यह कौन है ? क्या साक्षात् दुर्गा कलिंग की रक्षा करने के लिए युद्ध-भूमि में उतर आई है ? शीर्ष सैनिक भी सभी स्त्रियाँ हैं। क्या स्त्रियों से भी युद्ध करना होगा ? क्या अशोक को स्त्रियों का भी वध करना होगा ? ना! ना! मैं स्त्री-वध नहीं करूँगा। मुझे विजय नहीं चाहिए। मैं यह पाप नहीं करूँगा। मैं शस्त्र नहीं चलाऊँगा। *(प्रकट)* सैनिको, स्त्रियों पर हाथ न उठाना। *(आगे बढ़कर)* तुम कौन हो देवी ?

पद्मा : मैं कलिंग महाराज की कन्या हूँ। मैं हत्यारे अशोक की सेना से लड़ने आई हूँ। जब तक मैं हूँ, मेरी ये वीरांगनाएँ हैं, कलिंग के भीतर कोई पैर नहीं रख सकता। कहाँ है अशोक, कहाँ है मेरे पिता का हत्यारा ? मैं उससे द्वंद्व-युद्ध करना चाहती हूँ।

अशोक : अशोक तो मैं ही हूँ राजकुमारी। दोषी मैं ही हूँ। परंतु तुम स्त्री हो, तुम्हारी सेना भी स्त्रियों की है। मैं स्त्रियों पर शस्त्र नहीं चलाऊँगा।

पद्मा : क्यों महाराज ?

अशोक : शास्त्र की आज्ञा है राजकुमारी!

पद्मा : और शास्त्र की आज्ञा है कि तुम निरपराधियों की हत्या करो ? शास्त्र की आज्ञा है कि तुम अपनी विजय-लालसा पूरी करने के लिए लाखों माताओं की गोद सूनी कर दो ? लाखों स्त्रियों की माँग का सिन्दूर पोंछ दो ? फूँक दो उस शास्त्र को, जो तुम्हें यह सिखाता है। मैं तुमसे शास्त्र सीखने नहीं आई हूँ, शस्त्रों से युद्ध करने आई हूँ। तुम हत्यारे हो, मैं अपनी बलि चढ़ाकर तुम्हारी खून की प्यास बुझाने आई हूँ। अपने सिपाहियों से कहो कि तलवार उठाएँ, कलिंग की स्त्रियाँ तुमसे कुछ नहीं चाहतीं, केवल युद्ध चाहती हैं।

Copyright- SCERT, Assam
not to be republished

(अशोक सिर झुका लेते हैं।)

पद्मा : क्यों, सिर क्यों झुका लिया महाराज? मैं युद्ध चाहती हूँ, केवल युद्ध। आज आपके भीषण युद्ध की पूर्णाहूति होगी।

अशोक : बहुत हो चुका राजकुमारी। मैं अब युद्ध नहीं करूँगा कभी युद्ध नहीं करूँगा *(तलवार नीचे फेंक देते हैं।)*

पद्मा : यह क्या महाराज!

अशोक : *(अपने सैनिकों से)* तुम भी अपनी तलवारें नीचे फेंक दो। आज से अशोक तुम्हें कभी किसी पर आक्रमण करने की आज्ञा नहीं देगा। फेंक दो अपनी तलवारें।

(सभी सैनिक अपनी-अपनी तलवारें फेंक देते हैं।)

पद्मा : *(आगे बढ़कर)* मैं भुलावे में नहीं आ सकती महाराज! मैं तुमसे युद्ध करूँगी। मुझे अपने पिता का बदला लेना है।

अशोक : *(सिर झुकाकर)* तो लीजिए बदला राजकुमारी। मैं अपराधी हूँ। जिस अशोक ने लाखों का सिर काटा है और जिस अशोक का सिर आज तक किसी के आगे नहीं झुका, वह आपके आगे नत है। काट लीजिए इस सिर को। मैं हथियार नहीं उठाऊँगा। मेरी प्रतिज्ञा अटल है।

(अशोक सिर झुकाकर खड़े हो जाते हैं।)

पद्मा : तो जाइए महाराज! स्त्रियाँ भी निहत्थों पर वार नहीं करेंगी। आप अपनी प्रतिज्ञा की रक्षा के लिए जीवित रहिए।

(अपनी स्त्रियों की सेना के साथ दुर्ग में चली जाती है।)

(तीसरा दृश्य)

(अशोक और उनके सभी सरदार पीले वस्त्र धारण किए हुए हैं। उनके सामने एक बौद्ध भिक्षु बैठे हुए हैं।)

Copyright SCERT not to be republished

बौद्ध भिक्षु : *(अशोक से)* कहो, मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि ....

अशोक : मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि ....

बौद्ध भिक्षु : जब तक मेरे शरीर में प्राण रहेंगे ....

अशोक : जब तक मेरे शरीर में प्राण रहेंगे ....

बौद्ध भिक्षु : अहिंसा ही मेरा धर्म होगा।

अशोक : अहिंसा ही मेरा धर्म होगा।

बौद्ध भिक्षु : मैं सबसे प्रेम करूँगा और मेरी करुणा का सदाव्रत आप सबको मिलेगा।

अशोक : मैं सबसे प्रेम करूँगा और मेरी करुणा का सदाव्रत आप सबको मिलेगा।

बौद्ध भिक्षु : प्रतिज्ञा करो कि जब तक जीवित रहूँगा, अपनी प्रजा की भलाई करूँगा। सब प्राणियों को सुख और शांति पहुँचाने का प्रयत्न करूँगा। सब धर्मों को समान दृष्टि से देखूँगा।

अशोक : मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं शक्तिभर आपकी आज्ञा का पालन करूँगा।

बौद्ध भिक्षु : बोलो –
बुद्धं शरणं गच्छामि।
धर्मं शरणं गच्छामि।
संघं शरणं गच्छामि।

सभी : बुद्धं शरणं गच्छामि।
धर्मं शरणं गच्छामि।
संघं शरणं गच्छामि।

(पटाक्षेप)

*('अशोक का शस्त्र-त्याग' शीर्षक एकांकी में एकांकीकार **वंशीधर श्रीवास्तव** जी ने सम्राट अशोक की कलिंग विजय तथा उसी महत्वपूर्ण घटना के पश्चात उनके शस्त्र-त्याग के महान संकल्प के विषय पर आलोकपात किया है। कलिंग की सेना चार साल तक मगध की सेना से लड़ती रही। उनके सेनापति बंदी हो गए, महाराजा भी युद्ध में निहत हुए। फिर भी कलिंग के निवासी अपने देश की रक्षा के लिए मर-मिटने तक प्रस्तुत थे। अंत में राजकुमारी पद्मा स्वयं सैन्य संचालन का भार लेकर स्त्रियों की सेना सहित युद्धभूमि में आ पहुँची। इस घटना से प्रभावित होकर सम्राट अशोक ने शस्त्र-त्याग का संकल्प लिया। हिंसा का पथ परिहार कर उन्होंने अहिंसा का पथ अपना लिया।)*

© NCERT not to be republished

अभ्यास-माला

पाठ से

1. पूर्ण वाक्य में उत्तर दो :

(क) मगध और कलिंग के बीच कितने सालों से युद्ध हो रहा था?

(ख) कलिंग के महाराज को युद्धभूमि में वीरगति प्राप्त होने के पश्चात युद्ध का भार किसने संभाला?

(ग) राजकुमारी पद्मा ने अपनी सेना से कौन-सा प्रण करने को कहा?

(घ) राजा अशोक ने किससे अहिंसा की दीक्षा ली?

2. उत्तर लिखो :

(क) सम्राट अशोक की चिंता का मूल कारण क्या था?

(ख) दुर्ग के फाटक खुलने पर अशोक और उसकी सेना के चकित होने का क्या कारण था?

(ग) युद्धभूमि में पद्मा को सामने देखकर अशोक के मन में क्या-क्या विचार उठे?

(घ) बौद्ध भिक्षु ने अशोक से क्या-क्या प्रतिज्ञाएँ करवाई थीं?

(ङ) बौद्ध धर्म की किन्हीं दो वाणियाँ लिखो।

पाठ के आसपास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में दो :

(क) राजकुमारी पद्मा की तरह हमारे देश में अनेक वीरांगनाएँ अपनी आजादी के लिए युद्धभूमि में उतरी थीं। ऐसी किन्हीं पाँच वीरांगनाओं के नाम बताओ।

(ख) "युद्धभूमि में सैनिक सैनिक होता है - स्त्री या पुरुष नहीं?" इस विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करो।

2. आओ, समूह में बैठकर चर्चा करें :

सम्राट अशोक के बारे में बहुत-सी सुंदर-सुंदर पुस्तकें उपलब्ध हैं। तुमलोग पुस्तकालय में जाकर उन पुस्तकों को अवश्य पढ़ो और आपस में चर्चा करो।

भाषा-अध्ययन

1. नीचे दी गई बातों को ध्यानपूर्वक पढ़ो :

हम जब लिखते हैं तो कुछ चिह्नों का प्रयोग करते हैं, जैसे- (।), (?), (,), (;), (!),(" ") आदि। ऐसे चिह्नों को **विराम-चिह्न** कहा जाता है। इन चिह्नों के प्रयोग

Copyright SCERT Assam not to be republished

से लिखी हुई बातों को पढ़ना और उनका सही अर्थ समझना आसान हो जाता है। कुछ विराम-चिह्नों के नाम निम्नलिखित हैं-

पूर्ण विराम	=	।	**निर्देशक**	=	—
अर्ध विराम	=	;	**संयोजक**	=	-
अल्प विराम	=	,	**उद्धरण**	=	' ', " "
प्रश्नसूचक	=	?	**कोष्ठक**	=	( ), [ ], { }
विस्मयादिबोधक	=	!			

आओ, अब नीचे लिखे वाक्यों में विराम-चिह्नों का प्रयोग करके लिखें :

(क) शाबाश सुबोध ने सुंदर अभिनय किया

(ख) गुरुजी ने कहा तुम लय के साथ कविता पढ़ो

(ग) पिताजी बाजार से सेब केले आम और अनन्नास लाए मिठाई नहीं लाए

(घ) करीम के दोस्त कब आए

(ङ) अरे वह अभी तक नहीं पहुँचा

2. इन वाक्यों को भूतकाल में बदलकर फिर से लिखो :

(क) चार साल से युद्ध हो रहा है। ....

(ख) संवाददाता आना चाहता है। ....

(ग) कलिंग के फाटक खुल जाएँगे। ....

3. इन वाक्यों को अपनी माध्यम भाषा में अनुवाद करके शिक्षक को दिखाओ :

(क) मैं कलिंग महाराज की कन्या हूँ।

(ख) कलिंग की स्त्रियाँ तुमसे कुछ नहीं चाहतीं, केवल युद्ध चाहती हैं।

(ग) मैं स्वयं सेना का संचालन करूँगा।

(घ) मैं हथियार नहीं उठाऊँगा।

(ङ) अहिंसा ही मेरा धर्म होगा।

4. शब्दों के क्रम, लिंग, वचन, कारक आदि की त्रुटियों के कारण वाक्य अशुद्ध हो जाता है। अतः वाक्य-रचना के लिए क्रम, लिंग, वचन, कारक आदि का ज्ञान होना आवश्यक है।

आओ, कुछ अशुद्ध वाक्यों को पढ़ें और उनके शुद्ध रूप भी लिखें :

(क) मैं दही को खाया।　　　　(ख) मेरा घर में मेहमान आए हैं।

Copyright SCERT, Assam
not to be republished

(ग) मेरे आँख में एक तिनका पड़ गई। (घ) गुरुजी हमारे घर से वापस लौट गए।

5. **निम्नलिखित वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़ो :**

(क) सैनिको! आज चार साल से युद्ध हो रहा है, फिर भी हम कलिंग को जीत नहीं पाए हैं।

(ख) बहनो! तुम वीर-कन्या, वीर-भगिनी और वीर-पत्नी हो।

उपर्युक्त रेखांकित शब्द संबोधन कारक के हैं। यहाँ सैनिकों तथा बहनों के स्थान पर **सैनिको**! और **बहनो**! लिखे गए हैं। याद रहे कि बहुवचन होने पर भी संबोधन कारक में अनुनासिकता (बिंदी) का प्रयोग कदापि नहीं होता। जैसे- अरे बच्चो!, मेरे भाइयो!, अरे मित्रो! आदि।

योग्यता-विस्तार

1. प्रस्तुत एकांकी का कक्षा में अभिनय करो।
2. सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रसार-प्रचार के लिए क्या-क्या बीड़ा उठाया? उनके विषय में जानकारी हासिल करो।

परियोजना :

सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म ग्रहण करने के बाद प्रजा की भलाई के लिए क्या-क्या कार्य किए थे? इतिहास की पुस्तकों से ज्ञात कर सचित्र परियोजना प्रस्तुत करो और अपने शिक्षक/शिक्षिका को दिखाओ।

आओ, पाठ में आए कुछ शब्दों के अर्थ जानें :

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
फाटक	= दरवाजा	माँग का सिंदूर पोंछ देना	= किसी के पति को मार डालना
संचालन	= परिचालन, नेतृत्व	बुद्धं शरणं गच्छामि	= बुद्ध की शरण में जाता हूँ
फहराना	= लहराना		
सहसा	= एकाएक	धर्मं शरणं गच्छामि	= धर्म की शरण में जाता हूँ
लोहा लेना	= मुकाबला करना		
वार	= आक्रमण	संघं शरणं गच्छामि	= संघ (बौद्ध संघ) की शरण में जाता हूँ
सदाव्रत	= प्रसाद, दान		
गोद सूनी कर देना	= किसी के बच्चे की हत्या कर देना	पटाक्षेप	= परदा गिरना, समाप्ति

Copyright SCERT, Assam
not be republished

पाठ-13

भगतिन मौसी

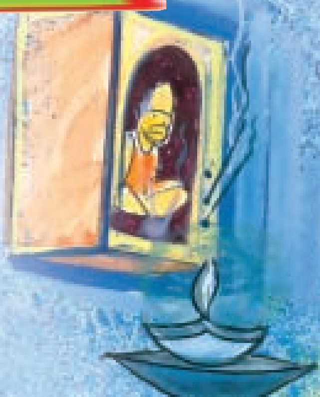

चंदन तिलक लगाकर ओढ़ा
राम नाम का शाल।
कंठी पहने आई बिल्ली
लेकर तुलसी-माल।
बोली - ''चूहो! मैं जाऊँगी
करने तीरथ धाम।
आकर चरन छूओ मौसी के
झुककर करो प्रणाम।
बिल के अंदर क्यों बैठे हो ?
आओ मेरे पास।
मैं भगतिन बन गई आज से
कर लो तुम विश्वास।''
बूढ़ा चूहा अंदर से ही
बोला खाँस-खखार।
''नहीं तुम्हारी बातों में है
मौसी कुछ भी सार।

सौ-सौ चूहे खाकर अब तुम
लोगी हरि का नाम।
वही कहावत - छुरी बगल में
लेकिन मुँह में राम।"
मन ही मन खिसियाई बिल्ली
चली न उसकी चाल।
लगी नोचने खंभा चढ़कर
गली न उसकी दाल।

आओ, निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों को मिलजुल कर गाएँ :

बिल्ली का जन्मदिन

छत पर बैठी बिल्ली मौसी
लगी देखने सपना
एक महल था जहाँ
जन्मदिन मना रही थी अपना।
शेर, लोमड़ी, बंदर, भालू,
घोड़ा, ऊँट, सियार,
भर-भर चूहों के डिब्बे
लाए थे उपहार
मेहमानों की आँख बचाकर
डिब्बे पर जो झपटी
मुँह के बल आ गई सड़क पर
नाक हो गई चपटी।

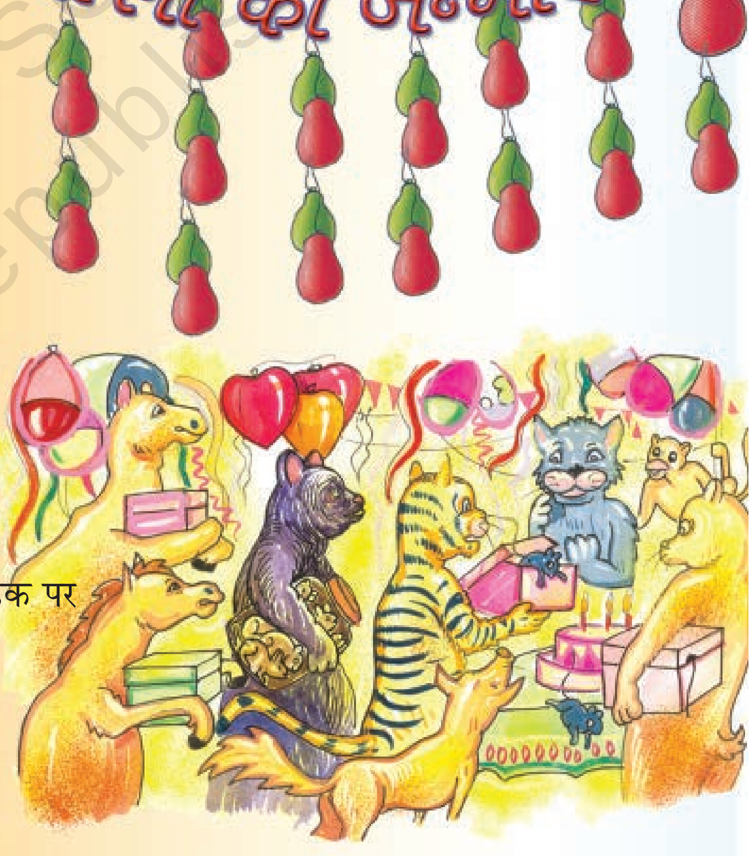

Copyright- SCERT, Assam
not to be republished

अभ्यास-माला

पाठ से

1. संक्षेप में उत्तर दो :

(क) बिल्ली ने राम नाम का शाल क्यों ओढ़ा था ?

(ख) बिल्ली के बुलाने पर भी बूढ़ा चूहा पास क्यों नहीं आया ?

(ग) क्या बिल्ली सचमुच तीर्थ-यात्रा पर जाने वाली थी ? भगतिन बनने के पीछे उसका अभिप्राय क्या था ?

(घ) 'चली न उसकी चाल' यहाँ किसकी कौन-सी चाल की बात की गई है ?

(ङ) इस कविता से हमें कौन-सी सीख मिलती है ?

पाठ के आस-पास

1. (क) बिल्ली की चतुराई के बारे में कोई अन्य कविता व कहानी कक्षा में सुनाओ।

(ख) आजकल कुछ ढोंगी साधु भी लोगों को कई तरह के आश्वासन देकर ठगते हैं। तुम अपने माता-पिता से उनके बारे में जानकारी प्राप्त करो और ऐसे मामलों में किस की तरह सावधानियाँ बरतनी चाहिए, अपने सहपाठियों के बीच चर्चा करो।

(ग) बिल्लियों के साथ बंदर की चतुराई के बारे में एक मजेदार कहानी है। शिक्षक/शिक्षिका से जान लो।

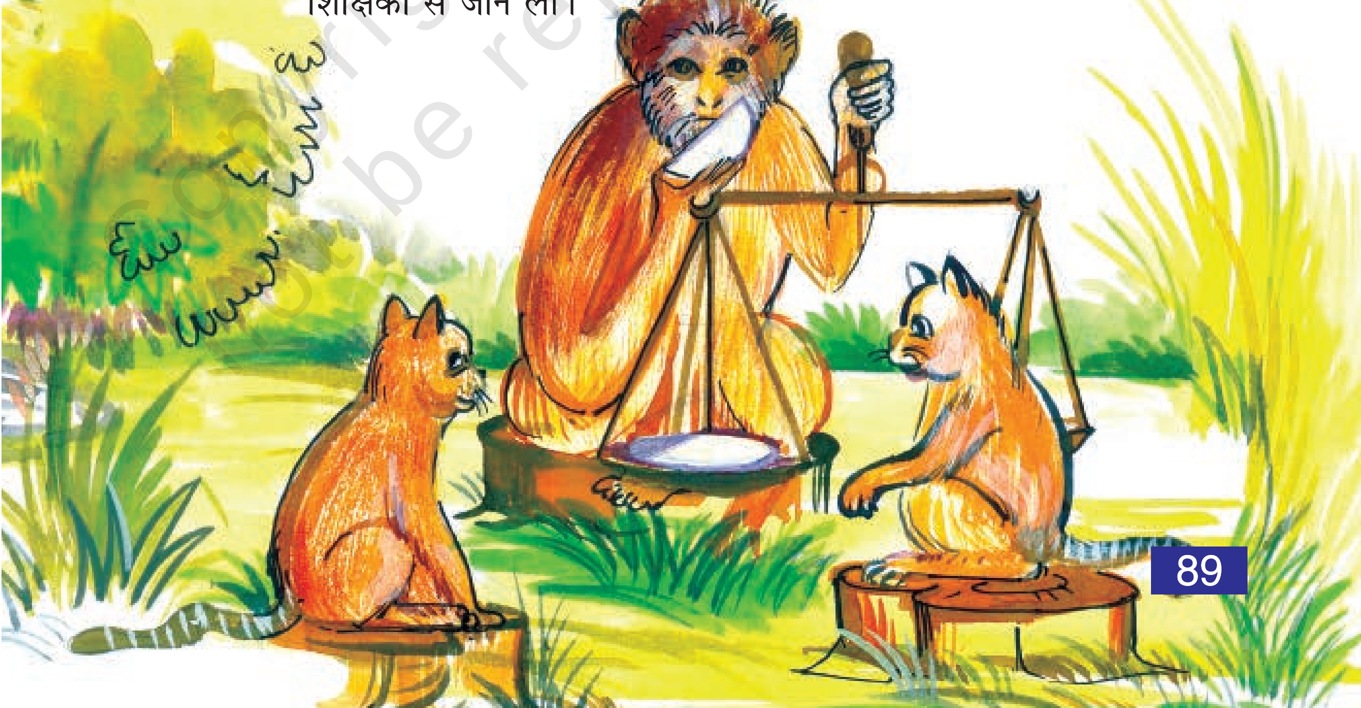

Copyright-SCERT, Assam
not to be republished

2. चित्रों के नाम लिखो और वाक्यों को पूरा करो :

घोंसला	बिल	गुफा	छत्ता

(क) यह .... का .... है।

(ख) यह .... का .... है।

(ग) यह .... का .... है।

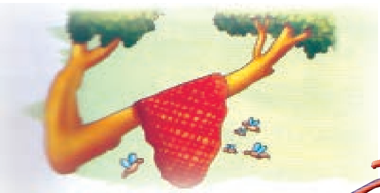

(घ) यह .... का .... है।

आओ, जानें :

बंदर नहीं बनाते घर

बंदर नहीं बनाते घर
घूमा करते इधर-उधर
आकर कहते, खो-खो-खो
रोटी हमें न देते क्यों ?
छीन-झपट ले जाएँगे
बैठ पेड़ पर खाएँगे।

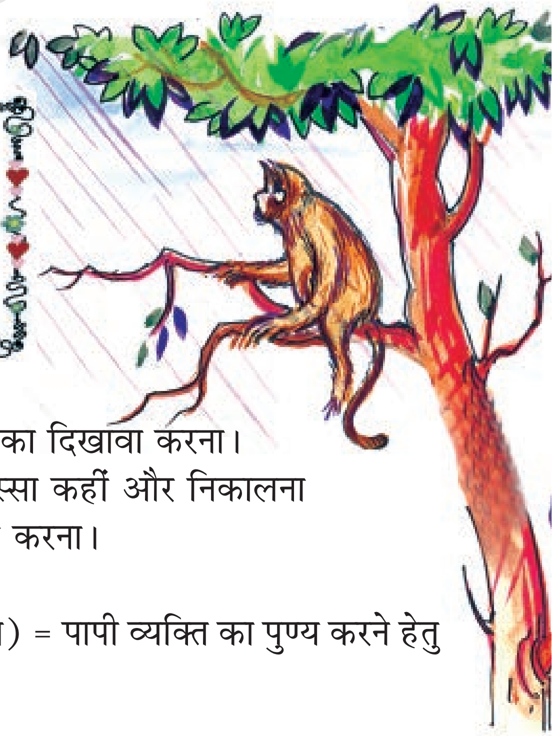

भाषा-अध्ययन

1. आओ, इन वाक्यांशों के अर्थ जानें :

मुँह में राम बगल में छुरी (कहावत) = मित्रता का दिखावा करना।
खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे (कहावत) = गुस्सा कहीं और निकालना
चाल चलना (मुहावरा) = धोखा देने का प्रयत्न करना।
दाल न गलना (मुहावरा) = वश न चलना।
सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को निकली (कहावत) = पापी व्यक्ति का पुण्य करने हेतु निकल पड़ना।

Copyright SCERT, Assam
not to be republished

2. निम्नलिखित वाक्यों का काल-निर्धारण करो :

(क) बिल्ली ने राम नाम का शाल ओढ़ा। [ ]

(ख) मैं तीरथ-धाम करने जाऊँगी। [ ]

(ग) मौसी के चरण छूओ। [ ]

(घ) मैं भगतिन बन गई। [ ]

3. निम्नांकित शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखो :

पास	X	बूढ़ा	X
आज	X	दिन	X
अंदर	X	विश्वास	X

4. नीचे लिखे वाक्यों को ध्यान से पढ़ो और इनमें से विशेषण छाँटकर नीचे दिए गए कलश के चित्र में भरो :

अ) राजीव, एक अच्छी कलम दो।

आ) नहीं, नहीं, नीली कलम खराब है।

इ) लाल कलम ही दो।

ई) रूपम स्वस्थ लड़का है।

उ) वह पढ़ाई में भी तेज है।

5. इन शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखो :

चरण = ...

वृद्ध = ...

हरि = ...

साँप = ...

आओ, पाठ में आए कुछ शब्दों के अर्थ जानें :

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
भगतिन	= भगवान की भक्ति करने वाली	छूना	= स्पर्श करना
		बिल	= चूहों के रहने का स्थान
ओढ़ना	= कपड़े से शरीर को ढँकना	खंभा नोचना	= खंभे पर नाखून मारना
माल	= माला	दाल न गलना	= वश न चलना
तीरथ धाम	= तीर्थस्थान	कंठी	= छोटी गुरियों की माला
चरण	= पैर, पाँव	सार	= सारांश

Copyright-SCERT, Assam
not to be republished

पाठ-14 आओ, स्कूल चलें

पीपल के पेड़ के नीचे चौपाल पर पंचायत बैठी थी। पहले गाँव में स्कूल नहीं था। पंचायत की कोशिश का नतीजा है कि यहाँ अब स्कूल हो गया। गाँव के लोग बहुत खुश थे। जोश में तो स्कूल में बहुत सारे बच्चे पढ़ने आए। पर अब आधे से भी ज्यादा बच्चे गायब रहने लगे हैं। पंचायत इसी बात को लेकर चिंतित थी। उसी पर अब चर्चा हो रही थी। उन लोगों ने मास्टरजी से सलाह लेने का निश्चय किया।

मास्टरजी पंचायत की चिंता का कारण अच्छी तरह समझते थे। वे खुद भी तो परेशान थे। उन्होंने सोचा लोगों को पहले जागरूक बनाना होगा। इस मामले में युवाशक्ति मदद कर सकती है। यही सोचकर उन्होंने अपने कुछ पुराने विद्यार्थी, जो अब नजदीक के कॉलेज में पढ़ रहे हैं, उनसे मिले। इस समस्या पर उन लोगों ने गहराई से सोचा, काफी विचार-विमर्श हुआ। अंत में उन लोगों ने लोगों में जागरूकता लाने के लिए एक नुक्कड़ नाटक खेलने का निश्चय किया।

रविवार का दिन था। बाजार में लोगों की बहुत भीड़ थी। युवक-युवतियों का एक दल वहाँ आ पहुँचा और थोड़ी-सी खुली जगह देखकर वहीं जम गया।

एक ने नारा लगाया- आइए, आइए, अपने अधिकारों के बारे में जानिए, इनका भरपूर लाभ उठाइए।

फिर टोली के सब लोग मिलकर घूम-घूमकर गाने लगे :

पढ़ना-लिखना है सब का अधिकार।
पढ़-लिख कर बन जाएँ सब होशियार।।

धीरे-धीरे उनके पास लोगों की भीड़ जम गई। दल के नेता ने उपस्थित जनता से गोल घेरा बनाकर बीच में कुछ खाली जगह छोड़कर खड़े होने के लिए आह्वान किया। फिर उन्होंने लोगों को संबोधित करते हुए कहा- ''यहाँ उपस्थित देवियो और सज्जनो, भाइयो, बहनो और मित्रो, आप सबको हमारा प्रणाम। आज हम यहाँ आपके समक्ष एक नाटक खेलने आए हैं। आपलोग इसे देखें और बच्चों को पढ़ने-लिखने का जो अधिकार मिलना चाहिए, सरकार उन्हें क्या-क्या सुविधाएँ देती है, पढ़ाई-लिखाई में अब पहले से क्या-क्या परिवर्तन हो चुके हैं- इन बातों पर गौर करें। हम अपनी भूल-चूक के लिए पहले ही क्षमा याचना करते हैं और आपलोगों के सुझावों की प्रार्थना करते हैं।'' इसके बाद नुक्कड़ नाटक की शुरूआत हो गई।

(एक तरफ से मोहनलाल और दूसरी तरफ से गोपाल बाबू आते हैं।)

मोहनलाल : जय राम जी की, गोपाल बाबू। कहाँ से आए?

गोपाल बाबू : जय राम जी की मोहनलाल जी। जरा बिटवा को देख आया एक बार।

मोहनलाल : बिटवा को? क्या हुआ उसे?

गोपाल बाबू : नहीं, नहीं। उसे कुछ नहीं हुआ। शहर के एक मोटर गैरेज में रखकर आया था न। काम भी सीखेगा, दो पैसा भी कमाएगा। बहुत दिन हो गए। एक बार देख आया।

© SCERT, Assam not to be republished

मोहनलाल : तो क्या स्कूल से छुड़वा दिया उसे ?

गोपाल बाबू : हाँ, क्या होगा स्कूल जाकर ? कलक्टर बनना थोड़े ही है। वहीं गैरेज में काम करेगा तो एक दिन अच्छा मैकेनिक बनेगा।

मोहनलाल : पर..........

गोपाल बाबू : पर क्या ? कितने ही बच्चे स्कूल छोड़कर काम कर लगे हुए हैं...... देखिए न, अब्बू मियाँ की दुकान पर वह करीम मुर्गी बेच रहा है। उधर देखिए, रासबिहारी बाबू की किराने की दुकान पर वह रमेश, फिर सरदारजी की चाय की दुकान पर बलवीर.....

मोहनलाल : (गोपाल बाबू को समझाते हुए) पर देखिए गोपाल बाबू, इन्हें अब काम करना नहीं, पढ़ाई करनी चाहिए। सबको यह बात गाँठ बाँध लेनी चाहिए कि बच्चों को काम पर नहीं, स्कूल भेजना चाहिए।

गोपाल बाबू : क्या लाभ होगा इन्हें पढ़ाकर। कौन-सा लाट साहब बनेंगे ये ? घर का खर्चा चलाना मुश्किल है और इनकी पढ़ाई का खर्च भी ऊपर से लाद लें ?

(सुबोध और संध्या का प्रवेश)

सुबोध : अरे गोपाल बाबू आप खर्च की चिंता क्यों करते है ? बच्चों को तो बस स्कूल भेज दें, पढ़ाई का खर्च सरकार का। समझे न ?

संध्या : अब तो आपलोग समझ गए होंगे कि बच्चों को काम पर नहीं लगाना चाहिए, उन्हें बस पढ़ाई के लिए स्कूल भेजना चाहिए। खर्च की चिंता नहीं। सरकार छह साल से चौदह साल की उम्र तक के सभी बच्चों की पढ़ाई का खर्च खुद उठाने का फैसला ले चुकी है। तो इसका फायदा क्यों न उठाएँ ? समझ गए न ?

कई लोग : हाँ, हाँ हम समझ गए। हम समझ गए।

एक आदमी : हाँ, मैं कल से ही बबुआ को फिर स्कूल भेज दूँगा।

दूसरा आदमी : हाँ, हाँ। मैं भी, हम न पढ़े तो क्या हुआ, बच्चों को तो मौका मिलना चाहिए।

सुबोध : बहुत खूब, आपलोग अपने बच्चों को तो पढ़ाइए ही और दूसरों को भी पढ़ाने की सलाह दें। तभी सब बच्चे पढ़ पाएँगे, देश की भी तरक्की होगी। *सब मिलकर गाते हैं :*

Copyright SCERT, Assam
not be republished

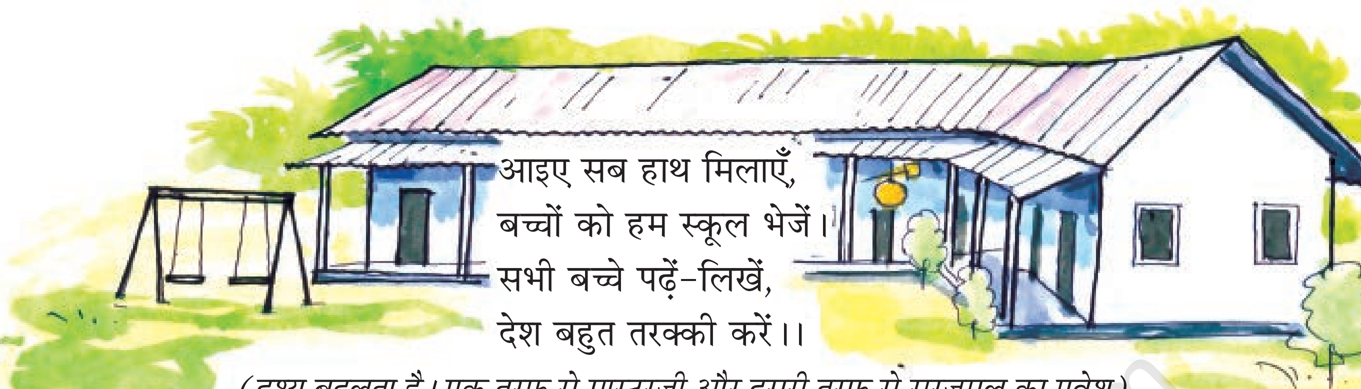

आइए सब हाथ मिलाएँ,
बच्चों को हम स्कूल भेजें।
सभी बच्चे पढ़ें-लिखें,
देश बहुत तरक्की करें।।

(दृश्य बदलता है। एक तरफ से मास्टरजी और दूसरी तरफ से सूरजमल का प्रवेश)

सूरजमल : नमस्ते मास्टरजी!

मास्टरजी : नमस्ते, नमस्ते सूरजमलजी! बहुत दिनों के बाद दर्शन हुए। कहिए आपकी बेटी की पढ़ाई कैसी चल रही है?

सूरजमल : उसे तो स्कूल से छुड़वा दिया मास्टरजी! अब जरा घर का काम-काज भी सीख ले तो काम आएगा। शादी हो जाएगी तो घर का काम-काज ही तो संभालना होगा न। कहाँ नौकरी करने जाएगी वह?

मास्टरजी : नहीं, नहीं। आप गलत सोचते हैं। सिर्फ नौकरी करने के लिए ही पढ़ाई नहीं करनी है। पढ़ाई करने से बहुत फायदे मिलते हैं, समझ बढ़ती है, सूझ-बुझ अच्छी होती है। आखिर बेटी भी तो एक दिन माँ बनेगी न? अपने बच्चे की अच्छी परवरिश के लिए, पढ़ाई-लिखाई के लिए उसे भी तो सोचना होगा न?

सूरजमल : हाँ, हाँ। यह तो अब मुझे भी लग रहा है। इस बार घर लौटकर उसे स्कूल भेजना होगा।

मास्टरजी : बहुत अच्छा। पढ़-लिखकर आपकी बेटी आपका नाम रोशन करेगी। याद रखें- पढ़ाई ही बेटी का असली गहना है।

सब मिलकर गाते हैं :

घर का काम-काज बड़े करें,
बेटी को पढ़ने स्कूल भेजें।
पढ़-लिखकर वह समझदार बनेगी,
माँ-बाप का नाम रोशन करेगी।

(दृश्य फिर बदलता है। मास्टरजी, सुबोध, संध्या और रजनी लोगों को समझाते हैं।)

सुबोध : आजकल तो स्कूल का माहौल ही अलग हो गया है। पढ़ना-लिखना अब मुश्किल नहीं, मजेदार हो गया है।

संध्या : आजकल स्कूल में अध्यापक-अध्यापिका बच्चों को मारते-पीटते नहीं, खेल-खेल में, नाचते-गाते और कहानी सुनाते उन्हें सिखाते हैं।

Copyright - SCERT Assam
not to be republished

रजनी : और हाँ, अब तो इम्तहान का डर भी नहीं रहा। बच्चे जो भी सीखते हैं, उसकी जाँच लगातार होती रहती है, जो कमी होती उसे जरा समय देकर पूरा कर दिया जाता है।

सब मिलकर गाते हैं –

दीदी सबको प्यार से पढ़ाती,
गाना सिखाती और कहानी सुनाती।
खेल-खेल में होती पढ़ाई,
न कोई डर है और न पिटाई।
परीक्षा का भूत भाग गया,
किस्मत का ताला खुल गया।
पढ़ाई नहीं कहीं अधूरी रहती,
प्यार से दीदी बार-बार सिखाती।

श्यामलाल : तो अब बढ़िया है! अपने बच्चे को तो हम खूब पढ़ाएँगे।

गंगाप्रसाद : हाँ, यार। इनका भाग्य अच्छा है। इन्हें जरूर आगे बढ़ना चाहिए।

सुबोध : और देखिए, जो बच्चे देख नहीं सकते उनके लिए भी अब पढ़ना मुश्किल नहीं है। उन बच्चों की पढ़ाई के लिए 'ब्रेल लिपि' में लिखी किताबें मिलती हैं।

रजनी : जो बच्चे शारीरिक रूप से अक्षम हैं उनकी भी पढ़ाई नहीं रुकेगी। उनके आने-जाने और चलने-फिरने के लिए सरकार की तरफ से विशेष सुविधा मिलती है।

मास्टरजी : अब आपलोग ही सोचें, जब सरकार बच्चों की पढ़ाई के लिए इतनी सारी सुविधाएँ दे रही है तो आपलोग इनका फायदा क्यों न उठाएँ?

सब मिलकर गाते हैं –

बच्चों को अब स्कूल जाने से कौन रोके?
ठीक है भाई, ठीक है, चलो सब स्कूल चलें।

नाटक समाप्त हुआ। कुछ लोगों के मन पर इसका असर भी हुआ। उसे देखने के बाद कुछ लोग स्कूल से छुटे हुए अपने बच्चों को फिर से स्कूल भेजने लगे। बाकी लोगों को मास्टरजी के नेतृत्व में युवा दल के लोगों ने फिर समझाया और उनके बच्चों को भी फिर से स्कूल लाने में सफल हो गए। अब उस गाँव में सब बच्चे स्कूल जाते हैं।

– गोलोक चंद्र डेका

Copyright SCERT Assam
not be republished

अभ्यास-माला

पाठ से

1. सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो :

सरकार ने 'शिक्षा का अधिकार' कानून के अनुसार

क) 5 साल से 16 साल तक	ख) 6 साल से 14 साल तक

ग) 6 साल से 18 साल तक	घ) 4 साल से 15 साल तक

के सभी बच्चों के लिए मुफ्त तथा अनिवार्य पढ़ाई की व्यवस्था की है।

2. आजकल बच्चों को स्कूल में

क) किताबें	ख) वर्दी

ग) दोपहर का खाना	घ) ऊपर लिखे गए सभी, मुफ्त उपलब्ध होते हैं।

3. माँ-बाप तथा अभिभावकों को बच्चों को काम पर नहीं, स्कूल भेजना चाहिए, क्योंकि

क) पढ़ने का अधिकार सबका है।	ख) काम ठीक ढंग से कर नहीं पाता।

ग) काम में पैसा कम मिलता है।	घ) काम अकेले करना पड़ता है, पर स्कूल में बहुत साथी मिलते हैं।

4. स्कूल में बच्चे सिर्फ

क) पढ़ते रहते हैं।	ख) खेलते रहते हैं।

ग) पढ़ाई ही नहीं, खेल-कूद, नाच-गान और बहुत कुछ करते हैं।	घ) पढ़ाई और खेल-कूद करते हैं।

5. बच्चों को स्कूल में प्रवेश दिलाने के लिए

क) जन्म प्रमाण-पत्र चाहिए।	ख) स्थायी निवासी प्रमाण-पत्र चाहिए।

ग) उपर्युक्त दोनों प्रमाण-पत्र चाहिए।	घ) उपर्युक्त प्रमाण-पत्र अपरिहार्य नहीं है।

पाठ के आस-पास

1. स्कूल में पढ़ाई करने से क्या-क्या लाभ हो सकते हैं ? इस विषय पर समूह में बैठकर चर्चा करो और निष्कर्ष लिखकर कक्षा में सुनाओ।

2. आजकल सरकार 6 से 14 साल तक के सभी बच्चों की पढ़ाई के लिए काफी सुविधाएँ प्रदान कर रही हैं। उदाहरण के लिए :

Copyright- SCERT Assam
not be republished

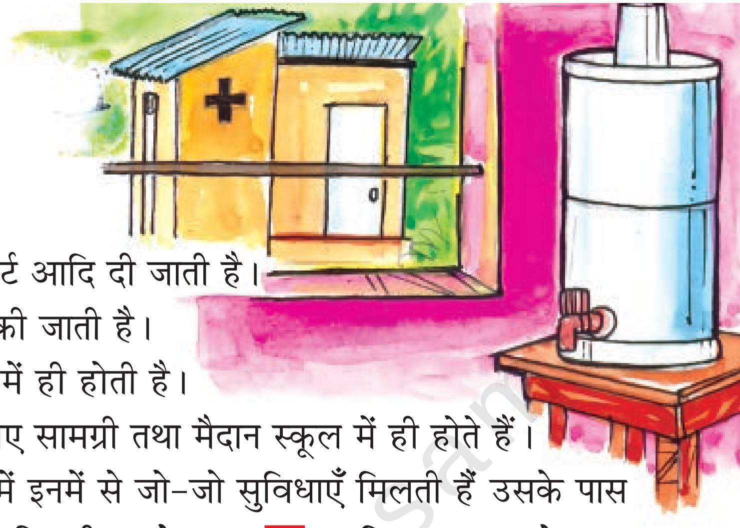

1. किताबें मुफ्त मिलती हैं।
2. वर्दी सबको दी जाती है।
3. पढ़ाने की सुविधा के लिए चार्ट आदि दी जाती है।
4. पीने के पानी की सुव्यवस्था की जाती है।
5. शौचालय की व्यवस्था स्कूल में ही होती है।
6. खेल-कूद की व्यवस्था के लिए सामग्री तथा मैदान स्कूल में ही होते हैं।

तुमलोगों को अपने-अपने स्कूल में इनमें से जो-जो सुविधाएँ मिलती हैं उसके पास ☑ निशान लगाओ, और जो नहीं मिलती उसके पास ☒ निशान लगाओ।

3. स्कूल में तुमलोग पढ़ाई के साथ-साथ और क्या-क्या काम करते हो, उसकी एक तालिका बनाओ :

क्रमांक — **किए जाने वाले काम**

1. कक्षा तथा स्कूल के परिवेश को साफ-सुथरा रखने में हाथ बँटाते हैं।
2. ....
3. ....

कक्षा में पढ़ाई के साथ-साथ कहानी, कविता, गीत आदि सुनाने के कार्य भी हो सकते हैं।

भाषा-अध्ययन

1. उदाहरण के अनुसार क्रिया रूपों से निम्नलिखित तालिका को पूर्ण करो :

क्रिया	भूतकाल	वर्तमान काल	भविष्यत् काल
आना	आया	आता	आएगा
खाना			
पढ़ना			
चलना			
खेलना			

2. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके फिर से लिखो : 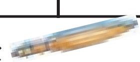

क) हम खाना खाए थे।
ख) मामाजी वापस लौट आए है।
ग) वह चरम रोग से पीड़ित है।
घ) यह मेरे को मालूम नहीं।
ङ) उसके दो मामे हैं।
च) मेरी माताजी विद्वान है।

Copyright- SCERT, Assam not be republished

3. **निम्नलिखित मुहावरों का प्रयोग करके वाक्य बनाओ :**

आग बबूला होना, ईद का चाँद होना, खून-पसीना एक करना, चार चाँद लगना

योग्यता-विस्तार

1. **क्या तुमलोगों की कक्षा के कोई-कोई विद्यार्थी काम की वजह से कक्षा में नहीं आ पाते ? अगर ऐसा हो, तो उनके नाम लिखो और साथ ही कक्षा में न आ पाने का कारण भी लिखकर रखो :** 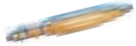

क्रमांक	नाम	कक्षा में अनुपस्थिति का कारण
1.	....	....
2.	....	....

2. **पढ़ने-लिखने के बहुत फायदे हैं। लोग इससे बहुत कुछ जरूरी बातें जान सकते हैं। जैसे-**

अगर तुम्हें या तुम्हारे आस-पास

➢ किसी को कोई कीड़ा काट ले, ➢ किसी को चोट लग जाए,

➢ किसी की आँख में कुछ पड़ जाए, ➢ किसी की नाक से खून बहने लगे,

तब क्या करना उचित है ?

कक्षा में इन पर चर्चा करो। हो सके तो किसी नर्स या डॉक्टर को कक्षा में आमंत्रित करके बातें करो।

आओ, पाठ में आए कुछ शब्दों के अर्थ जानें :

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
सलाह	= परामर्श	तरक्की	= उन्नति, विकास
जागरूक	= सचेत	परवरिश	= पालन-पोषण
नजदीक	= पास, निकट	माहौल	= परिवेश
नुक्कड़ नाटक	= प्रेक्षागृह अथवा मंच के स्थान पर रास्ते के किनारे या चौराहे आदि पर किए जाने वाले नाटक का एक रूप	इम्तहान	= परीक्षा
		किस्मत	= भाग्य
		ब्रेल लिपि	= अंधे लोगों के लिए बनाई गई एक विशेष लिपि जिसमें अक्षरों को उंगलियों के स्पर्श से अनुभव करके पढ़ा जा सकता है।
बिटवा	= 'बेटा' के बोलचाल का रूप		

Copyright-SCERT, Assam
not be republished

पाठ-15 तुम कब जाओगे, अतिथि

(प्राचीन काल से हमारे देश में अतिथि को देवता समान माना जाता है। इसलिए यहाँ 'अतिथिदेवो भव' की उक्ति लोकप्रिय रही है। इसी संस्कार के कारण आज भी हमारे देश के लोग अतिथि-सत्कार को बहुत महत्व देते हैं। लोगों की इसी भावना से लाभ उठाने के लिए कुछ स्वार्थी लोग दूसरों के घर अतिथि बनकर जाते हैं। उनके अतिथि-सत्कार के सामर्थ को अनदेखा करके बिना प्रयोजन के उनके घर अधिक समय तक ठहरते हैं। इसके फलस्वरूप गृहस्थ को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इसी बात पर व्यंग्य करते हुए लेखक ने ऐसे स्वार्थी लोगों को चेतावनी दी है, ताकि इनके कारण लोग अन्य अतिथियों के साथ दुर्व्यवहार न करें।)

आज तुम्हारे आगमन के चतुर्थ दिवस पर यह प्रश्न बार-बार मन में घुमड़ रहा है- तुम कब जाओगे, अतिथि?

तुम जहाँ आराम से बैठे शरबत पी रहे हो, उसके ठीक सामने एक कैलेंडर है। देख रहे हो न! इसकी तारीखें अपनी सीमा में नम्रता से फड़फड़ाती रहती हैं। विगत दो दिनों से मैं तुम्हें दिखाकर तारीखें बदल रहा हूँ। तुम जानते हो, अगर तुम्हें हिसाब लगाना आता है कि यह चौथा दिन है, तुम्हारे सतत आतिथ्य का चौथा भारी दिन! पर तुम्हारे जाने की कोई संभावना प्रतीत नहीं होती। लाखों मील लंबी यात्रा करने के बाद वे दोनों एस्ट्रॉनाट्स भी इतने समय चाँद पर नहीं रुके थे, जितने समय तुम एक छोटी-सी यात्रा कर मेरे घर आए हो। तुम अपने भारी चरण-कमलों की छाप मेरी जमीन पर अंकित कर चुके, तुमने एक अंतरंग निजी संबंध मुझसे स्थापित कर लिया, तुमने मेरी आर्थिक सीमाओं की बैंजनी चट्टान देख ली, तुम मेरी काफी मिट्टी खोद चुके। अब तुम लौट जाओ, अतिथि! तुम्हारे जाने के लिए यह उच्च समय अर्थात हाईटाइम है। क्या तुम्हें तुम्हारी पृथ्वी नहीं पुकारती?

उस दिन जब तुम आए थे, मेरा हृदय किसी अज्ञात आशंका से धड़क उठा था। अंदर-ही-अंदर कहीं मेरा बटुआ काँप गया। उसके बावजूद एक स्नेह-भीगी मुस्कराहट के साथ मैं

तुमसे गले मिला था और मेरी पत्नी ने तुम्हें सादर नमस्ते किया था। तुम्हारे सम्मान में ओ अतिथि, हमने रात के भोजन को एकाएक उच्च-मध्यम वर्ग के डिनर में बदल दिया था। तुम्हें स्मरण होगा कि दो सब्जियों और रायते के अलावा हमने मीठा भी बनाया था। इस सारे उत्साह और लगन के मूल में एक आशा थी। आशा थी कि दूसरे दिन किसी रेल से एक शानदार मेहमाननवाजी की छाप अपने हृदय में ले तुम चले जाओगे। हम तुमसे रुकने के लिए आग्रह करेंगे, मगर तुम नहीं मानोगे और एक अच्छे अतिथि की तरह चले जाओगे। पर ऐसा नहीं हुआ! दूसरे दिन भी तुम अपनी अतिथि-सुलभ मुसकान लिए घर में ही बने रहे। हमने अपनी पीड़ा पी ली और प्रसन्न बने रहे। स्वागत-सत्कार के जिस उच्च बिंदु पर हम तुम्हें ले जा चुके थे, वहाँ से नीचे उतर हमने फिर दोपहर के भोजन को लंच की गरिमा प्रदान की और रात्रि को तुम्हें सिनेमा दिखाया। हमारे सत्कार का यह आखिरी छोर है, जिससे आगे हम किसी के लिए नहीं बढ़े। इसके तुरंत बाद भावभीनी विदाई का वह भीगा हुआ क्षण आ जाना चाहिए था, जब तुम विदा होते और हम तुम्हें स्टेशन तक छोड़ने जाते। पर तुमने ऐसा नहीं किया।

तीसरे दिन की सुबह तुमने मुझसे कहा, "मैं धोबी को कपड़े देना चाहता हूँ।"

यह आघात अप्रत्याशित था और इसकी चोट मार्मिक थी। तुम्हारे सामीप्य की बेला एकाएक यूँ रबड़ की तरह खींच जाएगी, इसका मुझे अनुमान न था। पहली बार मुझे लगा कि अतिथि सदैव देवता नहीं होता, वह मानव और थोड़े अंशों में राक्षस भी हो सकता है।

"किसी लॉण्ड्री पर दे देते हैं, जल्दी धुल जाएँगे।" मैंने कहा। मन ही मन एक विश्वास पल रहा था कि तुम्हें जल्दी जाना है।

"कहाँ है लॉण्ड्री?"

"चलो चलते हैं।" मैंने कहा और अपनी सहज बनियान पर औपचारिक कुर्ता डालने लगा।

"कहाँ जा रहे हैं?" पत्नी ने पूछा।

"इनके कपड़े लॉण्ड्री पर देने हैं।" मैंने कहा।

मेरी पत्नी की आँखें एकाएक बड़ी-बड़ी हो गईं। आज से कुछ बरस पूर्व उनकी ऐसी आँखें देख मैंने अपने अकेलेपन की यात्रा समाप्त कर बिस्तर खोल दिया था। पर अब जब वे ही आँखें बड़ी होती हैं तो मन छोटा होने लगता है। वे इस आशंका और भय से बड़ी हुई थीं कि अतिथि अधिक दिनों तक ठहरेगा।

और आशंका निर्मूल नहीं थी, अतिथि! तुम जा नहीं रहे। लॉण्ड्री पर दिए कपड़े धुलकर आ गए और तुम यहीं हो। तुम्हारे भरकम शरीर से सलवटें पड़ी चादर बदली जा चुकी और तुम यहीं हो। तुम्हें देखकर फूट पड़ने वाली मुस्कराहट धीरे-धीरे फीकी पड़कर अब

Copyright SCERT, Assam not to be republished

लुप्त हो गई है। ठहाकों के रंगीन गुब्बारे, जो कल तक इस कमरे के आकाश में उड़ते थे, अब दिखाई नहीं पड़ते। बातचीत की उछलती हुई गेंद चर्चा के क्षेत्र के सभी कोनलों से टप्पे खाकर

फिर सेंटर में आकर चुप पड़ी है। अब इसे न तुम हिला रहे हो, न मैं। मैं उपन्यास पढ़ रहा हूँ और तुम फिल्मी पत्रिका के पन्ने पलट रहे हो। शब्दों का लेन-देन मिट गया और चर्चा के विषय चुक गए। परिवार, बच्चे, नौकरी, फिल्म, राजनीति, रिश्तेदारी, तबादले, पुराने दोस्त, परिवार-नियोजन, महँगाई, साहित्य और यहाँ तक कि आँख मार-मारकर हमने पुरानी प्रेमिकाओं का भी जिक्र कर लिया और अब एक चुप्पी है। सौहार्द अब शनैः - शनैः बोरियत में रूपांतरित हो रहा है। भावनाएँ गालियों का स्वरूप ग्रहण कर रही हैं, पर तुम जा नहीं रहे। किस अदृश्य गोंद से तुम्हारा व्यक्तित्व यहाँ चिपक गया है, मैं इस भेद को सपरिवार नहीं समझ पा रहा हूँ। बार-बार यह प्रश्न उठ रहा है- तुम कब जाओगे, अतिथि?

कल पत्नी ने धीरे से पूछा था, "कब तक टिकेंगे ये?"

मैंने कंधे उचका दिए, "क्या कह सकता हूँ!"

"मैं तो आज खिचड़ी बना रही हूँ। हल्की रहेगी।"

"बनाओ।"

सत्कार की ऊष्मा समाप्त हो रही थी। डिनर से चले थे, खिचड़ी पर आ गए। अब भी अगर तुम अपने बिस्तर को गोलाकार रूप नहीं प्रदान करते तो हमें उपवास तक जाना होगा। तुम्हारे-मेरे संबंध एक संक्रमण के दौर से गुजर रहे हैं। तुम्हारे जाने का यह चरम क्षण है। तुम जाओ न अतिथि!

तुम्हें यहाँ अच्छा लग रहा है न! दूसरों के यहाँ अच्छा लगता है। अगर बस चलता तो सभी लोग दूसरों के यहाँ रहते, पर ऐसा नहीं हो सकता। अपने घर की महत्ता के गीत इसी कारण गाए गए हैं। होम को इसी कारण स्वीट-होम कहा गया है कि लोग दूसरे के होम की स्वीटनेस को काटने न दौड़ें। तुम्हें यहाँ अच्छा लग रहा है, पर सोचो प्रिय, कि शराफत भी कोई चीज होती है और गेट आउट भी एक वाक्य है, जो बोला जा सकता है।

अपने खर्राटों से एक और रात गुंजायमान करने के बाद कल जो किरण तुम्हारे बिस्तर पर आएगी वह तुम्हारे यहाँ आगमन के बाद पाँचवें सूर्य की परिचित किरण होगी। आशा है, वह तुम्हें चूमेगी और तुम घर लौटने का सम्मानपूर्ण निर्णय ले लोगे। मेरी सहनशीलता की वह अंतिम सुबह होगी। उसके बाद मैं स्टैंड नहीं कर सकूँगा और लड़खड़ा जाऊँगा। मेरे अतिथि, मैं जानता हूँ कि अतिथि देवता होता है, पर आखिर मैं भी मनुष्य हूँ। मैं कोई तुम्हारी तरह देवता नहीं। एक देवता और एक मनुष्य अधिक देर साथ नहीं रहते। देवता दर्शन देकर लौट जाता है। तुम लौट जाओ अतिथि! इसी में तुम्हारा देवत्व सुरक्षित रहेगा। यह मनुष्य अपनी वाली पर उतरे, उसके पूर्व तुम लौट जाओ!

उफ़, तुम कब जाओगे, अतिथि?

– शरद जोशी

अभ्यास-माला

पाठ से

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्य में दो :

(क) लेखक अतिथि को दिखाकर कैलेंडर की तारीखें क्यों बदल रहे थे?

(ख) लेखक तथा उनकी पत्नी ने मेहमान का स्वागत कैसे किया था?

(ग) मेहमान के स्वागत में दोपहर के भोजन को कौन-सी गरिमा प्रदान की गई थी?

(घ) तीसरे दिन सुबह अतिथि ने क्या कहा?

(ङ) सत्कार की ऊष्मा समाप्त हो जाने पर क्या हुआ?

2 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दो :

(क) मेहमान के आते ही लेखक पर क्या प्रतिक्रिया हुई?

(ख) मेहमान के स्वागत में रात्रि-भोज को किस प्रकार गरिमापूर्ण बनाया गया था?

(ग) लेखक के लिए कौन-सा आघात अप्रत्याशित था और क्यों?

(घ) लेखक का सौहार्द बोरियत में क्यों बदल गया?

(ङ) अतिथि कब देवता होता है और कब राक्षस हो जाता है?

3. उत्तर दो :

(क) लेखक ने अतिथि को विदा लेने का संकेत किन-किन उपायों से दिया?

(ख) अतिथि के अपेक्षा से अधिक रुक जाने पर लेखक के मन में क्या-क्या प्रतिक्रियाएँ हुईं, उन्हें छाँटकर क्रम से लिखो।

पाठ के आस-पास

1. घर में जब कोई अतिथि आता है तो अंतरंग क्षणों में उससे कैसी बातें होती हैं?

योग्यता-विस्तार

1. अतिथि से संबंधित अनेक लोककथाएँ प्रचलित हैं। बुजुर्गों से तथा पुस्तकालय की सहायता से ऐसी लोककथाएँ एकत्र करो और कक्षा में सुनाओ।
2. अपने घर के कामों की सूची बनाओ। उनको घर के कौन-कौन से सदस्य करते हैं, उसके अनुरूप नीचे की तालिका में ☑निशान लगाओ :

काम	**मैं**	**दादी**	**माँ**	**पिता**	**भाई**	**बहन**	**चाचा**
घर का सामान लाना							
घर की सफाई करना							
खाना पकाना							

भाषा-अध्ययन

1. **निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार परिवर्तित करो :**
   (क) हम तुम्हें स्टेशन तक छोड़ने जाएँगे। (नकारात्मक वाक्य)
   (ख) किसी लॉण्ड्री पर दे देते हैं, जल्दी धुल जाएँगे। (प्रश्नवाचक वाक्य)
   (ग) देवता और मनुष्य अधिक देर साथ नहीं रहते। (सकारात्मक वाक्य)
2. **समझो और प्रयोग करो :**
   (क) निम्नलिखित वाक्यों में 'चुकना' क्रिया का प्रयोग ध्यान से देखो :
   (अ) तुम अपने भारी चरण-कमलों की छाप मेरी जमीन पर अंकित कर **चुके**।
   (आ) तुम मेरी काफी मिट्टी खोद **चुके**।
   (इ) हम तुम्हें आदर-सत्कार के उच्च बिंदु पर ले जा **चुके** थे।
   (ई) शब्दों का लेन-देन मिट गया और चर्चा के विषय **चुक** गए।

अब 'पढ़ना', 'खेलना', 'खाना', 'देखना' क्रियाओं के साथ 'चुकना' क्रिया का प्रयोग करके वाक्य बनाओ और शिक्षक-शिक्षिका को दिखाओ।

पाठ में आए कुछ शब्दों के अर्थ जानें :

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
सतत	=	लगातार	सामीप्य	=	निकटता
एस्ट्रॉनाट्स	=	अंतरिक्ष यात्री	औपचारिक	=	रीति के अनुसार
बैंजनी	=	बैंगनी, बैंगन के रंग वाली	निर्मूल	=	बिना मूल (जड़) के
मेहमाननवाजी	=	अतिथि-सत्कार	कोनलों से	=	कोनों से
छोर	=	किनारा, सीमा	सौहार्द्र	=	सरल हृदय का भाव
भावभीनी	=	भाव से पूर्ण	शनैः-शनैः	=	धीरे-धीरे
मार्मिक	=	मर्मस्पर्शी	गुंजायमान	=	गूँजता हुआ

Copyright SCERT Assam not to be republished

पाठ-16

अमृत वाणी

मधुर बचन है औषधी, कटुक बचन है तीर।
स्रवन द्वार ह्वै संचरै, सालै सकल सरीर।।1।।
बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजा आपना, मुझ-सा बुरा न कोय।।2।।
गुरु कुम्हार सिष कुंभ है, गढ़ि गढ़ि काढ़ै खोट।
अंतर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट।।3।।
जाति न पूछो साधु की, पूछि लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहना दो म्यान।।4।।
निंदक नियरे राखिए, आंगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना, निरमल करै सुभाय।।5।।
दुख में सुमिरन सब करै, सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करै, तो दुख काहे होय।।6।।

– **संत कबीरदास**

तरुवर फल नहिं खात है, सरवर पियहिं न पान।
कहि रहीम पर-काज हित, संपति संचहिं सुजान।।1।।
रहिमन बिपदा हु भली, जो थोरे दिन होय।
हित अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय।।2।।
रहिमन निज मन की बिथा, मन ही राखहु गोय।
सुनि इठिलैंहै सब लोग, बांटि न लैहै कोय।।3।।
रहिमन निज संपति बिना, कोउ न बिपति सहाय।
बिनु पानी ज्यों जलज को, रवि नहिं सकै बचाय।।4।।
रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।
जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तरवारि।।5।।
जे गरीब पर हित करै, ते रहीम बड़ लोग।
कहा सुदामा बापुरो, कृष्ण मिताई जोग।।6।।

– **कवि रहीम**

आओ, जानें :

संत कबीरदास हिंदी के एक लोकप्रिय कवि हैं। उन्होंने जनता के बीच रहकर जनता की भाषा में जनता के लिए कविता की। वे मूलत: एक भक्त-कवि हैं। निर्गुण-निराकार राम उनके आराध्य रहे। 'कबीर' शब्द का अर्थ है- बड़ा, श्रेष्ठ, महान। सचमुच महात्मा कबीरदास महान कवि हैं। उनका जन्म काशी में 1398 ई. को हुआ था। 1518 ई. को मगहर नामक स्थान में उनका देहावसान हुआ। उनकी कविता अमृतमय वाणी के समान है, जिससे हमें अच्छी सीख मिलती है।

संत-कवि कबीरदास का कहना है कि- (1) मधुर वचन औषधि के समान है, जबकि कड़वा वचन नुकीले वाण की तरह है। यह वाण कान के रास्ते से भीतर घुसता है और पूरे शरीर को दु:ख देता है। (2) जब मैं बुरा आदमी ढूँढ़ने निकला, तो एक भी बुरा व्यक्ति नहीं मिला। जब मैंने अपने दिल में खोजा, तो पाया कि मुझ जैसा बुरा और कोई नहीं। (3) गुरु कुम्हार की तरह और शिष्य घड़े की तरह होते हैं। गुरु-रूपी कुम्हार भीतर से हाथ का सहारा देकर बाहर धीरे-धीरे प्रहार करते हुए शिष्य-रूपी घड़े को बनाते हैं और उसकी कमियों को दूर करते हैं। (4) साधु की जाति के बारे में नहीं, बल्कि उनके ज्ञान के बारे में पूछना चाहिए। तलवार को रखे जाने वाले म्यान को नहीं, अपितु तलवार को महत्व दिया जाना चाहिए। (5) निंदा करने वाले व्यक्ति को आंगन में कुटिया बनाकर पास ही रखना चाहिए। तब वह व्यक्ति बिना पानी और साबुन के हमारे स्वभाव को निर्मल बनाता रहेगा। (6) सब लोग दु:ख की स्थिति में अपने आराध्य का स्मरण करते हैं, सुख की स्थिति में कोई भी उनको याद नहीं करता। अगर कोई सुख की स्थिति में भी अपने आराध्य का स्मरण करे, तो उसे भला कैसे दु:ख होगा। कबीरदास जी के ये कथन बिल्कुल सच हैं।

नीति के कवि रहीम जी का पूरा नाम है- **अब्दुर्रहीम खानखाना**। उनका जन्म 1556 ई. को हुआ था। वे मुगल सम्राट अकबर के मंत्री बैरम खाँ के पुत्र थे। वे एक तरफ राज-कार्य में निपुण थे, तो दूसरी तरफ अच्छी कविता भी करते थे। कवि गोस्वामी तुलसीदास से उनकी गहरी मित्रता थी। कवि रहीम बड़े दानी भी थे। कहते हैं कि कवि गंग को उनकी एक रचना पर रहीम जी ने छत्तीस लाख रुपए दिए थे। 1638 ई. को उनकी मृत्यु हुई।

कवि रहीम के नीतिपरक दोहे अमृतमय वचनों के समान हैं। उनसे हमें तरह-तरह की सीखें मिलती हैं। उन्होंने कहा है कि- (1) पेड़ अपना फल नहीं खाता, सरोवर अपना जल नहीं पीता। इसी तरह ज्ञानी व्यक्ति भी दूसरों की भलाई के लिए संपत्ति का संचय करते हैं। (2) कम दिनों के लिए आने वाली विपत्ति भली होती है। क्योंकि ऐसे समय में हमारे हित और अहित चाहने वालों की पहचान होती है। (3)हमें अपने मन की व्यथा मन में ही छिपाकर रखनी चाहिए। ऐसा इसलिए कि दूसरे व्यक्ति सुनकर नखरे ही करते हैं, कोई उसे बाँट नहीं लेता। (4) विपत्ति के समय अपना साधन ही काम आता है, कोई दूसरा हमारा सहायक नहीं बनता। ऐसा कमल जिसके आस-पास जल न हो, सूरज उसकी रक्षा नहीं कर सकता। (5) बड़े को देखकर छोटे को छोड़ नहीं देना चाहिए। क्योंकि जहाँ सुई काम आती है, वहाँ तलवार क्या करेगी। (6) गरीबों की मदद करने वाले ही सच्चे अर्थ में बड़े लोग होते हैं। गरीब ब्राह्मण सुदामा और द्वारका के अधिपति श्रीकृष्ण में कहा बराबरी थी? परंतु कृष्ण ने बचपन की मित्रता को आगे भी निबाहा। कवि रहीम के ये सारे कथन आज भी हमारे लिए बड़े ही उपयोगी हैं।

Copyright SCERT Assam
not to be republished

अभ्यास-माला

पाठ से

1. सही कथन के आगे ☑ और गलत कथन के आगे ☒ निशान लगाओ :

(क) मधुर वचन औषधि के समान आरामदायक होता है।

(ख) निंदा करने वाले व्यक्ति से हमें दूर रहना चाहिए।

(ग) ज्ञानी व्यक्ति अपने लिए धन का संचय करते हैं।

(घ) हमें अपना दु:ख अपने मन में ही छिपाकर रखना चाहिए।

(ङ) सुई का काम तलवार कर सकती है।

(च) गरीबों की मदद करने वाले ही सच्चे अर्थ में बड़े व्यक्ति होते हैं।

2. पूर्ण वाक्य में उत्तर दो :

(क) संत कबीरदास के आराध्य कौन थे ?

(ख) 'कबीर' शब्द का अर्थ क्या है ?

(ग) कवि के अनुसार क्या करने पर हमारे जीवन में दु:ख कभी नहीं आएगा ?

(घ) कवि रहीम का पूरा नाम क्या था ?

(ङ) किनके साथ कवि रहीम की गहरी मित्रता थी ?

(च) श्रीकृष्ण ने किसके साथ बचपन की मित्रता निभायी थी ?

3. संक्षेप में उत्तर दो :

(क) बुरे व्यक्ति की खोज में निकलने पर कवि को क्या अनुभव हुआ ?

(ख) अपने शिष्य को बनाने में गुरु किस प्रकार कुम्हार की भूमिका निभाते हैं ?

(ग) साधु की जाति के बारे में पूछने के संदर्भ में कवि ने क्या कहा है ?

(घ) कवि रहीम ने ऐसा क्यों कहा है कि थोड़े दिनों के लिए आने वाली विपत्ति अच्छी होती है ?

(ङ) कवि के अनुसार हमें मन की व्यथा किसलिए मन में ही छिपाकर रखनी चाहिए ?

Copyright SCERT Assam
not to be republished

4. लघु उत्तर दो :

(क) संत कबीरदास का परिचय दो।

(ख) कवि रहीम का परिचय प्रस्तुत करो।

(ग) निम्नांकित साखी का सरल अर्थ लिखो :

मधुर बचन है औषधि, कटुक बचन है तीर।
स्रवन द्वार है संचरै, सालै सकल शरीर।।

(घ) निम्नलिखित दोहे को गद्य-रूप दो :

रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि।
जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तरवारि।।

5. निम्नांकित दोहों के भावार्थ लिखो :

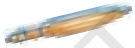

(क) निंदक नियरे राखिए, आंगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना, निरमल करै सुभाय।।

(ख) रहिमन निज संपति बिना, कोउ न बिपति सहाय।
बिनु पानी ज्यों जलज को, रवि नहिं सकै बचाय।।

पाठ के आस-पास

1. पाठ में आए दोहों को कंठस्थ करो। फिर कबीरदास और रहीम द्वारा रचित ऐसे ही और दोहों का संग्रह करके अपने सहपाठियों के साथ अंत्याक्षरी खेलो।

2. गोस्वामी तुलसीदास के निम्नलिखित दोहे को पढ़ो और समझो :

तुलसी मीठे बचन तें, सुख उपजत चहुँ ओर।
बसीकरन यह मंत्र है. परिहरु बचन कठोर।।

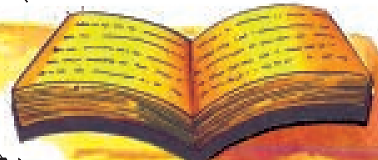

– अब कबीरदास के संबद्ध दोहे के साथ इसकी तुलना करो।

3. पाठ में संकलित रहीम के छठे दोहे में गरीब ब्राह्मण सुदामा और द्वारका के अधिपति श्रीकृष्ण की मित्रता का प्रसंग आया है। श्रीकृष्ण ने अपने बचपन के मित्र सुदामा की निर्धनता दूर की थी। ऐसे ही कवयित्री मीराँबाई पर भी श्रीकृष्ण की असीम कृपा थी। राजघराने की बहू होकर भी कृष्ण-भक्ति में लीन रहने के कारण मीराँबाई के देवर राणा

Copyright - SCERT, Assam not be republished

विक्रमसिंह ने जहर का प्याला और साँप का पिटारा भेजकर उन्हें मरवाना चाहा था। परंतु ऐसी विपत्तियों में प्रभु कृष्ण ने मीराँबाई की रक्षा की थी। वे गाती थीं – 'मीरा के प्रभु गिरधर नागर....... ।'

– अब तुमलोग मीराँबाई के जीवन और उनकी रचनाओं के बारे में अधिक जानकारी एकत्र करो।

भाषा-अध्ययन

1. संत कबीरदास की कविता की भाषा को 'सधुक्कड़ी' अथवा खिचड़ी कहा जाता है। इसमें खड़ीबोली, ब्रज, अवधी, राजस्थानी आदि हिंदी की बोलियों का मिश्रण है। कवि रहीम के दोहों की भाषा ब्रज है। ब्रज वस्तुतः हिंदी भाषा की एक बोली है। हिंदी की मुख्यतः सत्रह बोलियाँ हैं। शिक्षक/शिक्षिका की सहायता से इन बोलियों के नाम जान लो।

2. संस्कृत भाषा से ही कालांतर में हिंदी भाषा का विकास हुआ। परंतु हिंदी में संस्कृत के कुछ शब्द हू-ब-हू प्रयुक्त होते हैं। ऐसे शब्दों को 'तत्सम' (उसके अर्थात संस्कृत के समान) कहते हैं, जैसे- ज्ञान, कर्म, अमृत, वाणी इत्यादि।

अब तुम पाठ में प्रयुक्त निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखो :

बचन, स्रवन, सरीर, सिष, सुमिरन, बिथा

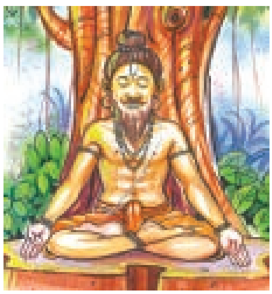

3. **निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक शब्द लिखो :**

बुरा, साधु, ज्ञान, निर्मल, भली, गरीब, मित्र

योग्यता-विस्तार

1. संत कबीरदास ने 'गुरु कुम्हार सिष कुंभ है, गढ़ि गढ़ि काढ़ै खोट' कहकर शिष्य को बनाने में गुरु की महत्वपूर्ण भूमिका की बात की है।

– तुमलोग आगामी 'शिक्षक दिवस' के अवसर पर गुरु-शिष्य संबंध विषय पर सम्यक रूप से चर्चा करो। इस मौके पर अपने विद्यालय के अवकाश-प्राप्त शिक्षक-शिक्षिका के घर जाकर उनका उचित सम्मान करो।

2. कवि रहीम ने कहा है कि पेड़ फल नहीं खाता, बल्कि दूसरों के लिए संचित करके रखता है। इसी प्रकार सरोवर अपना जल नहीं पीता, अपितु दूसरों के लिए बचाकर

Copyright SCERT, Assam
not to be republished

रखता है। ऐसे परोपकारी पेड़ हमें नहीं काटने चाहिए और सरोवर के जल को प्रदूषित नहीं करना चाहिए।

– तुमलोग अपने-अपने इलाके में 'पेड़ की कटाई' और 'जल-प्रदूषण' के विरुद्ध जागरूकता लाने का प्रयास करो।

कवि रहीम ने और कहा है कि ज्ञानी व्यक्ति दूसरों की भलाई के लिए संपत्ति का संचय करते हैं। सचमुच संचय करना एक अच्छी आदत है। तुमलोग भी जेब-खर्च के लिए मिलने वाले पैसों में से थोड़ी बचत करने की कोशिश करो। फिर एकत्रित रकम से पास वाले डाकघर अथवा बैंक में अपने नाम पर बचत खाता खोलो।

आओ, पाठ में आए कुछ शब्दों के अर्थ जानें :

शब्द		अर्थ	शब्द		अर्थ
औषधी	=	औषधि, दवा	गोय	=	छिपाकर
तीर	=	वाण	इठिलैंहै	=	इठलाता है, नखरे करता है,
स्रवन	=	श्रवण, कान			बहाने बनाता है
सालै	=	सालता है, दुःख	जलज	=	कमल, पंकज
		पहुँचाता है	बापुरो	=	बेचारा, निर्धन ब्राह्मण
कोय	=	कोई	मिताई	=	मित्रता
सिष	=	शिष्य	निर्गुण	=	जिनके गुणों की गणना नहीं
कुंभ	=	घड़ा			की जा सकती
बाहै	=	चलाते हैं	देहावसान	=	मृत्यु
नियरे	=	पास, नजदीक	सीख	=	शिक्षा, जानकारी
सुभाय	=	स्वभाव	साखी	=	साक्षी, संत कबीरदास द्वारा
सुजान	=	ज्ञानी व्यक्ति			विरचित दोहे
बिथा	=	व्यथा, दुःख	दोहा	=	हिंदी का एक लोकप्रिय छन्द

Copyright- SCERT, Assam
not be republished

पाठों में निहित योग्यताएँ

पाठ	योग्यताएँ
1. नन्हा-मुन्ना राही हूँ	➲ शुद्ध उच्चारण से और सही लय में गीत गाने की दक्षता ➲ हिंदी की उर्दू शैली में व्यवहार किए जाने वाले कुछ शब्दों के प्रयोग का ज्ञान ➲ देश-प्रेम तथा देश के प्रति अपने कर्तव्य का बोध ➲ भाषा-अध्ययन : वर्ण विच्छेद, अशुद्ध शब्द शुद्ध करना
2. चार मित्र	➲ कहानी के माध्यम से व्यावहारिकता का ज्ञान प्राप्त करना। ➲ 'मित्रता' का महत्व तथा तात्पर्य समझना। ➲ जीव-जंतुओं की सुरक्षा का ज्ञान, प्राणी-हिंसा को रोकने का बोध ➲ भाषा-अध्ययन : र के विविध रूप, अनुस्वार, अनुनासिक तथा पंचम वर्ण के प्रयोग का ज्ञानर के विविध रूप, अनुस्वार, अनुनासिक तथा पंचम वर्ण के प्रयोग का ज्ञान
3. एक तेजस्वी और दयावान बालक	➲ शुद्ध उच्चारण और उपयुक्त पठन-शैली से पाठ कर पाना ➲ नैतिक मूल्यों की महत्ता तथा मानव समाज में इसकी उपयोगिता का अनुभव करना। ➲ विशिष्ट व्यक्ति, अनुप्रेरक प्रसंग आदि की परिचर्या में भाग लेने की क्षमता। ➲ भाषा-अध्ययन : शब्दों का योग (संधि), उपसर्ग, प्रत्यय, विभक्ति चिह्न - का/के/की (रा/रे/री, ना/ने/नी) के प्रयोग का ज्ञान।
4. मेरी राजस्थान यात्रा	➲ यात्रा, सफर आदि के बारे में जानकारी प्राप्त करना ➲ इससे भिन्न धर्म, भाषा, अंचल, संप्रदाय, रहन-सहन आदि के बारे में जिज्ञासा भाव लाना और समझ पाना ➲ भारतवर्ष के विभिन्न स्तंभ, स्मारक निधि आदि के बारे में जानकारी प्राप्त करना ➲ भाषा-अध्ययन : सकारात्मक, नकारात्मक तथा प्रश्नबोधक वाक्य, समानार्थक तथा विपरीतार्थक शब्द, विभक्ति चिह्न - को तथा से के प्रयोग का ज्ञान
5. जीना-जिलाना मत भूलना	➲ सही उच्चारण और उपयुक्त वाचन शैली में कविता का सस्वर पाठ करना। ➲ अपने मनोभावों और विचारों को हिंदी में लिखकर अभिव्यक्त कर पाना ➲ भाषा-अध्ययन : क्रिया के अनुज्ञा रूप, पर्यायवाची शब्द, वर्तमान काल का ज्ञान
6. चाय : असम की एक पहचान	➲ असम की चाय उद्योग के बारे में जानकारी देना ➲ भाषा-अध्ययन : संज्ञा और उसके भेद
7. हार की जीत	➲ शुद्ध उच्चारण और वाचन-शैली से कहानी पठन की योग्यता ➲ मानविक मूल्यबोध का विकास ➲ जीव-जन्तुओं के प्रति प्यार और सेवा की भावना ➲ भाषा-अध्ययन :लिंग तथा वचन परिवर्तन, भूतकाल का ज्ञान
8. पत्र	➲ अपने मनोभावों और विचारों को उपयुक्त वाक्यों में व्यक्त करना ➲ पारिवारिक पत्र-लेखन की योग्यता ➲ भाषा-अध्ययन : सर्वनाम, भविष्यत काल
9. सुमन एक उपवन के	➲ सही उच्चारण और उपयुक्त वाचन शैली में कविता का सस्वर पाठ करना। ➲ अपने परिवेश में प्राप्त नद-नदी, वस्तुओं आदि पर आधारित विषय को वर्णनात्मक शैली में उपस्थापित कर पाना ➲ भाषा-अध्ययन : पर्यायवाची शब्द, विपरीतार्थक शब्द, विभक्ति चिह्न - में/पर के प्रयोग का ज्ञान

© Copyright SCERT, Assam not be republished

10. स्वतंत्रता संग्राम में पूर्वोत्तर की वीरांगनाएँ

- भिन्न व्यक्तियों की विशिष्ट कथन शैली को सुनकर समझना
- शब्द-कोशों के उपयोग करने की सामर्थ्य
- भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों के प्रति श्रद्धा का भाव रखना
- स्वतंत्रता संग्राम में पूर्वोत्तर भारत की वीरांगनाओं का साहस, त्याग और बलिदान का ज्ञान और अनुभव
- भाषा-अध्ययन :विशेषण, लिंग वचन के अनुसार विशेषण में परिवर्तन, ने विभक्ति चिह्न का प्रयोग

11. कागज की कहानी

- अपने मनोभावों और विचारों को शुद्ध हिंदी में बोल और लिखकर अभिव्यक्त कर पाना
- मानव सभ्यता को कागज के अवदान का ज्ञान
- कागज उत्पादन के लिए आवश्यकीय सामग्री तथा कागज तैयार करने की तरीका के बारे में ज्ञान देना
- भाषा-अध्ययन : क्रिया, क्रिया पर कर्ता और कर्म के लिंग तथा वचन का प्रभाव

12. अशोक का शस्त्र-त्याग

- भाषा सीखने के लिए आग्रह उत्पन्न करना
- पाठ्य, नाटकीय संवादों की प्रस्तुति आदि में दक्षता बढ़ाना
- भाषा-अध्ययन : भूतकाल (पुनरालोचना), वाक्य शुद्धिकरण, संबोधन का रूप, माध्यम भाषा में अनुवाद

13. भगतिन मौसी

- शुद्ध उच्चारण और हाव-भाव के साथ कविता पाठ करने की योग्यता
- कविता की विषयवस्तु को पढ़कर समझ पाना
- कविता की तुक लय आदि को समझना
- कविता के मूलभाव को गद्य या सारांश रूप में लिख पाना
- कविता-पाठ प्रतियोगिता में भाग लेने की योग्यता का अर्जन
- भाषा-अध्ययन : काल (पुनरालोचना), विशेषण (पुनरालोचना), विपरीतार्थक और पर्यायवाची शब्द

14. आओ, स्कूल चलें

- शुद्ध उच्चारण और उपयुक्त पठन शैली से पाठ कर पाना
- सृजनात्मक लेखन की क्षमता का विकास करना
- विद्यार्थियों को उनके परिवेश के प्रति जागरूक कर नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत करने के लिए प्रस्तुत कर पाना
- भाषा-अध्ययन : काल (पुनरालोचना), अशुद्धि शोधन, समश्रुति-भिन्नार्थक शब्द, मुहावरों का प्रयोग

15. अतिथि तुम कब जाओगे

- व्यंग्य मूलक पाठ की विषयवस्तु को पढ़कर समझ पाना
- व्यंग्य रचना को पढ़कर उसका रस अनुभव कर पाना
- मानव जीवन से संबंधित भिन्न परिवेश तथा समस्याओं को समझ पाना
- भाषा-अध्ययन : सार लेखन, अनुच्छेद लेखन

16. अमृत वाणी

- शुद्ध उच्चारण और वाचन-शैली से कविता-पाठ करने की योग्यता
- आज की मानक हिंदी के अलावा प्राचीन बोलियों का ज्ञान
- प्राचीन कवियों का परिचय प्राप्त कराना
- भाषा-अध्ययन : विपरीतार्थक शब्द, पर्यायवाची शब्द, वाक्य बनाना।

Copyright SCERT Assam
not be republished

प्राकृतिक आपदाओं से बचने हेतु प्रस्तुति

भूकंप के समय –

खुली जगह पर रहने से लेट जाना चाहिए।

घर के अंदर रहने से बिस्तर या मेज के नीचे घुस जाना चाहिए।

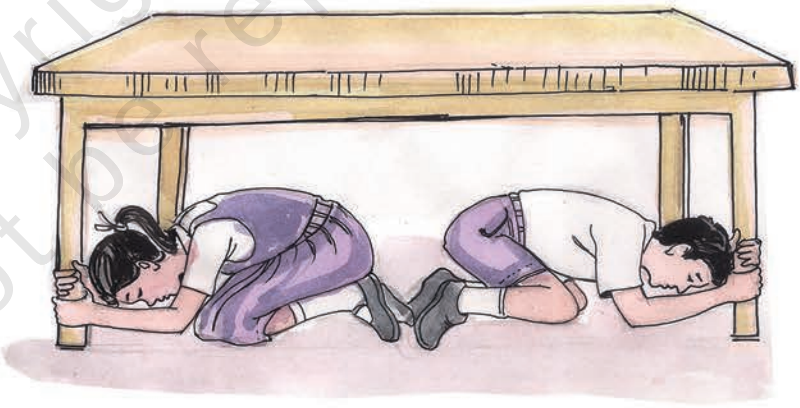

विद्यालय के अंदर रहने से बेंच या मेज के नीचे घुसकर
उसके खुंटे को जोर से पकड़ लेना चाहिए।

Copyright - SCERT, Assam
not to be republished

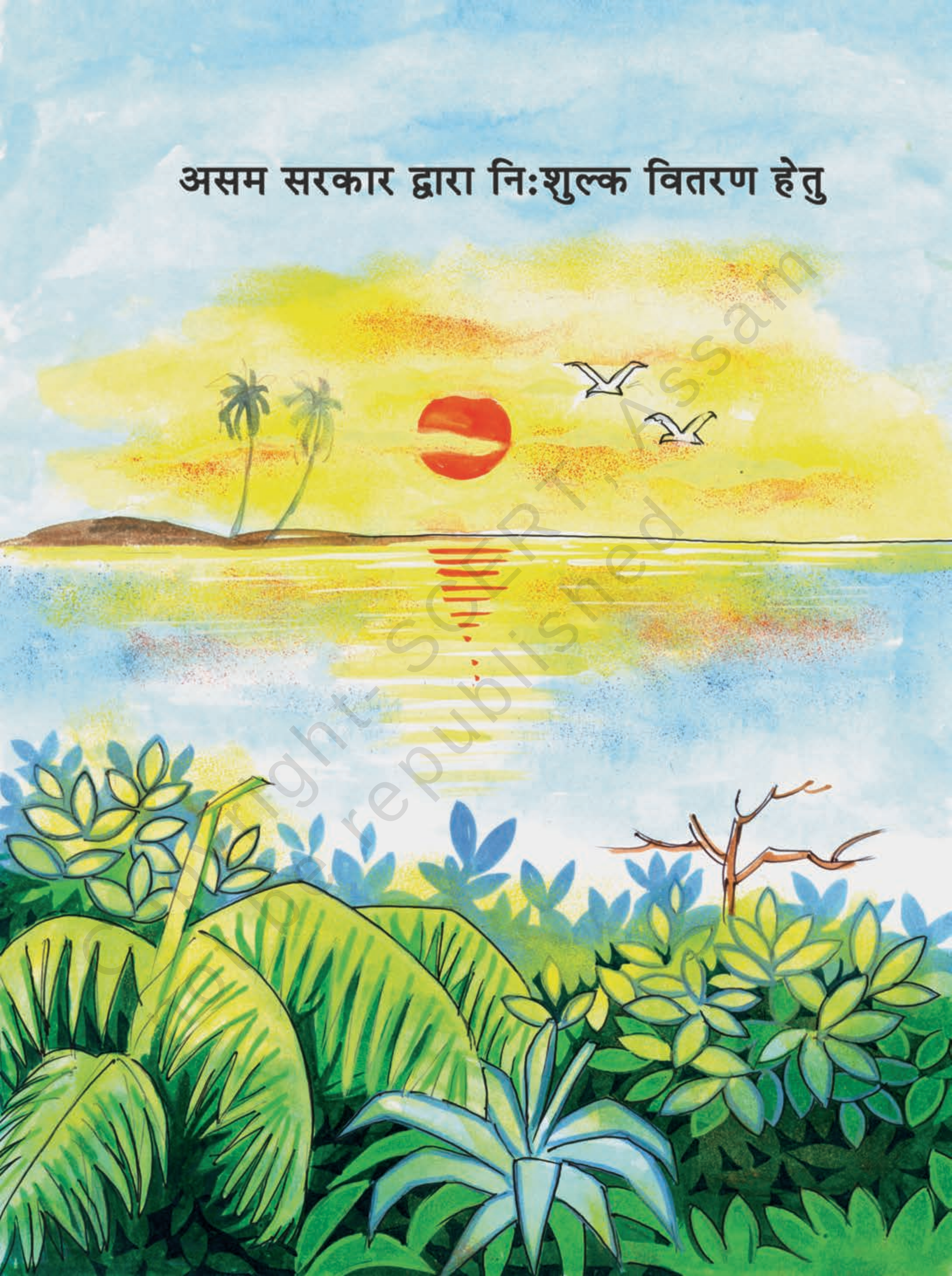

© Copyright- SCERT, Assam
not to be republished